हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी

श्रीरामदेवझा

हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी

(बाल उपन्यास)

श्रीरामदेवझा



मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001

HANSANĪ PĀN Ā BAJANTĀ SUPĀRĪ : A Novel for Children in Maithili, by **Shree Ramdeo Jha**, Mithila Research Society, Darbhanga, (2013); ₹ 300 only.

प्रकाशक : मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001
ई मेल- mithilaresearch@gmail.com

पुस्तक-प्राप्तिस्थान : डा. शंकरदेवझा
कबिलपुर लहेरियासराय
दरभंगा-846001
मो.-9430639249

प्रकाशन : 2013

मूल्य : **₹ 300 (तीन सय टाका मात्र)**

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

भूमिका

1958 सँ 1961क अवधिमे अन्यान्य प्रकारक गद्य-पद्यादि रचनाक संगहि लोककथात्मक वातावरण ओ शैलीक संस्पर्श दैत अनेकशः लघु-दीर्घ बालकथा सब सेहो लिखने छलहुँ । ओ सभ छिड़ियायल रूपमे पड़ले रहि गेल । ओहिमे छल एकटा बाल उपन्यास 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' आ दोसर छल एकटा दीर्घ कथा 'इजोतीरानी' ।

बालवर्गक पाठकक उच्चारण क्षमताकेँ ध्यानमे रखैत 'इजोतीरानी'केँ प्रयत्नपूर्वक संयुक्ताक्षर रहित बनौने छलहुँ । मुदा मैथिलीमे ओहि समयमे प्रकाशन-सुविधाक घोर अभाव ओ पत्र-पत्रिकाक अल्पताक कारणे तत्काले प्रकाशित नहि भऽ सकल ।

ओहि समयमे हम पटना विश्वविद्यालयमे स्नातकोत्तर मैथिलीक छात्र रही । 1960मे मायानन्दमिश्रक अभिव्यञ्जना पत्रिकाक सामग्री-संकलनसँ लऽ कऽ ओकरा प्रेससँ बाहर करबाक भार हमरेपर छल । नयाटोलामे प. जयनाथमिश्रक अजन्ता प्रेसमे अभिव्यञ्जनाक छपाइ चलि रहल छल । हम प्रूफ रीडिंगक हेतु ओहि प्रेसमे चल गेल करी । प्रेसक मैनेजर राजेश्वरझासँ परिचय-पात आ आपकता छल । अजन्ता प्रेससँ हिन्दीमे बाल मासिक पत्रिका 'चुन्नू-मुन्नू' प्रकाशित होइत छलैक । ओकरो प्रूफ देखल देल करियैक । एक दिन राजेश्वरबाबू कहलनि जे– रामदेवजी ! 'चुन्नू-मून्नू' तँ ओना हिन्दीक पत्रिका छैक, मुदा एहिमे प्रकाशनक हेतु मैथिलीयोसँ किछु अनुवाद कऽ कऽ दऽ सकैत छी ।' हम हुनका अपन 'इजोतीरानी'क पाण्डुलिपि देखौलियनि । पढ़ि कऽ ओ अत्यन्त प्रसन्न भेलाह । एकर बाद 'इजोतीरानी'क हिन्दी अनुवाद 'चुन्नू-मून्नू'क दू अंक (फरवरी एवं मार्च 1961)मे क्रमशः प्रकाशित भेल ।

1962-63क सन्धिकालमे डा. सुधाकान्तमिश्रक नियुक्ति हमरहि सभक संग सी.एम्. कॉलेजमे अर्थशास्त्र विषयमे व्याख्याताक पदपर भेल छलनि । ओ 'बटुक' पत्रिका हेतु कोनो रचना देबाक आग्रह कयलनि । हुनकर आग्रहकेँ देखैत हुनका एकटा पौराणिकी बालकथा 'वातापि राक्षस पेटमे पचि गेल' ओ दोसर दीर्घ कथा 'इजोतीरानी'

देलियनि तँ ओ प्रसन्नता व्यक्त करैत कहलनि जे आन-आन भाषाक बाल-साहित्य जकाँ आइ मैथिलीयोमे एही प्रकारक रोचक ओ पठनीय रचनाक प्रयोजन छैक। ओ 'वातापि राक्षस पेटमे पचि गेल' बटुक-शतांक, अप्रैल 1963मे छपलनि तथा 1965 मे बटुकक विशेषांक रूपमे 'इजोतीरानी'कें प्रकाशित कयलनि । 1967मे ओकरा पुस्तकाकार सेहो प्रकाशित कयलनि । ओ 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी'कें सेहो पोथी रूपमे प्रकाशन हेतु उत्साह देखौने छलाह ।

क्षीण आकार-प्रकारक होइतो 'इजोतीरानी'सँ हमरा बालसाहित्यक रचनाकारक प्रतिष्ठा भेटल । हम भने स्वयं ओकरा ओतेक गम्भीरतासँ कहियो नहि लेलहुँ, मुदा कतोक सहृदय समालोचक ओ अनुसन्धाता लोकनि 'इजोतीरानी'क मूल्यांकन-विवेचन कऽ कऽ एकरा मैथिलीक पहिल बाल उपन्यास घोषित कयलनि ।

'इजोतीरानी'क प्रकाशन, ओकर चर्चा-बर्चा आ प्रकाशनक आश्वासनसँ उत्साहित भऽ 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी'क प्रेसकापी तैयार कयल । किन्तु एकरा प्रकाशनक अवसर नहि भेटि सकलैक । कालक्रमे ओ बिसरा गेल ।

बड़ एमहर आबि कोनो आन वस्तु तकबाक क्रममे 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी'क पुरना प्रेस कापी बहार भऽ गेल । मोनमे भेल जे प्रेस कापी तैयारे अछि, किएक ने प्रकाशनार्थ प्रेसमे दऽ देल जाय । परन्तु फेरसँ पढ़ला उत्तर प्रतीत भेल जे एहिमे आब पुनः संशोधन-संवर्धनक आवश्यकता छैक । से करैत करैत पुनर्ल्लेखने जकाँ भऽ गेल, जे पूर्वापेक्षा सर्वथा नवीने वस्तु बनि गेल । हमरा प्रसन्नता अछि जे आइ अन्ततः बीजसँ वृक्ष बनल 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' बाल उपन्यास प्रकाशित भऽ रहल अछि ।

आशा करैत छी जे एकटा किशोरक साहस ओ संघर्ष, उदारता ओ उदात्तता, संकल्प ओ सफलता, रहस्य ओ रोमांचसँ भरल घटनाशील यात्रा-वृत्तान्त सबोध-सुबोध वर्गक बाल-पाठकके अवश्य नीक लगतैक, प्रत्युत अन्यो वयसक लोकके सेहो रमनगरे लगतनि । इति शुभम् ॥,

श्रीरामदेवझा
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001

विद्यापति-स्मृतिदिवस
कार्तिक धवल त्रयोदशी
15 नवम्बर, 2013

हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी

1

राजकुमार शत्रुजीत फेर आइ तमसा उठल । तामसेँ भोजनबला थारी उठा कऽ फेकि देलक । पानि भरल लोटा उनटा देलक । राजमहलमे हंगामा भऽ गेल । महलक दास-दासी, नोकर-चाकर सब डरेँ सकदम भऽ पतनुकान लऽ लेलक ।

रतनपुर राजक राजा प्रसेनजीतक ई छोट राजकुमार शत्रुजीत बड़ तुनकाह आ तरङाह । सदिखन नाकेपर तामस रहै छलै । ओना छल ओ बड़ बुधियार आ बहादुर । मुदा राजा-रानीक छोट सन्तान होयबाक कारणे कने बेसी छिड़ियाह आ दुलारू भऽ गेल छल । खाय-पिबैमे बड़ चिकनफट्ट आ टिपोरी । कखन की नीक लागि जायत आ कखन की माङि बैसत तकर कोनो ठेकाने नहि ।

ओहि दिन भोजन परसल गेल आ राजकुमार आबि कऽ आसनपर बैसल कि थारीपर नजरि दैत नोकरसँ पुछलक-खीर कहाँ अछि एहिमे ?'

नोकर सिरसिराइत बाजल- राजकुमार सरकार ! आइ खीर तँ नहि बनलैए । कही तँ बना कऽ आनि दी ।'

बस, एतेक सुनैत देरी राजकुमार भारी आपठ खसा देलक । थारी जुमा कऽ फेकि देलक । पानि उनटा देलक ।

राजकुमारक माय रानी कर्णावती ओहि समयमे पूजापर बैसलि छलीह । ओ बाहरमे होइत घौंचाल ओ थारी-लोटाक पटकबाक झनाक्-झनाक् स्वर सुनलनि तँ पूजा छोड़ि ओही पैरेँ दौड़लि अयलीह । देखैत छथि जे

राजकुमार शत्रुजीत तुम-कलाम उठौने छथि । रानी जखन बुझलथिन जे राजकुमार खीर नहि भेटबाक कारणे तमसायल छथि, तँ ओ भनसीयाकेँ बजा कऽ डाँटऽ लगलथिन- जखन तोरा बुझल छौ जे राजकुमारकेँ खीर नीक लगै छनि तँ तोँ बना कऽ किए ने रखलहुन ?'

भनसीया डेराइत बाजल-सरकार ! पछिला मंगल दिन राजकुमारक आगू खीर बना कऽ देलियनि तँ ओ तमसा कऽ खीरक बाटी फेकैत कहलथिन जे- जखन तोरा सबकेँ बुझल छौ जे हमरा खीर फुटलियो आँखिएँ नहि सोहाइए तँ ई किए हमरा आगूमे पड़ल । राजकुमार सरकार ओहि दिन तमसा कऽ भोजनपरसँ उठि गेल रहथिन, तेँ तकरा बादसँ भोजनमे खीर देब छोड़ि देलियनि ।'

रानी कर्णावती गुम्म रहि गेलीह । अपन बेटाक स्वभावसँ ओ परिचित छलीह । ओ राजकुमारकेँ बौँसबाक प्रयास करैत कहलथिन- राजकुमार ! तुरन्त खीर बनि कऽ आबि जाइत अछि । तमसाउ जुनि, भोजन कऽ लियऽ ।'

मुदा राजकुमार कहाँ मानऽबला । ओ तुनतुनाइत घरसँ निकलि गेल । रानी राजकुमारकेँ सोर करिते रहि गेलीह । ओ घोड़सारसँ घोड़ा निकालि ओहिपर चढ़ि गेल । घोड़ाकेँ एक एँड़ लगौलक आ ओ हबा-बिहाड़ि भऽ गेल ।

राजकुमारक गेलाक बाद राजमहलक सब लोक फक्क दऽ निसाँस छोड़लक ।

ई समाद राजा प्रसेनजीतक कानमे सेहो पड़लनि । ओ अपनेसँ सब बातक पूछा-आछी कयलनि । वास्तविक गप्प बुझलाक बाद ओ गम्भीर भऽ गेलाह । कोनो राजाक बेटाकेँ एतेक तमसाह-तुनकाह होयब नीक लक्षण नहि । ओ एहि लेल रानीपर कुपित होइत कहलथिन जे- ई सबटा अहाँक अतिशय दुलारक फल थीक । अहाँक कारणे ओ बहसि कऽ दूरि भऽ गेलाह अछि ।'

रानी अपरतीभ होइत कहलथिन-ओना तँ राजकुमारमे सबटा गुणे गुण छनि, मुदा कखनो कऽ हठ बढ़ि जाइ छनि । अपने जखन बूझऽ लगताह तँ ठीक भऽ जयताह ।'

राजा प्रसेनजीत शान्त मुदा रुष्ट स्वरमे कहलथिन- आब कहिया बुझताह ? आब कि कोनो नेना-बच्चा छथि ! हम चाहै छी जे दुनू भायकेँ

किछु-किछु कऽ राज-काजक भार दियनि । मुदा से कत्तऽ ? सब दिन कोनो ने कोनो बातकेँ लऽ कऽ हंगामा........।'

2

रतनपुर राजक बड़ बेसी विस्तार छल । राजा प्रसेनजीतक ऐश्वर्य आ पराक्रम, दुनूक बड़ ख्याति छलनि । राजाक राजमहल ततेक विशाल ओ भव्य छलनि जे कोस भरि दूरेसँ लोककेँ देखाइ पड़ैत छलैक । राजमहलक चारू कात बाड़ी-फुलवाड़ी, हथिसार, घोड़सार आदि आदि छल । महलमे नोकर-चाकर, दास-खबास, नौड़ी-बहिकिरनी आदिक कोनो गनती नहि छल ।

राजा प्रसेनजीतकेँ दूटा बेटा छलनि । जेठ राजकुमारक नाम छलनि विश्वजीत आ छोटकाक नाम छलनि शत्रुजीत । दुनू राजकुमार देखबामे जेहने गन्धर्व सन सुन्दर, तेहने सब विद्यामे पारंगत छलथिन । गुरुकुलमे रहि विभिन्न शास्त्रक संगहि विभिन्न अस्त्र-शस्त्र, तीर-धनुष, तरुआरि, भाला, बरछी आदि चलयबामे निपुण भऽ गेल छलाह । मल्ल- युद्ध आ घोड़सवारीमे दुनू राजकुमारसँ क्यो जीति नहि सकैत छल ।

राजा अपन एहि दुनू राजकुमारक शिक्षा-दीक्षासँ सन्तुष्ट छलाह । बड़का राजकुमार विश्वजीत मितभाषी, शान्त आ गम्भीर छलथिन । छोटका राजकुमार शत्रुजीत चंचल, हाजिरजबाबी, तुनकाह, तरङाह आ जिद्दी छलथिन । राजा छोट राजकुमारक एहि स्वभावकेँ लऽ कऽ कने चिन्तित रहल करैत छलाह ।

ओना छोटका राजकुमार स्वभावसँ भने जे तुनकाह रहओ, भीतरसँ ओ ओतबे दयालु आ उदार छल । एकर परिचय राजा-रानीकेँ अनेक बेर भेटि गेल छलनि ।

एक दिन छोट राजकुमारक भोजन परसल छलैक । ओ भोजनपर बैसऽ लय छल कि तखने राजमहलक बाहर किछु हो-हल्ला सुनबामे आयल कि राजकुमार आदेशपालकेँ पता लगा कऽ आबऽ कहलकैक । कनेके कालमे आदेशपाल आबि कऽ कहलक-राजकुमार सरकार ! राजमहलक बाहर एक झुण्ड भिखारि सब ठाढ़ अछि । ओ सब खाइ लय किछु माङि रहल अछि । मुदा पहरू सब ओकरा सबकेँ धकिया कऽ बैला रहल छै ।'

राजकुमार अपन आदेशपालकेँ कहलथिन जे– जो, जा कऽ पहरू सबकेँ कहि अबही जे ओ भिखारि सभक नीक जकाँ जाँच कऽ लेअय । जँ ओकरा सब लग कोनो आपत्तिजनक वस्तु नहि होइ आ ओ सब सत्तेमे भिखारि होअय तँ सबकेँ भीतर आबऽ देल जाय ।'

राजकुमारक आदेशपर भिखारि सबकेँ पहरू जाँचि-परखि कऽ राजमहलक भीतर पठा देलक । राजकुमार सब भिखारिकेँ बैसा कऽ भरि पोख भोजन करा देलकैक । भिखारि सबकेँ अपना जीवनमे पहिल बेर एहन सोअदगर, भाँति-भाँतिक भोजन भेटल छलैक । ओ सब तँ एक मुट्ठी अन्न वा एक छदामक आशासँ आयल छल । एतऽ ओकरा सभकेँ अपन आशाक विपरीत सँचार लगा कऽ भोजन कराओल गेलैक । जाइत काल राजकुमार सभ भिखारिकेँ एक-एकटा स्वर्ण मुद्रा दैत कहलकैक जे- जाह, एहि मुद्रासँ कोनो छोट-छीन धन्धा ठाढ़ कऽ लिहह ।'

सब भिखारि राजकुमारकेँ आशीर्वाद दैत हलसल-फुलसल गेल । ओकर बाद राजकुमार स्वयं भोजनपर बैसल ।

एतबे किएक ? राजकुमार शत्रुजीत अपन बहादुरी आ प्रजापालकताक सेहो कतोक बेर परिचय दऽ चुकल छल ।

3

एक दिनक गप्प । छोटका राजकुमार अपन ओछाओनपर पड़ल छल। राति बेसी भऽ गेल छलैक । राजकुमारक आँखिपर निन्न सवार भऽ रहल छलैक कि तखने ओकरा कानमे आबाज पड़लै-दोहाइ सरकार ! हमरा सभक रक्षा करू ।'

राजकुमारक इसारापर आदेशपाल बाहरसँ बूझि कऽ आयल आ कहलक जे– राजकुमार सरकार ! नगरसँ सटल जे देहाती बस्ती अछि ओतऽ जंगलसँ बौखि कऽ एक हिंसक बाघ चल अयलैक अछि । ओ बाघ बहुतो मनुक्ख आ माल-जालकेँ अपन ग्रास बना चुकल अछि । ओहि ठामक डेरायल प्रजा बाहरमे गोहारि लगा रहल अछि ।'

राजकुमार एतेक सुनैत देरी फानि कऽ ओछाओन परसँ उठल ।

देबालपर टाङल तरुआरिकेँ उतारि डाँड़मे खोँसलक । कान्हपर धनुष लटकौलक । हाथमे भाला लेलक आ अपन शयनकक्षसँ बाहर आयल । बाहरमे जमाजुट लोकमे सबसँ आगाँ जे व्यक्ति हाथमे लुक्का लेने ठाढ़ छल, ओकरा अपना लग बजा कऽ बाघक उपद्रवबला स्थानक ठेकाना पुछलकैक । लुक्काबला सब घटना ओ स्थानक वर्णन कऽ देलकैक ।

राजकुमार एक ओहन व्यक्तिकेँ आगाँ आबऽ कहलकैक जे घोड़सबारी जनैत होइक । भीड़मेसँ कय गोटे ने आगाँ आयल । ओहिमेसँ एकटा युवककेँ इसारासँ बजौलकैक । फरियादी लोकसब जे जुटल छल तकरा सबकेँ राजकुमार कहलकैक जे– तोरा लोकनि दौड़ले अपन गाम पहुँचह । हम एहि युवकक संग पीठेपर आबि रहल छियह । तोरा सबसँ हम पहिनहि पहुँचब ।'

लोक सब तुरन्त अपन गाम दिस दौड़िते विदा भऽ गेल ।

शत्रुजीत अपन अंगरक्षक ओ ओहि युवकक संग घोड़सारमे गेल । ओ घोड़सारमे तनात सहीसकेँ एकटा नीक, तेज चलऽबला घोड़ा युवक लय आनऽ कहलकैक । सहीस एकटा घोड़ा युवक लय अनलक । राजकुमार शत्रुजीत ओहि घोड़ाक पीठ हँसोथैत बाजल–बहादुर ! एहि युवक घोड़सबारकेँ आन नहि बुझिहेँ । ई अपने लोक छियौ ।'

युवकोकेँ शत्रुजीत एकटा भाला दैत घोड़ा पर चढ़ऽ कहलकैक ।

राजकुमारक बोली सुनि कऽ ओकर अपन प्रिय घोड़ा ऋतुराज एके बेर जोरसँ हिनहिना उठलैक । राजकुमार ऋतुराजक आशय बुझि गेल । ओ बाजल–बुझलियौ, बेसी घबड़ो नहि ।'

ओ ऋतुराज लग जा कऽ ओकर मुह, पीठ, देहकेँ हँसोथि पीठ थपथपा कऽ ओहिपर सबार भऽ गेल । ओ युवककेँ कहलकैक–तोँ अपन भाला समधानने अपन गामदिस घोड़ाकेँ तेज गतिसँ दौड़ा जाहिसँ हमर ऋतुराज तेजीसँ दौड़ि सकय आ तोरा गाम जल्दी पहुँचबामे भुतियाय नहि, तेँ संगहि चलत ।' पुनः ओ ऋतुराजक कानमे मुह सटा कऽ कहलकैक– चल बन्धु ! चल, ओहि मनुसमारा बाघसँ लोकके बचयबाक लेल । आइ हमर आ तोहर – दुनू गोटाक परीक्षा छौक ।'

ओहि निशाभाग रातिमे दुनू घोड़ा बड़का-बड़का टाप दैत विदा भऽ गेल।

छलैक अन्हरिया पख मुदा पूब दिस इजोरिया धमकऽ लागल छलैक, तेँ बाट चलबामे किछु कम असौकर्य भेलैक। थोड़बे कालमे दुनू गोटे ओहि गाम पहुँचि गेल जतऽ मनुसमारा बाघ उतफाल मचौने छलैक।

ताबत राजमहल जे लोक सब गेल छल, सेहो सब बेछोहे दौड़ैत पहुँचि गेल।

गामक लोक सब जरैत लुक्का आ जमा कयल नार-पोआर ओ पतलोक ढेरीकेँ जरा कऽ इजोत कयने छल। थोड़ेक-थोड़ेक कालपर होहकारी दैत रहैत छल। सभक चित्त आशंका आ भयसँ भरल छलैक।

शत्रुजीत घोड़ासँ उतरि गौआँ सभसँ बाघक विषयमे पुछलकैक। ओ सब बाजल जे- बाघ पन्द्रह दिनसँ घरहेड़ कयने छै। कतेको माल-जाल सहित कय गोट मनुक्खोकेँ अपन ग्रास बना लेलक अछि। आइयो साँझमे झोलफल भेल छलै, तखने एकटा गायकेँ उठा कऽ लऽ गेलै।'

-बाघ कोमहर गेलै ?' राजकुमार पुछलकैक।

गौआँ एब गामसँ बाहर सटले साहोड़क झाँखुरक पैघ झोँझ दिस देखा देलकैक। सब बाजल जे-एखनो बाघ ओहीमे दबकल छैक, किएक तँ कखनो-कखनो ओकर गुड़रब सुनबामे अबै छै।'

शत्रुजीत गम्भीर भऽ गेल। फेर किछु सोचि कऽ बाजल-घबड़ाह नहि। गाममे जतऽ जे नार-पोआर भेटह से सब जल्दी-जल्दी आनि ढेरी लगाबह। तहिना जतऽ जे नमहर नमहर बाँस सब राखल होअह, से आनह। टाट-ढाठमे बाँस-फट्टा लागल होअह तँ ओकरो उजाड़ि कऽ लऽ आनह। नार-पोआरक छोट-छोट पुल्ली बना-बना कऽ, ओकरा सबकेँ बाँसक छीपमे लटका-लटका कऽ, झोँझ दिस जुमा-जुमा कऽ फेकह। जखन ढेरी लागि जायत, तखन ओहि बाँसक छीपमे पुल्ली लटका कऽ ओहिमे आगि धराबह आ बाँसक छीपमे लटकल पुल्लीक धधरासँ झोँझ लग लागल नार-पोआरक ढेरीकेँ धनकाबह। जे लोकनि ई काज नहि कऽ सकह से सब ढोल-नगाड़ा, थारी-बाटी, ढाकी-पथिया, सूप-चालनि पीटि-पीटि कऽ अनघोल मचाबह। जकरा ओहो नहि छह, से सब दू-दूटा पेना-सटका लऽ कऽ दुकठिया बजाबह।

बाघकेँ मारबाक अपन रणनीति बुझबैत शत्रुजीत बाजल-एमहरसँ नार-पोआरक धधराक इजोत, देह जराबऽबला ओकर धाह आ कान फाड़ऽबला घनघोर हल्लासँ बमछि कऽ बाघ झोँझक दोसर दिस अवश्य बहरायत । तेँ हम ओकरा मारबाक लेल ओही दिस चल जायब ।'

गामक प्रमुख लोक ओ बूढ़-बुढ़ानुस सब बाजऽ लागल- सिरी जी ! हम सब अपनालेल अहाँकेँ जान गमाबऽ नहि देब । झोँझक ओहि पार जयबाक माने भेल, सोझे बाघक मुहमे पैसब । ई कोना होअऽ देब ? हम सब राति भरि एहिना बिता लेब । काल्हि दिन-देखारमे जे हेतै से हेतै । नहि, तँ हमरो लोकनि अहाँक संग ओही दिस रहब ।'

शत्रुजीत सबकेँ बोल-भरोस दैत बाजल-संकटमे पड़ल लोकक रक्षा करब हमर कर्त्तव्य अछि । अहाँ लोकनि एको मिसिया भरि हमर चिन्ता-फिकिर नहि करी । हमरा संग हमर ऋतुराज अछि । ओ सब किछु बुझैत अछि जे एहन-एहन परिस्थितिमे हमरा की कोना करबाक अछि ।'

डेरायल-सहमल लोक सभक मनसँ जेना डर बिला गेलैक । सभक मनमे जोश भरि गेलैक । ओ सभ अन्हड़-बिहाड़ि जकाँ शत्रुजीतक देखाओल काज करऽ लागल । थोड़बे कालमे नार-पोआरक ढेरी लागि गेल । झोँझक दिस नार-पोआरक पुल्ली सब फेकल जाय लागल । पुनः ओहि ढेरीमे आगि लगा देल गेल । एक-एक बाँस ऊपर उठैत आगिक घघरासँ दिनक इजोत जकाँ झोँझक एक-एक पात सब साफ-साफ देखाय लगलैक ।

ढोल-नगाड़ा, थारी-बाटी, सूप-चालनि, ढाकी-पथियाक पिटबाक, दुकठिया बजयबाक शामिल बाजा तथा घनघोर होहकारक हल्लासँ वातावरण घनघना उठलैक ।

4

शत्रुजीत अपनहुँ बाघक वध करबाक लेल तैयार होअऽ लागल । ओ ऋतुराजक पीठपर चढ़ि गेल । दाँतसँ घोड़ाक लगाम पकड़ि लेलक । एक हाथमे अपन भाला छलैके, दोसरो हाथमे संग आयल युवकक भाला लऽ लेलक । घोड़ाक पाँजरकेँ एँड़सँ दबा कऽ इसारा कयलकैक । घोड़ा टाप

मारैत चल आयल साहोड़क झोँझक दोसर कात ।

शत्रुजीत दुनू हाथक भालाकेँ झोँझक दिशामे समधानि लेलक । ऋतुराजकेँ फेर कोनो संकेत देलकैक । ऋतुराज नियमित गतिसँ चकभाउरि दियऽ लागल । थोड़ेक-थोड़ेक कालपर खूब जोर-जोरसँ फानऽ लागल ।

शत्रुजीत घोड़ाकेँ स्थिर होयबाक संकेत देलक । घोड़ा झोँझक दिस मुह कऽ कऽ स्थिर तँ भऽ गेल मुदा अगिला टाङसँ माटि खखोड़ैत रहल ।

राजकुमार आ ऋतुराज अकानैत रहल । ओमहर झोँझक ओहि पार घनघोर हल्ला भऽ रहल छल । आगिक घघरा उठि रहल छल । आगिक धाह वातावरणकेँ गरम कऽ देने छल । राजकुमार चौकन्न छल । ऋतुराजक कान ठाढ़ छल ।

कनेक काल बीतल होयतैक कि ऋतुराज हिनहिना उठल । शत्रुजीत सावधान भऽ गेल । अपन दुनू हाथक भाला समधानि लेलक । लगामकेँ दाँतसँ खूब कसि कऽ पकड़ने रहल ।

तखने बड़ी जोरसँ हम्हड़ैत बाघ झोँझसँ बहरायल । ओ अपन विशाल मुह बाबि दहाड़ैत शत्रुजीत पर झपट्टा मारऽ लय फानल । ठीक तखने ऋतुराजो बाघ दिस फानल परन्तु कनेक बाम दिस कनछिया कऽ । तेँ बाघक झपट्टाक सोझा-सोझी निसानासँ बाम दिस कनछिया गेलासँ बाघक पँजरबाहि दिस ऋतुराजक गति भऽ गेलैक ।

धरतीसँ ऊपर बाघ आ ऋतुराज एक दोसराक पाँजरक समानान्तर होइतय, ताहिसँ पहिनहि शत्रुजीत आँखिक मटक मात्रक समयमे अपन दहिना हाथक भाला बाघक मुहमे हलि देलक आ बामा हाथक भाला बाघक पाँजरमे तेना भेसलक जे ओ पेटक ओहि पार बहार भऽ गेलैक ।

बाघ ठामहि अर्रा कऽ धाँहि दऽ खसि घोँघियाय आ छटपटाय लागल । ऋतुराज आगाँ झोँझक लगसँ किछु हटले धरतीपर पैर रोपलक आ खूब जोरसँ हिनहिनाइत अपन पछिला दुनू टाङपर ठाढ़ भऽ कऽ घुरमऽ लागल ।

बाघकेँ खसैत आ छटपटाइत देखि गौँआ सब ओहि दिस दौड़ल आ ओकरा लाठी-सोँटासँ डेङबऽ लागल । सब खुसीसँ जेना बताह भऽ गेल । ओ सब राजकुमारक जयजयकार करऽ लागल ।

शत्रुजीत गौँआँ सभक हुलासमे कोनो बाधा नहि दऽ कऽ, ऋतुराजकेँ भीड़सँ बाहर चलबाक संकेत देलकैक । ऋतुराज मन्द गतिसँ चलि भीड़सँ थोड़ेक हटि कऽ ठाढ़ भेल । ओहि ठाम शत्रुजीतक संग आयल युवक घोड़ाक रासि पकड़ने बाट ताकि रहल छलैक । शत्रुजीत ओकरा संग लऽ कऽ विदा भऽ गेल राजमहल दिस ।

भोर होइत-होइत राजकुमार ओहि नरमक्षी बाघकेँ मारि कऽ सकुशल आपस चल अबैत रहल ।

राजकुमारक पाछू ओहि क्षेत्रक प्रजा ओहि मुइल बाघकेँ टङने राजकुमारक जयजयकार करैत राजमहल पहुँचल ।

सबेरे-सबेरे लोक सभक अनघोल राजाक कानमे पड़लनि । ओ द्वारपालकेँ देखऽ कहलथिन । द्वारपाल मुख्य द्वारपर जा कऽ पता लगौलक । ओ राजाकेँ आबि कऽ सूचित कयलकनि जे- राजधानीक लगपासक गामक प्रजा सब एकटा मुइल बाघकेँ टङने आयल अछि । लोक सब बजैत छल जे छोटका राजकुमार ओकर शिकार कयलथिन अछि ।'

राजा ई समाद सुनि तामसेँ लहलह करऽ लगलाह जे- बनैया जन्तुक शिकार करबाक जखन राज दिससँ मनाही छैक, तखन छोटका राजकुमार आज्ञाक उल्लंघन किएक कयलनि ?

राजकुमार शत्रुजीतकेँ बजा कऽ तमसायल स्वरमे पुछलथिन जे- बनैया जन्तुक शिकारक मनाही छैक तखन बाघ किएक मारल गेल ?'

शत्रुजीत बाजल जे- एकटा हिंसक बाघ वनसँ आबि कऽ गाममे ढुकि कऽ माले-जाल नहि, मनुक्खो सबकेँ खाय लागल छल । कतेको लोक ओकर पेटमे समा चुकल छल । अत्याचारीकेँ दण्ड देब राजधर्म थिक । निर्दोष मनुष्यक हत्या कयनिहारकेँ प्राणदण्ड देबाक विधान अछि । गत राति प्रजा सभक करुणा भरल चीत्कार सूनि राजाक आदेश बिना लेने स्वयं जा कऽ मारि देलिऐक । जँ प्रजाक रक्षा अपराध छैक, तँ हम दण्ड भोगऽ लय तैयार छी ।'

छोटका राजकुमारक बात सुनि राजा प्रसेनजीतक क्रोध शान्त भऽ गेलनि । हुनका अपन पुत्रक बुद्धि, विवेक आ बहादुरीपर बड़ गर्व भेलनि ।

ओ अपन पुत्रक प्रजापालकता ओ शूरवीरताक प्रतीक रूपमे ओहि मुइल बाघक खालमे भुस्सा भरबा कऽ राजक अजायबघरमे रखबा देलथिन ।

मुदा ई सबटा गुण होइतो शत्रुजीतकेँ अपन तामसपर कोनो नियन्त्रण नहि छलैक । राजा वा राजकुमारक लेल ई अवगुण सबसँ बड़का चिन्ताक विषय मानल जाइछ । से, राजा सेहो छोटका राजकुमारक सम्बन्धमे सतत चिन्तित रहैत छलाह ।

5

राजा प्रसेनजीतक जेठ बेटा विश्वजीतक वयस विवाह योग्य भऽ गेल छलनि । एक दिन राजा अपन पड़ोसी राज्य कनकपुरक राजा स्वर्णदेवक कन्या स्वर्णावतीकेँ अपन जेठ राजकुमार विश्वजीतक हेतु पसिन्न कयलनि ।

राजमहलमे चर्चा होअऽ लागल । महारानी राजकुमारी स्वर्णावतीक रूप-गुण, शील-स्वभाव, शुचि-आचरक सम्बन्धमे नीक जकाँ जानि कऽ पूर्ण सन्तुष्ट छलीह । हुनको अपन जेठ राजकुमारक लेल स्वर्णावती जुगलतगर कनियाँ रूपमे पसिन्न भेलथिन । राजमहलमे सभकेँ ई कथा पसिन्न भेलैक । सभ लोकमे जेठ राजकुमारक विवाहकेँ लऽ कऽ आनन्द आ उमंग भरि गेल छलैक ।

सौँसे राजमहलमे एक गोटे अवश्ये एहन छल जकरा ई एकदम पसिन्न नहि छलैक जे राज्यक पसार, बल-वैभव, मान-मर्यादामे ऊँच रतनपुरक जेठ राजकुमार विश्वजीतक विवाह रतनपुरसँ अत्यन्त छोट सन राज कनकपुरक राजा स्वर्णदेवक बेटी स्वर्णावतीसँ होइनि । ओ व्यक्ति छल रतनपुरक छोटका राजकुमार शत्रुजीत ।

ओ आने-मानेसँ बाजि-बाजि कऽ राजमहलक लोक सबकेँ अपन विचार जना देलक । पिताक लगमे जा कऽ सोझा-सोझी स्वर्णावतीक संग विश्वजीतक विवाहक विरोध करबाक साहस ओकरा नहि भेलैक । पिता एहि विरोधक कारण पुछितथिन । शत्रुजीतक लगमे विवाह-विरोधक कोनो संगत कारण नहि छलैक जाहिसँ पिताकेँ सन्तुष्ट कऽ सकितय । तेँ ओ रानी माँ लग जा कऽ अपन विरोध जनौलक ।

रानी माँकेँ भेलनि जे छोट राजकुमार नेनपनमे एना बाजि रहल

छथि । ओ शत्रुजीतक गप्पपर ध्यान नहि देलनि । राजाक कानमे ओ ई बात किएक दितऽथिन ! ओना ओ कखनो कऽ सोचऽ लगैत छलीह जे छोट राजकुमार विवाहक विरोध किएक करैत छथि ?

शत्रुजीतकेँ विश्वास भऽ गेलैक जे ओ कतबो विरोध करओ, कोनो तरहेँ विवाह रुकतैक नहि । जँ विवाह होयतैक तँ अपन जेठ भाइ विश्वजीतक संग ओकरा कनकपुर जाइए पड़तैक । शत्रुजीत से चाहैत नहि छल । ओ किन्नहुँ कनकपुर नहि जाय चाहैत छल । पिताकेँ ई बात स्पष्ट रूपसँ कहऽ नहि चाहैत छल । राजा जँ नहि जयबाक कारण पुछितथिन तँ तकर कोनो ठीक-ठीक उत्तर शत्रुजीतक लग तँ छलैक नहि ।

तकर बादसँ शत्रुजीत एही गुनधुनमे लागि गेल जे कोन एहन बात बनाओल जाय जाहिसँ विवाहक दिन ओ अपन जेठ भाइ विश्वजीतक संग कनकपुर जाइसँ बाँचि जाय । दिन-राति ओ एहीमे डूबल रहऽ लागल । अपन मनक बात ओ कहितय ककरा ?

एहन सन लगैत छलैक जेना कनकपुरक राजकन्याकेँ रतनपुरक पुत्रवधू बनयबासँ रोकबामे असमर्थ भऽ गेल छोट राजकुमारक लेल आब कोनहु प्रकारेँ विवाह-कार्यक्रमसँ अपनाकेँ फराक राखब आनिक प्रश्न भऽ गेल छलैक । मुदा अपन मनक बात ओ कहितय तँ कहितय ककरा ?

एक दिन ओकर मन बड़ व्यग्र भऽ उठलैक । ओ अपन प्रिय घोड़ा ऋतुराजपर सवार भऽ कऽ नगरसँ बाहर मन बहटारबाक लेल चल जाइत छल । राजकुमार कोनो सुधिमे डूबल छल । ओ घोड़ाक रासिकेँ ढील छोड़ि देने छल । ऋतुराज खुटुरचालि चलैत मन्दगतिसँ चल जाइत छल ।

अचानक ऋतुराज हिहिया कऽ ठाढ़ भऽ गेलैक । शत्रुजीतक ध्यान टूटि गेलैक । ओ देखलक अपन बाल सखा सुबन्धुकेँ घोड़ाक रासि पकड़ने ठाढ़ । ओ चौंकि कऽ बाजल– अरे सुबन्धु ! तोँ एहि ठाम कोना ?'

सुबन्धु बाजल-अओ कुमार ! हमर तँ यैह गाम थिक । मुदा ई कहू जे बसातक वेगसँ दौड़निहार राजकुमारक ऋतुराज घोड़ा आइ मन्द-मन्द गतिसँ खुटुरचालि किएक चलैत छल ? उमंग आ उत्साहसँ भरल, तेजसँ रतरत करैत अहाँक मुह उदास आ उतरल किएक लगैत अछि ?'

शत्रुजीत घोड़ापरसँ उतरि कऽ बाजल-तोरासँ एना बाटे-घाट भेट भऽ जायत से तँ सोचनहुँ ने छलहुँ। चलह, कतहु बैसि कऽ स्थिर चित्तसँ गप्प करब।'

दुनू मित्र एकटा गाछक छाहरिमे जा कऽ बैसल। राजकुमारकेँ भेलैक जे अपन मनक बात साफ-साफ सुबन्धुकेँ कहि दिऐक। किन्तु दोसरे क्षण मनमे विचार उठलैक जे राजमहलक बात बाहरक लोककेँ जनायब ठीक नहि। राजपरिवारक बीचमे परस्पर मतान्तर छैक, से बात पसरलापर रतनपुर राजक हानि भऽ सकैत छैक। से सब विचारि कऽ शत्रुजीत सुबन्धुकेँ एकटा खिस्सा मने-मन गढ़ि कऽ सुनौलक।

राजकुमार सुबन्धुकेँ कहलकैक जे- रतनपुर राजक एकटा सीमा प्रान्तमे एकटा राजद्रोही लोक उपद्रव मचा रहल छैक। राजक किछु गामपर ओ लोक सबकेँ डेरा-धमका कऽ अपन प्रभाव पसारने जा रहल अछि। पिताश्री एकटा सैनिक दल लऽ कऽ ओकरा दण्ड देबाक आदेश हमरा देलनि। पिताजीकेँ हमर योग्यता आ साहसपर विश्वास भेलनि अछि ताहिसँ हमरा बड़ हर्ष भेल।'

शत्रुजीत आगाँ बाजल- हम ओहि लेल सब तैयारी कऽ लेलहुँ। जाहि दिन सैनिक सब प्रस्थान करितय ओहि दिन भोरमे अचानक बहुतो सैनिक तेज ज्वरसँ दुक्खित पड़ि गेल। एकाएक ई बाधा आबि गेलासँ तत्काल सैनिक जत्थाक प्रयाण रोकि देबऽ पड़ल। आब हमरा ई पता लगयबाक अछि जे सैनिक सभक एकाएक तेज ज्वराक्रान्त होयब कोनो प्राकृतिक प्रकोप छल वा कोनो कृत्रिम कारण ? जँ कृत्रिम छल, तँ के कयलक ? एकर उत्तर दूटा भऽ सकैत छैक। पहिल ई जे शत्रुक कोनो भेदिया हमर सैनिकक बीच पैसल अछि; दोसर ई जे अपनहि राजक हमर कोनो विरोधी व्यक्ति हमरा अयोग्य सिद्ध करबाक लेल ई षड्यन्त्र रचलक अछि।'

राजकुमार शत्रुजीत सुबन्धुक कनहापर अपन बाँहि रखैत बाजल जे- हम कोनो वृद्ध अनुभवी वैद्यक खोजमे छी जे हमरा हमर एहि समस्याक समाधान दऽ सकय। की तोरा बूझल छह एहन कोनो वैद्यक नाम ?'

सुबन्धु बाजल- राजकुमारजी ! एहि लेल एतेक चिन्तित किएक होइत छी ? हमरा गाममे अवश्ये एकटा एहन कविराज छथि। अत्यन्त बूढ़

होयबाक कारणे ओ कतहु जाइत-अबैत नहि छथि । चलू, हम हुनकासँ एखने भेट करा दैत छी ।'

दुनू गोटे ओहि वृद्ध वैद्य लग पहुँचल । सुबन्धु वैद्यकेँ प्रणाम कयलकनि । राजकुमार सेहो अभिवादन कयलकनि । बिना अधिक समय लगौने सुबन्धु वैद्यजीकेँ राजकुमारक परिचय दैत हुनका निकट अयबाक उद्देश्य कहि सुनौलकनि ।

वैद्यजी राजकुमार शत्रुजीतकेँ आशीर्वाद दैत कहलथिन जे-एहन कोनो प्राकृतिक प्रकोप नहि भऽ सकैत छैक जे एके रातिमे बहुत गोटेकेँ एके संग तेज ज्वर भऽ जाइक । एहन ज्वर प्राकृतिक नहि भऽ कऽ कृत्रिम भऽ सकैत छैक । औषधिमे जँ रोग-निवारणक गुण रहैत छैक तँ ओकर अपप्रयोगसँ रोग उत्पन्नो भऽ सकैत छैक । घी आ मधु दुनू उत्तम गुणसँ सम्पन्न पदार्थ थिक । एकर औषधि ओ औषधिक अनुपानक रूपमे प्रयोग अत्यन्त गुणकारी । किन्तु घी ओ मधुकेँ बराबरि मात्रामे मिला देलापर ओ विष भऽ जाइत छैक । ओ मिश्रण खयलासँ लोकक मृत्यु भऽ जा सकैत छैक । तहिना एहन औषधि सब छैक जकर विशेष रूपक मिश्रणक प्रयोगसँ एकाएक तेज ज्वर भऽ जा सकैत छैक ।'

राजकुमार शत्रुजीत जिज्ञासा कयलकनि जे– एकर प्रभाव कतेक समय धरि रहैत छैक ?'

–अरे ! ई तँ कृत्रिम ज्वर होइत छैक जे एकसँ डेढ़ दिन मात्र रहैत छैक ।' वैद्य कहलथिन ।

शत्रुजीत आँखिए आँखि सुबन्धुकेँ किछु संकेत देलकैक । सुबन्धु वैद्यजीकेँ कहलकनि जे– राजकुमारकेँ आकस्मिक ज्वर उत्पन्न करऽबला औषधिक किछु खोराक चाहियनि जकर परीक्षण कऽ कऽ निश्चित कऽ सकथि जे कोन परिस्थितिमे केहन ज्वर सैनिक सभकेँ भेल छलैक ।'

वैद्यजी संकोचपूर्वक कहलथिन- औषधि तँ रोग छोड़यबाक लेल देल जाइत छैक, रोग उत्पन्न करबाक लेल नहि । लोककेँ अहित आ अपकार करऽबला, रोग उत्पन्न करऽबला औषधिक प्रयोग वैद्यक नीति-आचारक विरुद्ध काज होइत छैक ।'

शत्रुजीत अपन दुनू हाथकेँ जोड़ि आँजुर बनाय वैद्यकेँ कहलकनि जे– अहाँक देल औषधिसँ हमरा द्वारा ककरो अहित-अपकार नहि होयतैक। परन्तु राजक सीमा सुरक्षित रहय। प्रजा सब बाहरी लोक द्वारा सताओल नहि जाय। सब सुख-शान्तिसँ रहय। ताहि लेल तँ सैनिकके सतत तैयार राखऽ पड़त, से तँ अहूँ चाहब किने !'

–अवश्य।' वैद्यजी सहमतिमे मूड़ी डोलबैत कहलथिन।

–बस, एहि औषधिक परीक्षणसँ हम ई व्यवस्था करबामे सफल भऽ सकब जे आगाँ फेर सैनिक सभकेँ बेर पड़लापर अकस्मात् ज्वराक्रान्त नहि होअऽ दी।' ई कहि शत्रुजीत चुप आ गम्भीर भऽ गेल।

वैद्यजी अपन औषधिबला मोटरी फोललनि आ थोड़ेक फक्की पुड़ियामे दैत कहलथिन जे– एहि फक्कीकेँ चारि-पाँच मासा जलमे मिला कऽ पीलासँ चारि पहरक बाद खूब तेज ज्वर भऽ जयतैक। मुदा एक-डेढ़ दिनमे फेर सामान्य भऽ जयतैक। हम आशा करैत छी जे एकर कोनो अहितकारक प्रयोग नहि होयत।'

राजकुमार 'एवमस्तु' कहैत अपन डाँड़सँ किछु स्वर्ण मुद्रा निकालि सुबन्धुकेँ दैत कहलक जे– ई वैद्यजीकेँ दऽ दियौन।'

सुबन्धु स्वर्णमुद्रा वैद्यजी दिस बढ़ा देलकनि। वैद्यजी सुबन्धुक मुद्राबला हाथकेँ टारैत कहलथिन– ई की ? राजकुमार हमरा ओतऽ अपनहि अयलाह। हमर तँ अहोभाग्य ! हमरा लेल यैह बड़का पुरस्कार !'

राजकुमार बाजल–वैद्यजी ! औषधि सभ तँ अहाँक बाड़ीमे अनेरुआ नहिए होइत होयत। एकरा सभक उपादान जुटयबामे आ ओकर शास्त्रीय विधिसँ औषधि तैयार करबामे श्रम, समय आ द्रव्य अवश्ये लगैत होयत। दोसर, सुनैत छिऐक जे बिना मूल्यक लेल दबाइ लागि नहि धरैत छैक। तेँ हमर आग्रह जे सुबन्धुक हाथक मुद्रा ग्रहण कऽ ली। तखन हम बुझब जे अहाँ अपन राजक राजकुमारक आ ओहि द्वारा अपन राजाक सम्मान कयलियनि अछि।'

वैद्य कनेक संकोचक अनुभव करैत सुबन्धुक हाथसँ स्वर्ण मुद्रा लऽ लेलनि। राजकुमार विनम्रतापूर्वक वैद्यजीक अभिवादन कयलकनि आ सुबन्धुक संग विदा भऽ गेल।

कनेक दूर गेलापर राजकुमार बाजल-सुबन्धु ! तोँ बड़ बेरपर भेटलह । तोँ हमर सब चिन्ताकेँ मेटा देलह । आब फेर कहियो एमहर आयब तखन तोरा गामपर अवश्य जयबह ।'

सुबन्धु किछु बजितय ताहिसँ पहिनहि राजकुमार सुबन्धुसँ घाड़ाजोड़ी कऽ कऽ पाछाँ घुमल आ फानि कऽ ऋतुराजपर सवार भऽ गेल । रासि तानि कऽ ओकर पेटमे जोरसँ एँड़ी सटौलक आ ऋतुराज सरपट दौड़ऽ लागल राजधानी दिस ।

परात भेने थोड़ दिन उठैत-उठैत शत्रुजीतक देह ज्वरसँ लाह-बाह होअऽ लगलैक । एक दिस वर-बरियातीक विदा होयबाक हूलि-मालि आ दोसर दिस छोटका कुमारक देह धाहसँ जरैत । मोन लाह-बाह होइत देखि महलमे हड़बिड़रो मचि गेल । राजवैद्य अयलाह । शत्रुजीतक उपचार चलऽ लागल । ओ बेसुध भेल की कहाँ बड़बड़ा रहल छल ।

आब की हो ? ने विश्वजीतक विवाहे स्थगित भऽ सकैत छलैक, आ ने शत्रुजीतकेँ तेज ज्वरक अवस्थामे छोड़ले जा सकैत छलैक । राजमहलमे राजवैद्य एवं हुनक अनेक सहयोगी वैद्यकेँ शत्रुजीतक उपचारक भार, अनेक परिचारककेँ परिचर्याक भार तथा सभक व्यवस्थाक भार रानीमाँपर दऽ कऽ वर-बरियाती खिन्न मनसँ कनकपुर विदा भऽ गेल ।

कनकपुरक राजकन्यासँ रतनपुरक राजकुमारक विवाहक विरोध कयलो उत्तर शत्रुजीत विवाहकेँ रोकबा नहि सकल । ओहि आनिमे ओ वर-बरियातीक संग कनकपुर नहि जयबाक अपन संकल्पक निर्वाह कैये लेलक । किन्तु से किएक ? ई रहस्य ककरो जानल किएक होइतैक !

6

राजकुमारी स्वर्णावती कनियाँ बनि कऽ अपन सासुर अयलीह । ओ देखबामे अत्यन्त सुन्नरि छलीह । शील-स्वभाव, आचार-व्यवहार, बोली-वाणी सेहो तेहने ।

राजवंशक जेठ पुतोहुक रूपमे जखन स्वर्णावती सन दोसराइत घरमे आबि गेलथिन तँ रानी कर्णावतीकेँ बड़का उसास भेलनि । ओ पुतोहुक मुह

निहारि कहलथिन– बहुआसिन ! आबसँ अहीँ अपन एहि दुलारू देओरक ध्यान राखल करू । हिनका जखन जाहि वस्तुक खगता होइनि से अहाँ देल करबनि । कखनो तमसयबाक मौका नहि देबनि ।'

नवकनियाँ अपन सासुक बात मानि देओर शत्रुजीतक तालतामे रहऽ लगलीह । मुदा शत्रुजीत तँ अपन स्वभावसँ विवश छल । जँ भरि दिनमे एको बेर आपठ नहि खसौलक तँ ओकरा पेटक पानिये नहि पचैत छलैक । नवकी भाउजि सन सुनैत रहनिहारि लोक ओकरा की भेटि गेलैक, ओ ओकरापर रोब झाड़ऽ लागल । सब काज भाउजिएसँ करबऽ लागल । ओहिमे जँ कने देरी होइक कि तुरन्त भाउजिकेँ बोली देबऽ लागय– एह अहाँकेँ तँ होइए जे हमरा सन केओ दोसर सुन्नरि अछिहे नहि । रूपक गौरवेँ आन्हरि भेल रहै छी । रानीमाँक कहल बातो बिसरि गेल करैत छी, तेँ कोनो वस्तु हमरा देबामे एना देरी करैत रहैत छी ।'

राजकुमार शत्रुजीतकेँ एतबे कहि कऽ सन्तोष नहि होइक । कहैत-कहैत ओ अन्तमे विष सन बोली बाजि दितय जे– हे, अहाँकेँ अपना जे बुझाय, मुदा अहाँ कोनो तेहन सुन्नरि नहि छी जकर कतहु कोनो चर्चो होअय ! अरे ! अहाँसँ लाख गुना सुन्नरि तँ हमरा महलक सुबुधी खबासिनी अछि ।'

महारानी कर्णावतीक कानमे स्वर्णावतीक प्रति शत्रुजीतक कहल बोली सब पड़ैत रहैत छलनि । किन्तु एकरा ओ देओर-भाउजिक हँसी ठट्ठा आ चौल-मखरदन बूझि कऽ अनठबैत रहैत छलीह ।

स्वर्णावती नित्तह शत्रुजीतक ओल सन बोल सब सुनैत रहैत छलीह । सतत अपन मुह बन्द रखने शत्रुजीतक फरमाइस पूरा करैत रहैत छलीह । किन्तु शत्रुजीतक बोली दिन प्रतिदिन और बेसी कटाहे भेल जाइत छल ।

महलक नोकर-चाकर, नौड़ी-बहिकिरनी सब ई बात देखैत सुनैत रहैत छल । अधलाह सबकेँ लगैत छलैक । परन्तु ककरो किछु बजबाक साधंस नहि होइत छलैक । ककरो बुझबामे ई बात नहि अबैत छलैक जे स्वर्णावतीक प्रति छोटका राजकुमारक एहन रुच्छ ओ सतत अपमानित करैत रहबाक व्यवहारक की कारण ? परन्तु जे कारण छलैक से ककरो बुझल नहि छलैक ।

एक बेरक घटना थिक ।

राजकुमार शत्रुजीत किछु सैनिकक संग वनमे शिकार खेलाइलेल गेल छल । जाइत-जाइत बीच जंगलमे देखलक हरिनक हेँजकेँ । ओ सब कूद-फान करैत चराउर करैत छल । शत्रुजीत हरिनक हेँज दिस अपन ॠतुराज घोड़ाकेँ दौड़ा देलक । हरिन सब राजकुमारक घोड़ाक टाप सुनि कऽ पड़ाय लागल । राजकुमारक सैनिक सभ पाछाँ रहि गेल । शत्रुजीत हरिनकेँ पाछाँ-पाछाँ खेहारिते रहल ।

वनमे एकटा नासी छलैक । बरिसातमे ओहिमे पानि बहैत छलैक मुदा आन मासमे ओ सुखयले रहैत छलैक । यैह नासी रतनपुर राज ओ कनकपुर राजक सीमा छलैक । राजकुमार शत्रुजीतकेँ ई बात ज्ञात नहि छलैक वा शिकारक धुनिमे सोह नहि रहलैक, से नहि कहि ।

हरिन सब पड़ाइत-पड़ाइत ओहि नासीकेँ टपि गेल । शत्रुजीतक घोड़ा सेहो नासीकेँ पार कऽ कनकपुरक सीमामे प्रवेश कऽ गेल । आगाँ जा कऽ हरिन सभक झुण्ड खूब घनगर झोँझमे पैसि कऽ जेना अलोपित भऽ गेल । शत्रुजीतक घोड़ा थकमका कऽ ठाढ़ भऽ कऽ अपन अगिला पैरक खुर पटकऽ लागल ।

अचानक एकटा झाँझसँ एकटा सैनिक तीर-धनुष तनने बहरायल । ओ शत्रुजीतकेँ देखि कऽ खूब जोरसँ पुक्की पाड़लक । पुक्कीक अवाज सुनितहि चारू कातसँ झोँझ सभमे नुकायल बहुतो सैनिक सभ अपन-अपन हथियार समधानने बुल-बुल कऽ बहरायल । ओ सभ चारू कातसँ शत्रुजीतकेँ घेरि लेलक ।

ओहि सैनिकमेसँ एकटा बाजल जे- ई कोनो शत्रु देशक चर थिक । भेद लेबाक लेल चोरा कऽ राजक सीमामे पैसि गेल अछि ।'

दोसर सैनिक बाजल-ई चोर थिक । जरूर ई चोरि करबाक हेतु अपना राजक सीमामे चोरा कऽ पैसि गेल अछि ।'

तेसर सैनिक जे प्रायः ओकर सभक नायक छलैक, से खूब जोरसँ कड़कि कऽ बाजल-चुप रह तोँ सब ! चर थिक ई कि चोर थिक से तँ बादमे जाँचसँ पता चलत । एखन तँ ई शिकार करबाक लेल हरिन सबकेँ खेहारने आबि रहल छल । अपना सभक राजमे बनैया जन्तु, पशु-पक्षीक

शिकार करबाक अथवा निरपराधकेँ मारबाक राजा दिससँ एकदम मनाही छैक । ई घोड़सबार छौँड़ा अदलहुकमीक अपराधी अछि । एकरा रस्सामे बान्हि कऽ घिसियबैत राजदरबारमे लऽ चलबाक चाही ।'

शत्रुजीत चारू कात नजरि खिरौलक । ओ देखलक जे ओकर चारू कात गोल पाँती लगा कऽ बहुतो सैनिक सब हथियार तनने डेगाडेगी ओकरा दिस बढ़ि रहल छलैक । किछु सैनिकक हाथमे फनकी बनाओल रस्सा छलैक ।

शत्रुजीतकेँ बुझबामे भाङठ नहि रहलैक जे सैनिक सभक हाथमे जे फनकी छलैक से दूरेसँ फेकि कऽ ओकरे बझयबाक लेल । ओ क्रोधसँ भरि गेल । आँखि लाल भऽ गेलैक । ठोर फड़फड़ाय लगलैक । मोनमे भेलैक जे एखने सबकेँ कचबाबध उठा दी । तुनकाह स्वभावक तँ ओ छले, ओ ऋतुराजकेँ किछु संकेत देलक । ऋतुराज पछिला दुनू टाङपर ठाढ़ भऽ कऽ हिहियाइत चकभाउरि दियऽ लागल ।

ओहि कालमे ओ अपन स्वभावक विपरीत तेजीसँ सोचऽ लागल जे एकर सभक देखारमे एतेक संख्या छैक । नुकयलो बहुत होयतैक । एकसर हम कतेककेँ मारि सकब ! दोसर, एहि ठाम हम जे कचबाबध अराधब तकर परिणाम एखन हमरा संग जे होअय किन्तु रतनपुर राज ओ कनकपुर राजमे दुसमनागत तँ भैये जयतैक । दुनू राजमे युद्ध आरम्भ भऽ जयतैक । दुनू दिसक निरपराध लोक नाहक मारल जायत । से हमरे दोषक कारणेँ । नहि, एखन एकरा सबसँ मारि नहिएँ करी से नीक । बुधियारी एहिमे जे एकरा सभक घेराबन्दीकेँ तोड़ि कऽ बाहर निकलि कोनो तरहेँ अपन राजक सीमामे पहुँची । एहि अपमानक बदला फेर कहियो दोसर तरहेँ लेब ।

शत्रुजीत देखलक जे ओकर चारू कातक सैनिक ओकरा दिस बढ़ल आबि रहल छलैक । रस्साबला सैनिक रस्साक फनकीकेँ चारूकात नचा-नचा कऽ शत्रुजीत आ ओकर ऋतुराज घोड़ाक मुह दिस समधानि रहल छल ।

ऋतुराज ओहिना चकभाउरि दऽ रहल छल । शत्रुजीत अचानक लगामकेँ कनेक ढील कऽ कसि देलक आ अपन एँड़ीकेँ घोड़ाक पेटमे सटा कऽ जाँति देलक । ऋतुराज जेना अपनापर सवार राजकुमारक मोनक भावकेँ बुझि गेल । ओ एके बेर जोरसँ ऊँच तड़पान देलक आ सैनिक सभक माथक

ऊपर दऽ घेराकेँ पार कऽ गेल । ओ सरपट दौड़ऽ लागल आ किछुए कालमे सीमाबला नासीकेँ पार कऽ रतनपुर राजमे चल आयल । तखन शत्रुजीत घोड़ाक चालिकेँ मन्द कयलक । तावत ओकर सैनिक सब ओकरा तकैत-तकैत पहुँचि गेल छलैक । शत्रुजीत मनहूस भेल अपन राजधानी पहुँचल । किन्तु कनकपुरक सीमामे भेल अपमानकेँ कहियो बिसरि नहि सकल छल ।

7

राजमहलमे दास-दासी, खबास-खबासिनी, नौड़ी-बहिकिरनी सब सतत बिनबिन करैत रहैत छल । राजपरिवारक सदस्य सभक भोजनलेल भाँति-भाँतिक सामग्री नित्य बनैत रहैत छलैक ।

भोजन कालमे आसन, जलपात्रादिसँ लऽ कऽ सँचार पर्यन्तक प्रत्येक व्यञ्जनक लेल फराक-फराक व्यक्ति नियुक्त छल । सब राजपरिवारक कोनो सदस्यक भोजन कालमे अपन-अपन निर्धारित वस्तु सभ आनि कऽ लगा जाइत छल । एहि व्यवहारमे कहियो कोनो हेर-फेर नहि होइत छलैक ।

जखन स्वर्णावती राजमहल अयलीह आ रानीमाँ हुनका छोटका राजकुमार शत्रुजीतक खुअयबा-पिअयबाक भार देलथिन, तहियासँ शत्रुजीतक भोजनादिक सँचार लगयबाक व्यवस्था वैह करऽ लगलीह । शत्रुजीत गमे-गमे अपन भोजनक सँचार लगयबाक काज आन दास-दासीक बदलामे स्वर्णावतीसँ कराबऽ लागल । शत्रुजीत भोजन कालमे खास कऽ स्वर्णावतीकेँ ओल-बोल सुनबैत रहैत छल । स्वर्णावती कानमे ठेकी देने, अपन ठोर-मुहकेँ सीने चुपचाप सब किछु सुनैत रानीमाँ द्वारा देल गेल कार्यभारक निर्वाह करैत रहैत छलीह ।

ओहि दिन तँ अतत्तह भऽ गेल । राजकुमार शत्रुजीत भोजनक आसनपर बैसैत देरी जोर-जोरसँ चिचिया कऽ बाजऽ लागल । ओ कोनो तीमन-तरकारीमे फोड़नक कारी मेथी देखि गरजि उठल- तरकारीमे माछी मुइल छै ।'

स्वर्णावती भोजनक अन्तमे खयबाक निमित्त भनसाधरसँ कोनो मधूर आनऽ गेल छलीह । ओ शत्रुजीतक चिकरब सूनि कऽ उनटे पैरेँ दौड़लि अयलीह । शत्रुजीत हुनका देखितहि भोजनक थारी स्वर्णावतीक आगाँमे बजारि देलक आ लागल स्वर्णावतीक माय-बाप ओ हुनक सातो पुरखाक उखाही करऽ ।

शत्रुजीतक भोजनक थारी पटकलासँ गील ओ रसदार तीमनक जे छिटका उड़लैक से स्वर्णावतीक सौंसे मुह-देह पर पड़ि गेलनि । कानमे पड़लनि शत्रुजीतक द्वारा कयल जा रहल अपन माता-पिता एवं समस्त पितृकुलक खिधांस ओ उखाही ।

शत्रुजीतक बोल स्वर्णावतीक हृदयकेँ बरछी जकाँ बेधि देलकनि । शत्रुजीतक नित्तह दिनक बिख सन-सन बोली सुनियो कऽ एतेक दिन धरि गम्भीर ओ चुप रहऽबाली स्वर्णावतीक धैर्यक बान्ह ओहि दिन टुटि गेलनि । हुनक कोँढ़ फाटऽ लगलनि । बुकौर लागि गेलनि । ओ आँचरसँ अपन मुह-हाथपर पड़ल छिटकाकेँ पोछैत झटकि कऽ अपना कोठली चल गेलीह । एते दिन धरि शत्रुजीतक बिखाह बातसब सुनियो कऽ सतत चुप्प रहनिहारि स्वर्णावतीकेँ आइ नहि रहल गेलनि । ओ केबाड़ बन्द कऽ पलङ्पर पेटकुनियाँ दऽ कऽ गेड़ुआमे मुह गाड़ि हिचुकि-हिचुकि कानऽ लगलीह । से तेना जेना ओ खटबास-पटबास लऽ लेने होथि ।

शत्रुजीत पहिल बेर स्वर्णावतीक ई रूप देखलक । ओ भोजनपरसँ उठि पैर पटकैत अपन कोठलीमे चल गेल ।

ई बात सौंसे राजमहलमे गनगना गेल । चारू कात हड़बिड़रो उठि गेल । हड़कम्प मचि गेल ।

रानीमाँ अपना कोठलीमे विश्राम कऽ रहल छलीह । हुनका तुरन्त अपन विश्वस्त दासी स्वर्णावतीक केबाड़ बन्द कऽ हिचुकैत कनबाक सूचना देलकनि । ओ तुरन्त स्वर्णावतीक कोठलीमे दौड़ले गेलीह ।

स्वर्णावतीकेँ नैहरसँ सङ आयलि सूदिनि बोल-भरोस दऽ कऽ चुप करा रहल छलनि । रानीमाँकेँ देखि सूदिनि स्वर्णावतीक कानमे घुनघुना कऽ कहलकनि जे- रानीमाँ अपनहि आयलि छथि ।'

-की भेल कनियाँ ? किएक कनैत छी ?' रानीमाँक प्रश्न कानमे पड़ैत देरी स्वर्णावती हिचुकब बन्द कऽ धड़फड़ा कऽ उठि गेलीह आ हबर-हबर आँचरसँ आँखिक नोर पोछऽ लगलीह ।

सूदिनि रानीमाँकेँ शत्रुजीतक द्वारा कयल गेल व्यवहारक सम्बन्धमे किछु कहबाक लेल सुरफुराय लागलि कि स्वर्णावती गओंसँ ओकर हाथ

घीचैत अपने बजलीह- कहाँ किछु भेलै, रानीमाँ ! एखन माय आ पिताजीक सुधि आबि गेल छल तेँ मन कनेक हहरि गेल छल ।'

रानीमाँ सिनेहसँ स्वर्णावतीक मुह-कान हँसोथि कऽ अपन कोठली दिस विदा भऽ गेलीह ।

स्वर्णावती रानीमाँसँ असल बात तँ नुका लेलनि अवश्य मुदा कनैत रहबाक कारणे हुनक भभरल मुह देखि कऽ रानीमाँके बुझबामे भाङठ नहि रहलनि जे आइ फेर हुनकर दुलारू छोटका राजकुमार स्वर्णावतीक संग कोनो तेहन अभद्र व्यवहार कऽ बैसलथिन अछि जे स्वर्णावतीकेँ कना देलकनि अछि ।

छोटका राजकुमारक डरेँ केओ किछु बजबाक साहस नहि कऽ रहल छल । सब अपना-अपना मुहमे जेना जाबी लगा लेने छल ।

8

राजा प्रसेनजीतक शासन भने सौंसे रतननपुर राजसे चलैत होउन, परन्तु रतनपुरक राजमहलमे रानीमाँहिक शासन चलैत छलनि । राजमहलमे घटित होअऽबला छोटसँ छोट घटनाक पता हुनका भऽ जाइत छलनि । से, अजुको शत्रुजीतक द्वारा स्वर्णावतीक प्रति कयल गेल दुर्व्यवहार च-तु कऽ पता रानी माँकेँ लागिए गेलनि ।

सब बात जानि कऽ रानीमाँ तामससँ जेना लहलह करऽ लगलीह । ओ शत्रुजीतकेँ अपना कोठलीमे आबि भेट करबाक आदेश पठौलथिन ।

शत्रुजीत समदियाक संग रानीमाँक सामने उपस्थित भेल । ओ रानीमाँक कोठलीमे फराकसँ लागल आसनपर बैसबाक लेल सुरफुरायल । परन्तु रानीमाँ कठोर स्वरमे कहलथिन- ठाढ़े रहू ।'

रानीमाँक चेहरा तामससँ तमतमायल छलनि । हुनक गुड़ड़ैत आँखि लाल-टेस भऽ गेल छलनि । शत्रुजीत रानीमाँक उग्र रूप देखि एके बेर सिरसिरा गेल । आन बेर रानीमाँ छोटका राजकुमारक कोनो अनट काज वा अपराधपर बजबैत छलथिन तँ बौआ-नूनू कहि कऽ बुझबैत छलथिन । परन्तु रानीमाँक आजुक रूप आ व्यवहार देखि छोटका राजकुमारक मुह सुख-पाक होअऽ लगलैक ।

रानीमाँक तामसे ँ लाल भेल मुह शत्रुजीतकेँ देखैत देरी और बेसी गम्भीर भऽ गेलनि । ओ अपन मुह दोसर दिस घुमौने बाजऽ लगलीह– राजकुमार ! आब अहाँ नेना नहि छी, चेतन भऽ गेलहुँ, मुदा आचार–विचार, बात–व्यवहारक मर्यादा नहि सीखि सकलहुँ अछि । जेठ–छोटक कोनो विचार अहाँके ँ नहि रहैत अछि । दुर्व्यवहार आ दुरभाखा अहाँक स्वभाव भऽ गेल अछि । अहाँक एहि दोषक कारण हमहीँ मानल जाइत छी । लोक कहैत अछि जे हमरे दुलारेँ अहाँ सहकि गेल छी । अहाँक पिता राजाश्रीसँ हमरा बात सुनऽ पड़ल अछि । मुदा अहाँक लेल धनसन ।'

रानीमाँ कनेक काल चुप भऽ कऽ फेर बाजऽ लगलीह– देखैत छी जे जहियासँ स्वर्णावती अयलीह अछि, अहाँक उद्धतपनी औरो बढ़ि गेल अछि, आ ओ नित्यदिन बढ़ले जा रहल अछि । स्वर्णावती अहाँक की हार–बिगाड़ कयलनि जे हुनका संग नौड़िनियो–खबासिनीसँ अधलाह व्यवहार करैत छियनि ? अपनासँ जेठ जे केओ हो, तकर आदर करबाक चाही । जेठ केवल वयसेँ नहि, सम्बन्धोसँ जेठ होइत छैक । स्वर्णावती अहाँक भाउजि थिकीह, वयसोमे किछु जेठे होयतीह, तकर कोनो विचार अहाँक मनमे नहि होइत अछि ।'

–रानीमाँ.......' राजकुमार किछु बाजऽ चाहलक परन्तु रानीमाँ ओकरा चुप रहबाक संकेत कयलथिन । आइ हुनकर तामसक बान्ह जेना ढहि गेल छलनि । ओ फेर बाजऽ लगलीह–बहुआसिन स्वर्णावती भनहि राजकुमारी रहथु, कतबो सुन्नरि रहथु, माय–बापक दुलरैतिन रहल होथु, मुदा एहि महलमे तँ अहाँक नजरिमे सुबुधी खबासिनियोसँ बत्तर छथि !'

कनेक दम धऽ कऽ रानीमाँ फेर बाजऽ लगलीह– स्वर्णावती अबढङाहि–अलबटाहि छथि । अलबौक–बकलेलि छथि । अपरोजक–अपचेष्ट छथि । भड़दुलाहि छथि । भथम्भरि छथि । कुरूपा छथि । विरूपा छथि । संसारक जतेक अबगुण भऽ सकैत छैक से सभ हुनकामे भरल छनि । तैयो जँ हुनक पति राजकुमार विश्वजीतकेँ ओ पसिन्न छथिन, हुनका मनमे कोनो माख नहि छनि, तखन अहाँ एतेक आमिल किएक पिउने छी ? हुनका उलाउ–चुलाउ किएक करैत रहैत छियनि ?'

लगैत छल जेना रानीमाँकेँ अपमानक गम्भीर आघात लागल होइनि ।

लगैत छल जेना ओ आबो चुप नहि होयतीह, बजितहि रहि जयतीह । से ओ आगाँ फेर बाजऽ लगलीह– स्वर्णावतीमे जतेक अपगुणक गनती हम कयलहुँ अछि, भऽ सकैत अछि जे अहाँक नजरिमे एहूसँ बेसी अपगुण हुनकामे होइनि । तैयो जँ रतनपुरक महलमे जेठ राजवधू बनि कऽ आबि गेलीह तँ तकर दोषी स्वर्णावती नहि, अहाँक पिता राजाश्री आ हम छी । हमही दुनू गोटा स्वर्णावतीकेँ जेठकी पुतोहु बना कऽ अनलियनि । मुदा अहाँक विवाहमे हम सब अपन कोनो जूति नहि चलायब । अहाँ अपन रुचि आ अपन जूतिसँ अपन मनपसिन्न कनियाँ लऽ आनब । बड़ नाम सुनैत छिऐक कोनो अलखसुन्नरि राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिकेर । बड़ वीर-बंका छी तँ लऽ आनी फुलकेसरिकुमरि सन सुन्नरि कनियाँ, तखन बुझी बहादुरी । अपन आनलि कनियाँ अपना सुन्नरियो लगतीह आ अहाँक मनक बात सेहो पहिनहि बुझि गेल करतीह ।'

शत्रुजीत रानीमाँक बात सुनैत-सुनैत उत्तेजनासँ भरल जा रहल छल । ओकर कनपट्टीक नस सब तनतना गेल छलैक । रानीमाँक अन्तिम बात शत्रुजीतकेँ जेना छातीमे बेधि देलकैक । ओ एकाएक अपन दुनू हाथक मुट्ठी कसि कऽ बान्हि लेलक आ जोरसँ बाजल जे- तखन आब हम फुलकेसरिकुमरिकेँ लैए कऽ एहि महलमे घुरि कऽ आयब, नहि तँ पलटि कऽ पैर नहि देब ।' ई कहैत शत्रुजीत पैर पटकैत तमतमा कऽ रानीमाँक कोठलीसँ बहार भऽ गेल ।

शत्रुजीत जखने रानीमाँक कोठलीमे प्रवेश कयने छल तखने महलक दास-दासी सब स्तब्ध भऽ कऽ दोग-दाग धऽ लेने छल ।

ओम्हर स्वर्णावतीक मनमे सेहो दुगदुगी पैसि गेल छलनि । ओ सोचऽ लागल छलीह जे हम तँ रानीमाँकेँ छोटका कुमरजीक सम्बन्धमे कोनो राग-उपराग नहि जनौने छलियनि, तैयो जँ छोटका कुमरजीकेँ रानीमाँ किछु कहथिन, कोनो घटना भऽ जयतैक तँ ओकर सब छार-भार हमरे कपारपर पड़ि जायत ।' ई सब सोचि कऽ स्वर्णावती अपन कोठलीसँ सहटि कऽ रानीमाँक कोठलीक मोखसँ कनेक हटि कऽ चुपचाप ठाढ़ि भऽ कऽ रानीमाँक बात सुनऽ लागलि छलीह ।

शत्रुजीत तमतमायल पैर पटकैत रानीमाँक कोठलीसँ बहराय लागल तँ स्वर्णावती लपकि कऽ ओकर हाथ पकड़ैत बजलीह- कुमरजी ! एना तमसा कऽ नहि जाउ । कनेक हमर विनती सुनि लियऽ..........।'

मुदा शत्रुजीत स्वर्णावतीक कोनो बात किएक सुनितय ? ओ अपन हाथ झमाड़ैत स्वर्णावतीकेँ ठेलि देलक । स्वर्णावती तलमला गेलीह आ खसैत-खसैत बचलीह । शत्रुजीत पैर पटकैत तेजीसँ महलसँ बहरा गेल ।

रानीमाँकेँ जेना ठकमूड़ी लागि गेल होइनि तहिना निश्चल बैसल रहि गेलीह । अपन दुलारू बेटाकेँ रोषसँ भरल चल जाइत देखियो कऽ ओ नहि सुगबुगयलीह।

जाबत राजा प्रसेनजीतकेँ, जेठ राजकुमार विश्वजीतकेँ आ अन्य मन्त्री लोकनिकेँ शत्रुजीतक राजमहलसँ तमसा कऽ चल जयबाक समाद पहुँचितनि-पहुँचितनि, ताबत शत्रुजीत झटकारनहि घोड़सारमे पहुँचि गेल ।

अपन प्रिय घोड़ा ऋतुराजपर सवार भऽ कऽ ओकरा दौड़ा देलक । घोड़ा शत्रुजीतक संकेत पबैत हवा-बिहाड़ि भऽ उठल । जाइत-जाइत जखन ओ रतनपुर राजक सीमापर पहुँचल तँ ओहि ठाम घोड़ापरसँ उतरि गेल । शत्रुजीत आ ओकर घोड़ा ऋतुराज सुस्ताय लागल । थोड़ेक कालक बाद शत्रुजीत ऋतुराजक पीठ थप-थपबैत कहलकैक-जाह हे हमर प्रिय मित्र ! सोझे अपन घोड़सार चल जाह । ओहि ठाम हमर बाट तकिहह । हम अपन संकल्प सिद्ध कऽ कऽ अवश्य अयबह ।' फेर घोड़ाक संग घड़ाजोड़ी करैत बाजल-जाबत तोँ विदा नहि भऽ जयबह ताबत हम अपन राजक सीमा नहि नाँघब ।'

ऋतुराज एक बेर जोरसँ हिनहिना उठल । ओ राजकुमारक ठेहुनपर अपन थुथुन रगड़लक आ जाही बाटे आयल छल ओही बाटे विदा भऽ गेल । शत्रुजीत ऋतुराजकेँ आपस जाइत अपलक देखैत रहल । जखन ऋतुराज आँखिसँ इरोत भऽ गेलैक तखन शत्रुजीत रतनपुर राजक सीमा टपि कऽ विदा भऽ गेल ।

कतऽ जायत ? से ओकरा किछु नहि बुझल छलैक ।

9

शत्रुजीत घरसँ रोषमे बहरा तँ गेल फुलकेसरिकुमरिक खोजमे । मुदा ओकरा ई नहि बूझल छलैक जे ई फुलकेसरिकुमरि के थिकि ? ई कोन राजक राजकुमारी थिकि ? एकर एतेक नाम किएक छैक ?

बिना किछु बुझने-सुझने राजकुमार अनजान-अनिश्चित दिशामे पाँओ-पैदल चलऽ लागल आ चलैत रहल ।

अपन उग्र स्वभाव आ बेसम्हार तामसक कारणेँ भूख-पियास बिसरि गेल । चलबाक धुनिमे दिन-रातिक अन्तर बिसरि गेल । ओ खाली चलैत रहल ।

दू तीन दिनमे ओ लटुआय लागल । ओकरा क्रमहि भूखक अनुभव होअऽ लगलैक । ओ आब किछु खाय चाहैत छल । मुदा खैतय की ?

थोड़ेक काल सुस्तयबाक लेल शत्रुजीत बाटक कतबहिमे स्थित एकटा पाकड़िक गाछ तर बैसि गेल । ओ किछु काल धरि आँखि मुनने रहल । फेर आँखि फोलि चारू दिस नजरि खिरौलक । किछु दूर हटि कऽ एकटा और पाकड़िक गाछ छलैक । ओहि ठाम लोकारय बुझि पड़लैक । ओ नहूँ-नहूँ सहटि कऽ ओतऽ गेल ।

एकटा महिला अपना आगाँमे भरि पथिया किछु रखने छलि । ओहि ठाम अनेक लोक ओकरासँ पथियाक सामग्री लऽ रहल छल । थोड़ेक हटि कऽ एकटा खोपड़ी छलैक । ओहू ठाम कतोक महिला सब दौरा-दौरी, मौनी-डालीमे अन्न सभ रखने बैसल छल । खोपड़ीसँ खबर-खबर ध्वनि आबि रहल छलैक आ ओकर छपरीपरसँ धुआँ बहराइत छलैक ।

राजकुमार कौतूहलसँ पथियाबाली महिलासँ पुछलकैक जे- एहि ठाम एतेक लोक किएक जमा छै ? खोपड़ीमे की होइ छै ?' राजकुमार मुरही कहियो देखने नहि छल तेँ पुछलकैक- एहि पथियामे की छह जे लोक सबकेँ दैत छहक ?'

महिला आश्चर्यसँ राजकुमारकेँ देखऽ लागल जे एतेक साधारणो बात एकरा किएक ने बूझल छैक ! किन्तु राजकुमारक रूप-रंग, पहिरन-ओढ़न देखि अनुमान कयलक जे ई कोनो पैघ घरक लोक थिक तेँ गाम-घरक बात

नहि बुझल छैक । महिला कहलकैक जे– बाबू ! एहि नगरक नाम छै धानपुर हाट । एहि इलाकामे धान बड़ उपजै छै । एहि ठाम बड़का हाट लगै छै । बड़ नामी हाट छै । दस–बीस कोसक बनियाँ–बनिजार आ आनो लोक सब वस्तु–जात बेचऽ बेसाहऽ अबै छै । आइ हाटक दिन छै तेँ लोक सब सौदा–बारी बेचऽ–बेसाहऽ आबि रहल छै । ई खोपड़ी जे देखै छिऐ, से कनसार छिऐ । कनुनियाँ चुल्हा पजारि कऽ खापड़िमे भूजा भुजि रहल छै । लोक सब अन्न लऽ लऽ कऽ भूजा भुजयबा लेल आयल छै । कनुनियाँ पहिने अन्नमेसँ अपन भाड़ बहार कऽ लै छै, तखन अन्न भूजि कऽ दै छै– चाउर–चूराक भूजा, मकैक लाबा, बूट–राहड़िक फुटहा, जओक फरही– यैह सब ।'

–हमरा पथियामे अछि मुरही । तारल धानक चाउरकेँ मुरहीक चाउर कहै छै । खापड़िमे ओहि चाउरकेँ भूजि कऽ मुरही बनाओल जाइ छै। लोक सभ अपन–अपन मौनीमे, डालीमे धान, नहि तँ आने कोनो अन्न अनै छै । हमरा लग एकटा नपना अछि । नपनामे भरि कऽ अन्न लै छिऐ आ ओही नपनासँ नापि कऽ मुरही दऽ दै छिऐ । कतेको राही–बटोही ढेउआ–कैचा दऽ कऽ सेहो मुरही कीनि लै छै ।'

छोट–छोट धिया–पुता सब धानकेँ बदलि कऽ मुरही लैत छल आ भरि–भरि फक्का लऽ–कऽ फँकैत छल । फँकैत–फँकैत जेना आनन्द–विभोर भेल जाइत छल । से देखि भूखसँ लहालोट भेल राजकुमारक भूख और तेज भऽ गेलैक ।

ओकरा लगमे कैञ्चा–कौड़ी तँ छलैक नहि । ओ अपन गरदनिसँ मणि–मानिक बला रत्न हार निकालि कऽ मुरहीबालीकेँ दैत कहलकैक जे– तोँ ई लऽ लैह आ एकरा बदलामे थोड़ेक मुरही दैह ।'

मुरहीबाली हार देखि कऽ अकचका गेलि । हारक चमकसँ आँखि चोन्हरा गेलैक । ओ आश्चर्यसँ कखनो राजकुमार दिस आ कखनो हार दिस ताकऽ लागलि । ओ हारकेँ तजबीज करैत बाजलि– ई हार लऽ कऽ हम की करब ?

–अपने पहिरिहह ।' शत्रुजीत बाजल ।

–हम पहिरब से हमरा छजत ?' हँसैत मुरहीबाली बाजलि ।

शत्रुजीत कहलकैक जे– नहि पहिरबह, तँ बेचि लिहह । बहुत दाम भेटतह ।'

मुरहीबाली कहलकैक– नहि बाबू, हम गरीब लोक छी । ई हार लऽ कऽ जतहि बेचऽ जायब, ततहि हमरा चोरनी बुझि कऽ बैला देत । धनिकक पितड़ियो औंठीकेँ लोक सोने बुझैत छैक आ गरीबक सोनोक गहनाकेँ पित्तड़ि मानि लैत छै । तेँ किछु कैंचे दऽ कऽ मुरही लऽ ने लियऽ । एक-दू मौनी मुरही लय हार फेकनाइ कोनो नीक काज नहि कहत लोक ।'

शत्रुजीत कहलकैक जे– हमरा लगमे कैंचा-कौड़ी नहि अछि । हमरा बड़ जोर भूख लागल अछि । जे करबह, से जल्दी करह ।'

मुरहीबाली बाजलि– बाबू ! जतरामे चलल छी तँ किछु पाथे, ने तँ किछु बटखर्चा लऽ लेबाक चाही ने ! खाली हाथ केओ बहराय ! अहाँकेँ कैंचा नहि अछि आ भूख लागल अछि, तँ जतेक मुरही लेबाक हो से ओहिना लऽ लियऽ आ बैसि कऽ खाउ । हमर थोड़ेक मुरहीसँ भुखलक पेट भरतै, रोआँ जुड़ेतै तँ हमरा घटी नहि लागत, पुन्ने होयत ।' ई कहि राजकुमारक हाथमे हार दऽ देलकैक ।

राजकुमार मङनीमे मुरही लेबाक बात सुनि कऽ छिलमिला उठल । ओ तुर्छ होइत बाजल– हम मङनचन कयनिहार नहि । मङनीमे तोहर मुरही नहि लेबह । तोँ हारक बदलामे मुरही नहि देबह तँ नहि दैह । हम चललहुँ ।'

शत्रुजीत तुनतुना कऽ एतबा कहैत चलऽ लागल तँ मुरहीबाली ओकरा रोकि देलकैक– सुनू ।'

शत्रुजीत ठमकि गेल । मुरहीबाली हार लेबाक लेल हाथ बढ़ा देलकैक । शत्रुजीत ओकरा तरहत्थीपर हार राखि देलकैक । मुरहीबाली हारकेँ समटि कऽ गोली जकाँ बना आँचरक खूटमे बान्हि लेलक । एकटा चटुआ आनि कऽ एक दिस रखलक आ ओहिपर शत्रुजीतकेँ बैसबाक संकेत कयलकैक । राजकुमार कनेक थकमकायल आ फेर बैसि गेल । मुरहीबाली माँजल लोटामे पानि आनि कऽ दैत कहलकैक– पहिने हाथ-मुह धो लियऽ ।'

राजकुमार तँ जल्दीसँ जल्दी किछु खाय चाहैत छल, मुदा मुरहीबालीक आवेश भाव देखि हाथ-मुह धोयलक । मुरहीबाली एकटा मौनीमे मुरही भरि कऽ दैत कहलकैक जे– बाबू ! जतेक मोन मानय, से खाउ ।'

राजकुमार भरि भरि बाकुट मुरही लऽ कऽ खाय लागल । मुहमे देल मुरही दाँततर दबलासँ कुड़कुड़ ध्वनि करैत छलैक । राजमहलमे छप्पनभोगबला भोजनमे ओहन स्वाद कहाँ कहियो भेटल छलैक, जेहन सोन्हगर स्वाद ओहि मुरहीमे भेटि रहल छलैक ! ओ निश्चय नहि कऽ पाबि रहल छल जे एहन सोन्ह स्वादबला भोजन भेटले ने छलैक, अथवा की अधिक भुखल रहने मुरही एतेक सोअदगर लागि रहल छलैक !

राजकुमार ततेक हबर-हबर फँकलक जे जल्दीए मौनीक मुरही सठि गेलैक । मुरहीबाली राजकुमारक भोजनक आतुरता निंघारि रहल छलि । ओ आस्तेसँ एक मौनी मुरही और ओकरा मौनीमे उझीलि देलकैक । राजकुमार ओकर कोनो प्रतिवाद नहि कयलक । ओ खाइत रहल । मुरही सठि गेलैक ।

एही बीचमे मुरहीबाली लगमे राखल घैलसँ एक लोटा पानि ढारि कऽ राजकुमार लग राखि देने छलैक । राजकुमार लोटो भरि पानि घटाक-घटाक कऽ भरि छाक पीबि लेलक । ओकर लटुआयल देह जेना एके बेर टनमना गेलैक । ओ उठि कऽ चलबाक लेल सुरफुरायल ।

मुरहीबाली राजकुमारकेँ टोकि देलकैक– बाबू ! थम्हि जाउ ।' राजकुमार ठमकि गेल ।

मुरहीबाली अपन आँचरक खूटमे बान्हल हार खोलि कऽ राजकुमार दिस बढ़बैत कहलकैक– अपन ई हार लेने जाउ ।' ओ राजकुमारक हाथ पकड़ि कऽ तरहत्थी पर हार राखि देलकैक ।

राजकुमार तँ मानि लेने छल जे मुरहीबाली मुरहीक दामक रूपमे हार लऽ लेलक । मुदा आब हारकेँ आपस करैत देखि पुछलकैक– जखन तोँ पहिनहि हार लऽ लेलह, तखन मुरही देलह । आब की भेलह जे हार हमरा फेरैत छह ?'

–बाबू ! तखन अहाँ भुखल छलहुँ तँ अहाँ ओहिना चल जैतहुँ । तेँ अहाँक तोख रखबाक लेल लऽ लेने छलहुँ । आब अपन ई हार लऽ लियऽ ।' मुरहीबाली बाजलि ।

राजकुमार चकित होइत कहलकैक– ई की करै छह ? तोँ गरीब लोक छह । मुरही बेचि कऽ गुजर करै छह । तोहर मुरही मङनीमे किएक लितियह ? ई हमरा लेल उचित होइत जे एकटा गरीबक वस्तु मङनीमे खा जैतिऐक ?'

—आ हमरा लय ई उचित होयत जे छोटकी मौनीसँ दू मौनी मुरहीक दाममे एहन हार हम राखि ली ? अहीं पंचैती करू ।' मुरहीबाली अपन बात कहैत आगा बाजलि— बाबू ! अहाँ जतऽ जाइ छी, जाउ । भगवान मनोरथ पूर करथि । ओमहरसँ जखन आपस होयब तँ एहि मुरहीक जे दाम देब, से हम खुसीसँ लऽ लेब ।'

राजकुमार उत्तर देलकैक— तोहर ऋणक भार अपन माथपर लेने चल जैयह ? के जानय जे हम कहिया आपस होयब ? आपस होयबो करब कि नहि !'

मुरहीबाली राजकुमारक मुह पर अपन हाथ रखैत कहलकैक— नहि बाबू ! एहन अलच्छ बात नहि बाजी ।'

—हम की करू तखन ?' राजकुमार अकछल स्वरमे बाजल— हम तोहर मुरहीक दाम बिना देने जा नहि सकै छी । हमरा लगमे कैंचा अछि नहि । तोँ हार लेबह नहि । तखन हम की करी से तोँही बाजह ?'

मुरहीबाली राजकुमारक गप्प सुनि थोड़ेक काल चुप रहलि । फेर बाजलि— जँ हमर मिनती नहिएँ मानब तँ ई हार बेचि लियऽ आ ओहीमेसँ हमरा मुरहीक दाम दऽ देब ।'

—कतऽ बेचब ?' राजकुमार पुछलकैक ।

मुरहीबाली कहलकैक— एही बाटपर आगाँ हाट लगै छै । ओहि ठाम एकटा महाजन गहना-गुड़ियाक खरीद-बिकरी आ बन्हकीक धन्धा करै छै । चलू, हम संगहि चलै छी ।'

एतबा कहि मुरहीबाली कंसारमे गेलि । ओहि ठामसँ एकटा गमछामे बान्हल दूटा पोटरी लेने अपना बेटी संग आयलि । बेटीकेँ मुरहीक पथिया लग बैसा कऽ कहलकैक जे— हम कनेक हाटपरसँ भेल अबै छी ।'

10

पोटरी लेने मुरहीबाली हाट दिस विदा भेलि । राजकुमार ओकरा पाछाँ-पाछाँ चलऽ लागल ।

दुनू गोटे हाटपर पहुँचल । वस्तु बेचनिहार ओ किननिहारसँ हाट भरि

गेल छलैक । हाटसँ कनेक हटि महाजनक दोकान छलैक । मुरहीबाली अपन आँचरक खूटमे बान्हल हार निकालि कऽ राजकुमारक हाथमे दऽ देलकैक आ महाजनकेँ कहलकैक जे– ई बाबू, बटोही छथि । बटखर्चा लय अपन गिरमल हार बेचऽ चाहैत छथि ।'

मुरहीबाली राजकुमारकेँ इशारा कयलकैक । राजकुमार हार महाजन दिस बढ़ा देलकैक ।

महाजन हाथमे हार लऽ कऽ हाथकेँ दू-तीन बेर ऊपर-नीचाँ कयलक । फेर हारमे जड़ल मणि-मानिक सबकेँ तजबीज करऽ लागल । ओ बेर-बेर हारकेँ आ राजकुमारकेँ देखऽ लागल । एना ओ कतेक काल धरि करैत रहल । ओकर मुहपर विस्मय आ अविश्वासक भाव आबि आबि कऽ बिला जाइत छलैक ।

राजकुमार शत्रुजीत महाजनक व्यवहारसँ जेना अकछा गेल । ओ अगुतायल स्वरमे बाजल– की ? हार कीनऽ जोगर नहि अछि की ?'

महाजन गम्भीर होइत बाजल– हूँ । ठीके कीनै जोगर नहि अछि ।'

राजकुमारक मुह एके बेर रङि गेलैक । ओ तामसेँ तमतमा कऽ ठाढ़ भऽ गेल आ महाजनक हाथसँ हार लेबऽ लेल अपन हाथ बढ़ौलक । महाजन ओहिना गम्भीर भेल राजकुमारक हाथ पकड़ि कऽ बैसा लेलकैक । ओ बाजल– बाबू ! हमर पूरा बात अहाँ सुनलहुँ नहि । ई हार ठीके हमरा कीनै जोगर नहि अथवा हमही एहि हारक कीनै जोगर नहि छी । हम अपन सब धन-सम्पत्ति लगा देब तैयो एकर दाम नहि पूरत । हम तँ छोट महाजन छी । छोट-छोट गहना कीनै छी आ कम-सम नफा लऽ कऽ बेचि दै छी । कतेको खगल लोक बेगरता भेलापर अपन गहना, कि दरब-जात बन्हकी राखि जाइत अछि । फेर अपन वस्तु छोड़ा कऽ लऽ जाइत अछि । अहाँ बड़ बेगरतित छी आ कमो मूल्यपर हमरा हाथेँ बेचि लेब तँ हम एकरा बेचब कतऽ ? के कीनत ? एहन हार किनबाक सामर्थ्य रतनपुरक राजा प्रसेनजीतेकेँ छनि ।'

महाजन की जानऽ गेल जे जाहि राजा प्रसेनजीतक नाम लऽ रहल छल तनिके पुत्र थिक राजकुमार शत्रुजीत । ओ ओहि अनचिन्हार युवकक बगय-बानिसँ ई अनुमान तँ कैये लेने छल जे ई कोनो उच्च कुलक सन्तान अछि ।

राजकुमार हताश जकाँ होइत बाजल जे– एहि मुरहीबालीक मुरहीक दाम हमरा देबाक अछि । तेँ एहि हारक बदलामे जे दाम देबाक हो से दऽ दियऽ ।'

–मुरहीक दाम कतेक चाही ? दमड़ी-दोकड़ा-छदाम सैह ने ? हमही एकरा दऽ दै छिऐ । अहाँ अपन हार लऽ जाउ ।' महाजन बाजल ।

–सैह करबाक रहैत, तँ एतबा कृपा मुरहीबाली पहिनहि कऽ चुकलि छलि । तखन अहाँक ओतऽ अयबाक प्रयोजने की छल ?' शत्रुजीत तमकल जकाँ बाजल ।

–बाबू ! अहाँ लगैत छी जिद्दी स्वभावक । आनिपर किछु कऽ सकै छी । अहाँ किन्हु अपन बात छोड़ि आन बात मानब नहि ।' महाजन राजकुमारक मुह दिस तकैत बाजल– अहाँक तोख रखबाक लेल एखन हम ओतबे मुद्रा दऽ सकैत छी जतबा हमरा गल्लामे एखन अछि । ई हार ने हम कीनैत छी, ने बन्हकी रखैत छी । ई अनामति राखल रहत । अहाँ जहिया आबी, अपन हार लऽ ली । एहिसँ बेसी हम की कऽ सकै छी, से कहू ?'

महाजन एतबा कहि कऽ मुद्राबला कन्तोड़ खोलि कऽ उनटा देलक । कन्तोड़मे सोना, चानी, काँसा, ताम इत्यादिक जे मुद्रा छलैक से उझिला गेलैक । महाजन बाजल जे एहिमेसँ जे– जतेक लेबाक हो से लऽ लियऽ ।'

शत्रुजीतक आगाँमे विभिन्न धातुक विभिन्न मूल्यक मुद्राक कूड़ी लागल छल । ओहिमेसँ पाँच गोट स्वर्णमुद्रा शत्रुजीत उठा लेलक आ मुरहीबालीक हाथमे दऽ देलकैक । मुरहीबाली चकित होइत कहलकैक– बाबू ! हम एतेक अनीति नहि करब । दू मौनी मुरहीक दाम पाँच टा सोनाक मोदरा नहि भऽ सकै छै । हम एते नहि लेब ।'

राजकुमार बाजल– हम दू मौनी मुरहीक दाम नहि दैत छियह । तोँ जाहि क्षणमे जेहन आवेशसँ मुरही आ लोटामे पानि देने छलह तकर ई मूल्य नहि, दक्षिणा छियह । हार लेबऽ बेरमे जेना हठ कयने छलह, तेना हठ नहि करह । राखि लैह ।'

मुरहीबाली आब शत्रुजीतक बात काटब उचित नहि बुझि दुनू हाथक आँजुर बना कऽ पाँचो मुद्रा लऽ लेलक । शत्रुजीत उठि कऽ चलबाक उपक्रम कयलक तँ मुरहीबाली कहलकैक– बाबू ! किछु मोदरा संगमे बटखर्चा लय राखि लियऽ । बाटमे काज देत । एहिमे जिद्द नहि करी ।'

महाजन सेहो मुरहीबालीक बातक समर्थन कयलकैक। शत्रुजीत अपन स्वभावक विपरीत शान्ते रहल। फेर बाजल जे एहि प्रकारक यात्राक हमरा अनुभव नहि अछि। यदि अहाँ सब कहैत छी तँ थोड़ बहुत मुद्रा दऽ सकैत छी।'

महाजन बाजल– हम तँ कहब जे कन्तोड़बला सब मुद्रा अहाँ लऽ ली। शर्त वैह जे अहाँक हार अनामति राखल रहत।'

शत्रुजीत बाजल– एतेक मुद्राक पोटरी कतऽ-कतऽ हम उघने जायब ? एतेक हमरा नहि चाही।'

महाजन एकटा नाम गजियामे एक सय स्वर्णमुद्रा गनि कऽ दैत कहलकैक जे– कम मूल्यक सस्त धातुबला मुद्रा बेसी भारी भऽ जायत, तेँ एक सय स्वर्णक मुद्रा देलहुँ अछि। गजिया पातर आ नाम छैक। दुनू दिस डोरी लागल छैक जाहिसँ डाँड़मे बान्हि कऽ सुरक्षित राखल जा सकय।'

राजकुमार शत्रुजीत स्वर्णमुद्राबला गजिया लैत महाजनकेँ कहलकैक– देखू महाजन ! ई एकसय पाँच स्वर्णमुद्रा अहाँक पूजी थिक। एकर लाभ तँ अहाँकेँ भेटबेक चाही। हम अहाँक मूलधन लाभ सहित आपस करबाक वचन दैत छी। परन्तु यदि हम पुनः पलटि कऽ नहि आबि सकी, अथवा अहाँकेँ जखन विश्वास भऽ जाय जे हम आब नहि आपस होयब अथवा जँ अत्यन्त गम्भीर प्रयोजन होअय तँ अहाँ ई हार बेचि लेब। जँ केओ उचित मूल्य देनिहार नहि भेटय तँ अहाँ रतनपुरक राजा प्रसेनजीतक ओतऽ चल जायब। अहाँ जनितहि छी जे ओ पारखी एवं सामर्थ्यवान् राजा छथि। ओ एहि बहुमूल्य हारक बहुमूल्य अवश्य देताह।'

11

राजकुमार शत्रुजीत महाजनक दोकानसँ बाहर भऽ कऽ अपन बाट धयलक। मुरहीबाली सेहो ओकरा पाछाँ-पाछाँ चलऽ लागलि। जखन महाजनक दोकान आँखिक इरोत भऽ गेलैक, तखन मुरहीबाली राजकुमारकेँ पाछाँसँ टोकलैक– कनेक रुकि जाउ बाबू !'

राजकुमार रुकि कऽ पाछाँ घुमि कऽ तकलक। ओ मुरहीबालीकेँ देखि कहलकैक– आब की छह ?'

लग जाय मुरहीबाली संगमे आनल पोटरी राजकुमारकेँ दैत कहलकैक– ई संगमे राखि लिय ।'

–की छै एहिमे ? ई लऽ कऽ हम की करब ?' राजकुमार आश्चर्यक भाव देखबैत बाजल ।

–बाबू ! हम तखनो कहने छलहुँ ने जे जतरा करी तँ संगमे किछु पाथे राखि ली । एहि पोटरीमे एक खूटमे लाइ–मुरही आ दोसर खूटमे चूड़ा–गूड़ बान्हल छै । बाटमे कतौ भूख–पियास लागय तँ खा कऽ पानि पीबि लेल करब । मुरहीबाली राजकुमारक हाथमे पोटरी थम्हबैत बजैत रहलि– बाबू ! अहाँ कोनो पैघ घरक सन्तान लगैत छी । लगैत अछि जेना कोनो राजा–महराजक राजकुमार होइ । पित्त–तामसमे घरसँ बहरा गेलहुँ अछि । ई कहबाक साहस तँ नहि होइत अछि जे अहाँ हमर बेटा दाखिल छी, मुदा अहींक बतारी हमरो एकटा बेटा अछि जे घरमे सबसँ झगड़ा–झाँटी कऽ कऽ तमसा कऽ चल गेल । आइ धरि आपस नहि भेल । जानि नहि, जीबैत अछि कि भुखेँ–पियासेँ सुखा–टटा कऽ मरि–हरि गेल । जँ कतहु अहाँकेँ भेटि जाय तँ बोधि कऽ पठा देबैक । कहबैक जे तोहर माय पेटकान देने छौक तोरा लय ।'

ओकर आँखि नोरसँ भरि गेलैक । राजकुमारक मनमे भेलैक जे सभ मायकेँ अपन सन्तानक प्रति मात्सर्य एके रंग होइत छैक । राजकुमारकेँ राजमहल छोड़लाक बाद पहिल बेर रानीमाँ मोन पड़लथिन । राजकुमार क्षण भरिक लेल उदास भऽ गेल । फेर अपनाकेँ सम्हारलक ।

मुरहीबालीक ओकरा प्रति मात्सर्यपूर्ण आवेश आ ओकरा देखि ओकर पड़ायल बेटा मन पड़ब– एहि दुनू बातसँ राजकुमारकेँ मुरहीबालीमे रानीमाँक आभास भेलैक । ओ मुरहीबालीक देल चूड़ा–मुरहीक पोटरीकेँ नकारि नहि सकल । ओ सहज भावसँ पोटरी लैत पुछलकैक– की नाम छह बेटाक ? किएक पड़यलह ?

मुरहीबाली करुण स्वरमे बाजलि– बिरधन नाम छै ओकर । खूब जिबटगर अछि । केहनो भरिगर काज ओ सम्हारि लैत अछि । हम सब छी गरीब लोक । मुदा ओ जल्दी धनिक बनबाक लोभसँ गरसित भऽ गेल छल । ओकर संगी–साथी सभ सनका देलकै ।'

—की सनका देलकै ?' राजकुमार पुछलकैक ।

—कोनो राजा ढोलहो देने छै जे ओकर शर्त्त जे पूरा करतै तकरा संग बेटीक बियाह करा कऽ आधा राज बाँटि कऽ दऽ देतै । एही बातक उध बिरधनकेँ चढ़ि गेलै । हम सब कतबो मना कयलिऐ, ओ नहि मानलक आ खूब झगड़ा कऽकऽ चल गेल ।' मुरहीबाली बाजलि ।

—राजकुमारीक नाम की छै ?' राजकुमार उत्सुकतासँ पुछलकैक ।

मुरहीबाली मन पाड़ैत कहलकैक— साइत केसरिकुमरि, कि फुलकेसरि एहने सन किछु नाम सुनने छलिऐ ।'

राजकुमार ई नाम सुनि चौंकि उठल । ओकरा विश्वास भऽ गेलैक जे ठीके कोनो फुलकेसरिकुमरि नामक राजकुमारी छैक जकर चर्चा दूर-दूर धरि भऽ रहल छैक । ओ मुरहीबालीक बेटाक नामक अख्यास कयलक- बी-र-ध-न ! यैह नाम ने छह तोरा बेटाक ?'

मुरहीबाली बाजलि— हँ हँ ! बिरधने नाम छै ।'

—ठीक छै । जँ हम आपस होयब तँ तोहर बेटा सेहो अवश्ये अओतह । हमर विश्वास करह ।' ई कहि राजकुमार अपन बाट धऽ कऽ आगाँ बढ़ि गेल ।

मुरहीबाली ठाढ़ भेलि ओकरा देखैत रहलि जेना ओ अपने बेटाकेँ दूर जाइत देखि रहलि हो ।

12

कतेको निर्जन बाध-बोन, खेत-पथार, गाछी-बिरछी, नदी-नाला सब टपलाक बाद ओकरा एकटा नगर भेटलैक । नगरमे हाट-बजार, दोकान-दौड़ी सब छल । लोकक चहल-पहल छल ।

राजकुमार एक ठाम लोकक भीड़ लागल देखलक तँ ओहो उत्सुकतावश ओहि भीड़मे सन्हिया कऽ देखऽ लागल जे की भऽ रहल छैक ।

भीड़क बीचमे एकटा जादूगर छल । ओ जोर-जोरसँ बाजि कऽ जादूक रंग-विरंगक खेल सभ देखा रहल छल । ओकरा संगे एकटा बच्चा

छलैक जे ओकर रमचेलबा छल । जादूगर अन्तमे बाजल जे– आब ओ 'उड़न-छू' जादू देखाओत । ओ अपन जादूक बलसँ ओहि बच्चाकेँ ओहि ठामसँ उड़ा कऽ कतहु दोसर ठाम राखि आओत । मुदा एहि 'उड़न-छू' जादू देखयबासँ पहिने ओ तमसगीर सभसँ टका-पैसा माङऽ लागल । जादूगरक 'उड़न-छू' विद्या देखबाक हेतु उत्सुक लोक सभ ओकर झोरीमे टका-पैसा झहराबऽ लागल । देखिते-देखिते जादूगरक झोरी पैसासँ भरि गेलैक । ओकर बाद जादूगर आँखि मूनि मोने-मोन किछु मन्त्र पढ़ैत अपन जादूक छड़ी ओहि बच्चाक माथक चारू दिस घुमाबऽ लागल । देखिते-देखिते ओ बच्चा बिला गेल । लोक सभ आश्चर्यचकित भेल अपन-अपन आँखि मलैत रहल । भीड़मे ठाढ़ भेल राजकुमार सेहो जादूगरक उड़न-छू विद्या देखि चकित-छकित रहि गेल ।

'उड़न-छू' जादू देखौलाक बाद जादूगर अपन झोड़ा-झपटा समटऽ लागल । ओ लोक सभकेँ कहि देलक जे- ओकर खेल आब खतम भऽ गेलैक ।'

आन सभ लोक ओहि ठामसँ चल गेल, मुदा राजकुमार ओतऽ बैसले रहल ।

जादूगर, राजकुमार शत्रुजीतकेँ बैसले देखि पुछलक-तोँ के थिकह ? एना किए बैसल छह ?'

राजकुमार किछु बाजऽ चाहलक, मुदा ओकरा जेना बाजि नहि भेलैक । ओ जादूगरक मुँह तकैत रहल ।

जादूगर जखन लोक सभसँ इनाम माङि रहल छल तखने ओकर नजरि राजकुमारपर चल गेल छलैक । राजकुमार सेहो ओकरा इनाममे किछु कैंचा देबऽ चाहैत छलैक । महाजनसँ जे एक सय स्वर्णमुद्रा लेने छल से भरि बाट खर्च करैत आयल छल । सभ मुद्रा सठि गेल छलैक । जादूगरकेँ देबाक लेल ओकरा लगमे तखन किछु नहि रहि गेल छलैक तेँ ओ मोन मारि कऽ रहि गेल छल ।

जादूगरकेँ बुझा गेलैक जे ई युवक कोनो समस्यामे पड़ल अछि । ओ ओकरासँ सहायता चाहैत छैक । जादूगर फेर राजकुमारकेँ कहलकैक- तोँ हमरासँ की चाहैत छह युवक ? निःसंकोच भऽ कऽ बाजह ।'

जादूगरक सहानुभूति देखि राजकुमार शत्रुजीतकेँ बल भेटलैक । ओ

जादूगरसँ अपन मोनक बात कहि देलक जे– तोँ अपन 'उड़न-छू' विद्यासँ हमरा ओतऽ पहुँचा दैह जतऽ हम जाय चाहै छी ।'

जादूगर हँसि कऽ कहलकैक– हओ युवक ! हमरा कोनो उड़न-छू विद्या-तिद्या नहि अबैत अछि । हम तँ ओहिना भीड़केँ रोकि कऽ रखबा लेल कहै छियै आ बस हाथक सफाइ देखा दै छियै । तोँ जे किछु देखलहक से तोहर आँखिक भ्रम छलह । जाहि बच्चाकेँ हम जादूसँ उड़ा देलियै से वैह ओहि कपड़ाक तरमे नुकायल अछि...।'

एतेक कहैत जादूगर बच्चाकेँ सोर कयलक आ बच्चा कपड़ाक ढेरी तऽरसँ फुरफुरा कऽ बहरायल ।

बच्चाकेँ सामने ठाढ़ देखि राजकुमारकेँ बुझा गेलैक जे जादूगरक उड़न-छू विद्या वास्तवमे ओकर हाथक सफाइ छैक । राजकुमारक मोन सहसा छोट भऽ गेलैक ।

राजकुमारक मन्हुआयल मुँह देखि जादूगर फेर आपकतासँ पुछलकैक– अच्छा, आब तोँ फड़िछा कऽ कहह युवक, जे तोहर की समस्या छह ? तोँ कोन देश जाय चाहै छह आ किए जाय चाहै छह ?'

राजकुमार बाजल– जादूगर ! तोँ फुलकेसरिकुमरिक नाम सुनने छहक ? ओ जाहि राजक अछि, हमरा ओही राजमे जयबाक अछि । तोँ तँ बहुत नगर, बहुत राजमे घुमैत-फिरैत रहै छह । तोँ जँ ई जनैत होअह तँ हमरा कहह जे ओ कोन राजक राजकुमारी अछि ?'

जादूगर, राजकुमारक गप्प सूनि अख्यासैत बाजल– हँ, फुलकेसरि कुमरिक नाम तँ सुनल अछि । सुनै छियै जे ओ केसरपुरक राजाक बेटी अछि । मुदा ई केसरपुर राज कोमहर अछि, से ने जानले अछि आ ने कहियो ओहि राजमे गेले छी ।'

जादूगरक गप्प सूनि राजकुमार उत्सुकतासँ भरि उठल । ओकर उदास आँखिमे एकटा चमक आबि गेलैक । जादूगर राजकुमारकेँ ऊपरसँ नीचाँ धरि निंघारैत बाजल– मुँह-कानसँ तँ तोँ कोनो साधारण घरक मनुक्ख नहि, राजकुमार सन लगैत छह । तोरा कोन बेगरता पड़लह अछि फुलकेसरिकुमरिसँ ? की बात छह से साफ-साफ कहह ।'

जादूगरक आपकतासँ राजकुमारकेँ साहस बन्हयलैक । ओ अपन सौंसे खिस्सा सुना देलक जे ओकरा अपन माइक उपहास भरल बोली सुनि कऽ आनि लागि गेलैक । आब ओ ताबत धरि अपन राज घूरि कऽ नहि जायत, जावत धरि ओकरा फुलकेसरिकुमरि भेटि नहि जाइ छै ।'

राजकुमारक खिस्सा सूनि कऽ जादूगर सिरसिराइत बाजल– राजकुमारजी, हम तँ बड़ साधारण लोक छी । किछु विचारो दैत धाख होइत अछि । तैयो साहस कऽ कऽ कहैत छी जे– माय-बापक डाँट-दबारपर लोक एना घर छोड़ि कऽ नहि पड़ाइत अछि । अहाँ तँ राजकुमार छी । उचित-अनुचितक सम्बन्धमे राजा-रानीकेँ छोड़ि अनका ककरा साधंस होयतै जे अहाँकेँ डाँटत ! अहाँ एखन नवकबेर छी । अनुभव कम अछि । एखन तँ अहाँकेँ राज-काज सिखबाक बयस अछि । हम तँ विचार देब जे अहाँ घुरि कऽ आपस चल जाउ । अहाँकेँ तँ फुलकेसरियोसँ कत गुन सुन्नरि कनियाँ भेटि जयतीह । अहाँक महलमे हतोसयन बितैत होयत । अहाँक माता-पिताक की हाल भेल होयतनि सेहो तँ सोचू... !'

शत्रुजीत जादूगरक बातकेँ बीचमे कटैत बाजल– हमरा मनमे जे ईर बैसि जाइत अछि से सहजेँ हटैत नहि अछि । एक बेर मनमे जे ठानि लेलहुँ से पूरा कयने बिना नहि छोड़ि सकैत छी । एहि लेल जे करऽ पड़य ।'

जादूगर ओकर दृढ़ता देखि बाजल– राजकुमारजी ! ठीक अछि, हम भगवानसँ विनती करै छियनि जे अहाँ अपन काजमे सफल होइ । मुदा अहाँ जँ हमर कमसँ कम एकटा दोसर बात मानी, तँ कही ।'

–कोन एहन बात छह से कहह ?'

जादूगर बाजल- राजकुमारजी, अहाँ एखन देश-दुनियाँ नहि देखने छियैक, हमरा ई सब देखल-बूझल अछि । अहाँ जँ एहि राजसी रूपमे कतहु कोनो आन देसमे जायब तँ ओहि देसक राजाक आदमी अहाँकेँ दोसर राजक भेदिया-चर बूझि पकड़ि कऽ बनिसारमे धऽ देत । तेँ अहाँ जँ हमर विचार मानी तँ गरीब लोकक रूप बना कऽ कतहु जाउ ।'

वास्तवमे राजकुमार तँ छले बड़ सुन्दर । गोर-भुर्राक, रत-रत करैत देह जे मारि दी सीकी तँ बन्नसँ शोणित फेकि दिअय । माथमे कारी-भौर

औँठिया केश । देहमे सोनक कसीदा कयल, हीरा-मोती जड़ल कपड़ा पहिरने । ठीके, राजकुमार जँ एहि वेशमे कोनो राजमे प्रवेश करितय तँ भेदिया बूझि पकड़ल जैतय । राजकुमारकेँ जादूगरक विचार सोलह आना सत्त बुझयलैक ।

ओ जादूगरकेँ कहलक जे– हमरा लगमे तँ कोनो गरीबबला कपड़ा नहि अछि । बाट-घाटमे जँ मङबो करबै तँ ककरासँ ? एना करह जे तोँ हमर ई राजसी कपड़ा लऽ लैह आ एकर बदलामे हमरा गरीब-गुरबाक पहिरऽबला एकटा कोनो कपड़ा दऽ दैह ।'

जादूगर राजकुमारक बात सुनि कऽ नकारबाक मुद्रामे अपन बामा-दहिना दिस मूड़ी डोलबैत बाजल– नहि राजकुमारजी ! हम छी गरीब लोक । घूमि-घूमि कऽ अपन जादूक खेल-तमासा देखा कऽ अपन परिवारक पालन करैत छी । अहाँक ई हीरा-मोती लागल राजसी कपड़ा आ आँखिकेँ चोन्हरा देबऽबला दामी कुण्डल– ई सब लऽ कऽ हम की करब ? जँ कोनो दोकानमे बेचऽ जायब तँ ओ दोकानबला एहि वस्तु सबकेँ चोरीक माल आ हमरा चोर बूझि कऽ पकड़बा देत । हम नाहकमे जिनगी भरि कारागारमे जाँत-कोल्हु चलबैत रहि जायब ।'

13

शत्रुजीत साहसी छल, निडर छल, वीर छल; से सत्य किन्तु सामाजिक ओ सांसारिक जीवनक ओकरा व्यावहारिक अनुभव नहि छलैक । ओ जादूगरक बात सुनि कऽ थोड़ेक कालक लेल गुम रहि गेल ।

कनेक कालक बाद किछु सोचि कऽ राजकुमार बाजल- सुनह जादूगर ! तोँ हमर ई पोसाक सब लऽ कऽ हमर रतनपुर राज चल जाह हम एकटा चिट्ठी दऽ दैत छियह । तोँ हमर पोसाक, भूषण, मोहर आ चिट्ठी हमर रानीमाँकेँ पहुँचा दहुन गऽ । हमर चिट्ठी पढ़ि कऽ हमर रानीमाँ राजासँ कहि कऽ तोरा रतनपुर राजक नोकरीमे राखि लेथुन । तोरा अपन परिवारक पेट भरबाक लेल नगरे-नगरे, गामे-गामे घुमि-घुमि कऽ तमासा नहि देखाबऽ पड़तह । आ हमरा गरिबहा कपड़ा भेटि जायत ।'

जादूगर राजकुमारक दिस मात्सर्यक संग देखैत सोचऽ लागल जे–

राजकुमार ओना तुनकाह-तमसाह जे होअओ मुदा मनसँ अछि बड़ कोमल। ओ राजकुमारकेँ कहलकैक- राजकुमारजी ! हमरा नोकरी भेटओ कि नहि, मुदा हम अहाँक चिट्ठीक संग ई पोसाक आ भूखन सब अहाँक रानीमाँ धरि अवश्ये पहुँचा देबनि।'

एतेक कहि कऽ जादूगर अपन झोड़ासँ एकटा मैलछओन धोती, एकटा पुरान अंगा आ एकटा गमछा बहार कऽ कऽ राजकुमारकेँ देलकैक। राजकुमार ओ कपड़ा पहीरि लेलक। अपनबला राजसी पोसाक ओ भूषण सब लऽ कऽ जादूगरकेँ दऽ देलकैक। ओहि संग एकटा छोट सन चिट्ठी लीखि कऽ सेहो दऽ देलकैक।

गरीबबला कपड़ा पहिरलाक बाद राजकुमारक वेश तँ बदलि गेलैक मुदा ताहिसँ ओकर रूप तँ नहि बदलि सकैत छलैक। जादूगरकेँ बुझयलैक जे एहन सुन्दर युवक फाटलो-पुरान कपड़ामे जँ सुन्दरे लगैत अछि, तँ सेहो ठीक नहि। जखने कोनो राजमे ई पैसत तँ अनेरे सबकेँ एकरापर सन्देह होअऽ लगतैक जे ई कोनो बहुरुपिया अछि जे वेश बदलि कऽ भेद लेबऽलय पहुँचल अछि। तेँ एकर रूपो बदलि जयबाक चाही। जादूगर तखन बाजल- राजकुमारजी ! अहाँक वेश तँ बदलि गेल। आब अहाँ जँ अपन रूपकेँ सेहो बदलि ली, तँ बढ़ियाँ होयत।'

राजकुमार पुछलकैक- से कोना कऽ भऽ सकै छै जे हम अपन रूप बदलि ली ?'

जादूगर कहलकैक- हमरा रसायन विद्या अबैत अछि। हम अहाँक मुँह आ देहपर एकटा रसायन लेपि दैत छी। एहिसँ अहाँक रूप साधारण गरीब घरक युवक सन मलीन भऽ जायत। तकर बाद अहाँपर ककरो सन्देह नहि होयतैक।'

जादूगरक विचार सुनि राजकुमार पहिने तँ सहमतिमे अपन मूड़ी डोलौलक, मुदा लगले ओकरा मोनमे एकटा प्रश्न ठाढ़ भऽ गेलैक जे जँ ओकरा अपन असली रूपमे अयबाक मोन होयतैक, तँ की से तखन सम्भव भऽ सकतैक ? राजकुमार अपन मनक बात जादूगरकेँ कहलकैक।

-'किए नहि'- जादूगर हँसैत कहलकैक- जहिया कहियो अहाँकेँ अपन असली रूपमे अयबाक खाँहिस होयत, तहिया अपन नहसँ कनेक

खखोड़ि देबै कि बस, अनेरे ई रसायनक लेप पपड़ी जकाँ ओदरैत चल जायत आ अहाँ पुनः अपन एहि असली रूपकेँ पाबि लेब ।'

एकर बाद जादूगर अपन झोड़ीसँ एकटा डिब्बी बहार कयलक । ओहिमेसँ किछु तरल वस्तु राजकुमारक तरहत्थीपर ढारैत ओकरा गओँसँ अपन मुँह-कान, देह-हाथमे औँसि लेबऽ कहलकैक । राजकुमार तहिना कयलक आ देखिते-देखिते गोर दपदप राजकुमारक शरीर मलिन भऽ गेलैक । आब ओ एकदमसँ असली गरीब घरक साधारण युवक जकाँ बनि गेल। ओकर देहक चमक ओहि रसायनक तरमे झँपा गेलैक । राजकुमार अपनेसँ अपन देह-हाथकेँ आश्चर्यसँ निहारैत हँसऽ लागल । जादूगर सेहो मुस्किया देलक ।

फेर जादूगर कहलकैक- राजकुमारजी ! हम एहिसँ बेसी औरो कोनो अहाँक सहायता नहि कऽ सकै छी । तखन हम खाली एतबे कहब जे एहि नगरसँ किछु कोस आगू बढ़लापर एकटा रजबान्ह भेटत । ओ रजबान्ह अनेक राज बाटे होइत जाइत छैक । ओकरा धयने जँ बढ़ैत चल जायब तँ कतहु ने कतहु फुलकेसरिकुमरिक राजक पता लागिये टा जायत ।'

राजकुमार कृतज्ञतासँ जादूगर दिस ताकि ओकरे देखाओल बाटपर विदा भेल । जादूगर सेहो अपन झोड़ा-झपटा समेटि रमचेलबा संगे दोसर दिस चलि पड़ल ।

14

जादूगर ओहि ठामसँ विदा भऽ कऽ दोसर ठाम अपन जादू देखयबाक लेल उपयुक्त स्थान ताकऽ लागल । परन्तु ओकरा माथमे राजकुमार शत्रुजीत तेना भऽ कऽ पैसि गेल छलैक जे ओकरा कतहु तमासा देखयबासँ मन उचटि गेलैक । जादूगरकेँ राजकुमारक प्रति अनजानेमे एकटा अपनैतीक भाव जागि गेल छलैक । ओ मोने-मोन सोचऽ लागल जे राजकुमारक तमसा कऽ पड़ा गेलाक बाद ओकर माता-पिता, भाइ-बहिन, कुल-परिवार आ सौंसे राजक प्रजा सब दुखमे डुबल होयतैक । अपन राजकुमारक कुशल-समाचार जनबाक लेल विकल भेल सब पिपहिया जकाँ बाट तकैत होयतैक । सुनैत छिऐक जे समदिया समाद नहि पहुँचबैत छैक तँ ओकर कान बहीर भऽ जाइत छैक ।

ओ निश्चय कयलक जे सबसँ पहिने राजकुमारक देल चिट्ठी आ पोसाक आदिक मोटरी रतनपुर जाय ओकर रानीमाँकेँ पहुँचा दिऐक । ओकरा बादे अपन रोजगारमे निश्चिन्त भऽ कऽ लागी ।

ओ विदा भऽ गेल रतनपुरक लेल । बाटमे कतहु-कतहु अपन तमासा देखा कऽ बटखरचा मात्रक जोगाड़ कऽ लैत छल । चलैत-चलैत अन्ततः रतनपुर राजक राजधानी पहुँचि गेल ।

राजमहलक मुख्यद्वार पर जादूगर पहुँचल । ओहि ठाम बहुतो सैनिक सब पहरा दैत छलैक । जादूगर द्वार लग जा कऽ ओहि ठाम तनात सैनिककेँ विनम्रतासँ कहलकैक जे– हमरा राजाश्रीक दर्शन करबाक अछि । हमरा भीतर जयबाक अनुमति दियऽ ।'

सैनिक पुछलकैक– तोँ के थिकह ? कोन काज करै छह आ राजाश्रीसँ भेट करबाक की प्रयोजन छह ?'

जादूगर बाजल– हम जादूगर छी । जादूक चमत्कारक तमासा देखायब हमर व्यवसाय अछि । राजाश्रीक बड़ नाम सुनलियनि अछि, तेँ दर्शन करबाक लेल बहुत दूरसँ अयलहुँ अछि ।'

सैनिक झझकि कऽ कहलकैक– आइ-काल्हि राजमहलक कोन कथा, जे, सौंसे रतनपुर राज दुखी छै । तेहनमे तोँ अयलह अछि जादूक तमासा देखाबऽ ? कहै छै एक दिस गुरु-गोसाँइ आ एक दिस कुरथी बाओग ?'

जादूगरकेँ एहि प्रकारक स्थितिक अनुमान पहिनहिसँ छलैक । ओ कऽल जोड़ैत कहलकैक– हमरा ने तमासा देखयबाक अछि, ने इनाम-बकसीस लेबाक अछि । हमरा एकटा अरजी लगयबाक अछि ।' ओ कतबो विनती करैत रहल मुदा सैनिक द्वारक भीतर जाय देबा लेल किन्नहु तैयार नहि भेलैक ।

हारि कऽ जादूगर ओही ठाम जादूक तमासा देखयबाक सरंजामबला धोकड़ा उतारि कऽ राखि देलक । अपन चेलाकेँ ढोलकी बजाबऽ कहलकैक । चेला जोर-जोरसँ ढोलकी बजाबऽ लागल । ओ अपने डमरू बजाबऽ लागल । फेर ढोलकीक ढबर-ढब, ढबर-ढब आ डमरूक डम-डम-डिम, डम-डम-डिमक अबाजक संगहि चिचिया चिचिया कऽ गर्द करऽ लागल– राजकुमार शत्रुजीत ! हमरा महलमे जाय नहि दैए ! दौड़ू ! आउ ! बचाउ ! बचाउ ! बचाउ ।'

जादूगरक हल्ला सुनि जतऽ जे लोक सब छल ओहि ठाम थहाथही जमा भऽ गेल । सभक मुहसँ बहराय लागल– की बात छै ? की बात छै ?'

राजद्वारपर होइत हल्ला राजा प्रसेनजीतक कानमे सेहो पड़लनि । ओ दू गोट सैनिककेँ पठौलथिन कारण जनबाक लेल । थोड़बे कालमे दुनू सैनिक जादूगर आ ओकर चेलबाकेँ पकड़ने आयल । ओ राजाकेँ सूचित कयलकनि जे– ई जादूगर अछि । राजमहलमे प्रवेश करबासँ द्वारपर नियुक्त सैनिक रोकि देलकै, तँ ई ढोलकी आ डमरू बजा–बजा कऽ छोटका राजकुमारजीक नाम लऽलऽ कऽ हल्ला करऽ लागल जे दौड़ू, बचाउ, बचाउ ।'

मन्त्रीजीक मुखमण्डल तामससँ लाल भऽ गेल छलनि । ओ क्रोधसँ बजलाह– सौंसे राजमे कोनो प्रकारक खेल–तमासा लोक बारि देने अछि, तखन तोँ तमासा देखाबऽ आबि गेलाह, से किएक ? तोरा कठोर दण्ड देल जयबाक चाही ।' ई कहि कऽ ओ सैनिककेँ आदेश देबाक हेतु उद्यत भेलाह कि राजा हुनका हाथक इसारासँ रोकैत कहलथिन– ई जादूगर अपना देश–कोसक नहि लगैत अछि, तेँ प्राय: एहि ठामक घटना नहि बुझल छैक । एकरो अपन बात कहबाक अवसर भेटक चाही ।'

राजा प्रसेनजीत जादूगरकेँ कहलथिन– जादूक अद्‌भुत चमत्कार आ खेल–तमासा देखयबाक बात छोड़ि कऽ और जे किछु कहबाक छह, से कहह ।'

जादूगर ठेहुनियाँ दऽकऽ राजाकेँ प्रणाम कयलकनि । फेर ठाढ़ भऽ कऽ हाथ जोड़ि कऽ बाजल– श्रीजी ! हम अनदेसी छी । रतनपुर राजमे पहिल बेर आयल छी । हम छी जादूगर । हाथक सफाइसँ अनेको प्रकारक चमत्कारक तमासा देखायब हमर धन्धा अछि । एहीसँ हम अपन परिवारक निर्वाह करैत छी । सैयन तमसगीरकेँ बेसी काल धरि तमासा देखबा लेल रोकने रहब हमरा बामा हाथक खेल अछि । परन्तु बहुत दूरसँ दिन राति चलैत–चलैत आइ जे हम पहुँचलहुँ अछि, से तमासा देखा कऽ अपने लोकनिक मनोरंजन करऽ आ बदलामे इनाम–बकसीस लियऽ नहि, दोसर काजेँ आयल छी ।'

–तखन कोन काजेँ आयल छह, से ने बाजह ।' मन्त्रीजी कड़कि कऽ बजलाह ।

जादूगर बिना मन्त्री दिस तकने राजाकेँ कहलकनि– महाराज ! अपने जनिका शोचमे डुबल छी, हम ओही राजकुमार शत्रुजीतक समाद लऽ कऽ आयल छी ।'

–शत्रुजीत ! कतऽ भेटलथुन ! कतऽ छथि ओ ! संगहि अयलथुन अछि ?' राजा अपन आसनपरसँ उठि कऽ ठाढ़ होइत बजलाह ।

–शान्त भेल जाओ, श्रीमान् ! राजकुमार आयल नहि छथि । ओ सकुशल छथि । ओ फुलकेसरिकुमरिक उदेसमे आगाँ बढ़ि गेलाह ।' ओ अपन धोकड़ामेसँ एकटा मोटरी निकालि कऽ राजा प्रसेनजीतकेँ देखबैत बाजल जे– राजकुमार ई मोटरी आ एकटा चिट्ठी जे एहि मोटरीएमे छैक, से दैत कहलनि जे चिट्ठी सहित ई मोटरी हमर रानीमाँकेँ, केवल रानिए माँक हाथमे पहुँचा देह ।'

राजकुमारक अपनैती भरल एहि आग्रहकेँ मानि हुनक देल मोटरी आ चिट्ठीकेँ हुनक रानीमाँक हाथमे अपनेसँ पहुँचा देबनि से हम हुनका वचन देलियनि ।'

राजा प्रसेनजीतक मन राजकुमारक समाचार जानि हुलसि गेलनि । ओ जादूगरसँ राजकुमारक सम्बन्धमे बेसीसँ बेसी बात जानऽ चाहैत छलाह । मोटरी ओ चिट्ठी देखबाक लेल उत्सुक भऽ उठलाह । परन्तु तुरन्त मनमे विचार अयलनि जे रानीजीक निमित्त पठाओल राजकुमारक मोटरी ओ चिट्ठी हुनकहि ओतऽ पठबाय दी से उचित । ओ मन्त्रीकेँ आदेश देलथिन जे जादूगरकेँ तत्काल रनिवासमे रानीजीक समक्ष पहुँचा देल जाय ।

तुरन्त जादूगरकेँ रानीजीक महलमे पहुँचाओल गेल ।

जादूगरसँ राजकुमार शत्रुजीतक भेटक समाद सुनि पुत्र-बिछोहमे डुबलि रानीमाँ हलसि कऽ उठि बैसलीह । जादूगरसँ मोटरी लऽ कऽ फोललनि । ओहिमे राजकुमारक पोसाक ओ भूषण देखि कऽ कोनो अनहोनी अशुभ घटनाक भयेँ अचेत भऽ गेलीह । स्वर्णावती हुनका भरि पाँज कऽ पकड़ि सम्हारलथिन । दासी सभ पानिक छिच्चा मुहपर दियऽ लगलनि ।

जादूगर बुझि गेल जे रानीमाँक मनमे राजकुमारक सम्बन्धमे कोनो अशुभ घटनाक भ्रम भऽ गेलनि । ओ जोरसँ बाजल– महरानी जी !

राजकुमार शत्रुजीत निकें छथि । हुनका किछु नहि भेलनि अछि । हुनकर चिट्ठी पढ़ियौन । ओ सब बात लिखने छथि ।'

जादूगरक बोल कानमे पड़लनि तँ रानीमाँ सचेत भऽ गेलीह । स्वर्णावती एकटा लत्तामे लपेटल चिट्ठी निकालि कऽ रानीमाँक हाथमे दऽ देलथिन । रानीमाँ चिट्ठी पढ़ऽ लगलीह । चिट्ठी पढ़ैत-पढ़ैत हुनक आँखिसँ दहो-बहो नोर झहरऽ लगलनि ।

थोड़ेक कालक बाद जखन चित्त स्थिर भेलनि तँ ओ जादूगरकें पुछलथिन जे– सत्त-सत्त कहह जे राजकुमार अपन पोसाक आ आभूषण सभ किएक परित्याग कऽ तोरा देलथुन ?'

जादूगर कल जोड़ि कऽ बाजल– रानीमाँ ! राजकुमारकें साधारण लोकक वेश धारण करऽ पड़लनि । ताहि हेतु हमरासँ साधारण लोकक पहिरऽबला वस्त्र लेलनि आ ई वस्त्र ओ आभूषण सभ ओकर बदलामे हमरा देबऽ लगलाह । हम गरीब लोक छी । राजा, राजकुमार लोकनिक कपड़ा, आभूषण रखबाक सामर्थ्य हमरा नहि छल । तखन ओ हमरा एकटा चिट्ठी सहित ई सब वस्तु अपनेक हाथमे पहुँचयबाक भार देलनि । ओ अपने फुलकेसरिकुमरिक उदेसमे ई कहैत आगाँ बढ़ि गेलाह जे– हम फुलकेसरिकुमरिकें लैए कऽ राजमहल आपस आयब', से हमर रानीमाँकें कहि दियऽहुन । हमर चिन्ता नहि करथि ।'

जादूगर कनेक थम्हि कऽ रानीमाँकें कहलकनि– रानीमाँ ! राजकुमारजी बड़ जिबटगर आ बुधियार छथि । वीर आ निडर छथि । ओ अवश्ये अपन मनक बात पूरा करताह । अपने हुनका सम्बन्धमे बेसी चिन्ता नहि करी ।'

जादूगरक बोल-भरोस देलासँ रानीमाँ थोड़ेक आश्वस्त भेलीह तँ जादूगर बाजल– रानीमाँ ! राजकुमार शत्रुजीत हमरा सन अनचिन्हार लोकपर विश्वास कऽ कऽ अपन वस्त्र, आभूषण आ चिट्ठी पहुँचयबाक भार देलनि । हमरा देल गेल काज आ हमरा द्वारा देल वचन पूरा भेल । आब हमरा जयबाक हुकुम देल जाय ।'

रानीमाँ ओकरा रोकैत कहलथिन– जादूगर ! राजकुमारक गेलाक कतेक दिन बाद हुनक कुशल-क्षेम हमरा सुनौलह अछि । ओहिना कोना चल

जयबह ? तोरासँ निचेनमे राजकुमार दऽ बहुत रास बात पुछबाक अछि । तोहर भोजन आ विश्रामक व्यवस्था रनिवासहिक बहरघरामे कऽ देल जाइत छह । तोँ ताबत ओतहि रहह ।'

सेवक जादूगरकेँ रनिवासक बहरघरामे लऽ गेल ।

15

ओमहर राजा प्रसेनजीत अत्यन्त उद्विग्न भऽ गेल छलाह । ओ मोटरीमे बान्हल सामग्री, चिट्‌ठीमे लिखल बात ओ राजकुमारक कुशलादिक सम्बन्धमे विस्तारसँ जनबाक लेल अत्यन्त उत्कण्ठित भऽ उठल छलाह । ओ आन दिनक अपेक्षा सबेरे राजसभाकेँ विसर्जित कऽ देलनि आ रानीजीक महलमे पहुँचि गेलाह ।

एकान्तमे राजा प्रसेनजीत आ रानी कर्णावती एक दोसराकेँ देखि खूब कनलाह । छोट राजकुमारक गृहत्यागक दिनक बाद कुशल-समाचार पाबि स्वतः दुनू गोटेक मन विह्वल भऽ उठलनि । लोकक सोझाँ ई दुर्बलता देखार ने भऽ जाय तेँ राजा अपनाकेँ सम्हारलनि । पुनः ओ उत्सुकतासँ मोटरीमे बान्हल वस्तु सब देखलनि । फेर चिट्‌ठी पढ़बाक लेल उन्मुख भेलाह ।

कर्णावती राजाक हाथमे शत्रुजीतक लिखल चिट्‌ठी दैत कहलथिन– राजकुमार एकटा आग्रह कयलनि अछि जे जादूगर रतनपुर राजक लेल उपयोगी व्यक्ति सिद्ध भऽ सकैत अछि, तेँ एकरा राजक सेवकक रूपमे राखि लेल जाय ।'

प्रसेनजीत रानीक कथनपर कोनो प्रतिक्रिया बिनु देखौने चिट्‌ठी खोलि कऽ पढ़ऽ लगलाह । रानीमाँकेँ सम्बोधित पत्रमे रानी द्वारा कहल बातक अतिरिक्त एतबे लिखल छल जे– हम जाहि काज लेल बहरायल छी से पूरा कैये कऽ आपस आयब । हमरा तकबाक चेष्टा नहि करब । हमर अपराध सबकेँ बिसरि जायब ।'

राजा चिट्‌ठी पढ़ि कऽ मनहूस जकाँ भऽ गेलाह । फेर बजलाह– राजकुमारक आग्रह मानि कऽ एकटा अनचिन्हार अनदेसीकेँ विश्वस्त सेवकक रूपमे कोना राखल जा सकैत छैक ?'

कर्णावती कहलथिन– जादूगर बड़ साधारण लोक अछि । गरीब

अछि । राजकुमारक मूल्यवान वस्त्र-आभूषण सभ जँ राखि लितय तँ ओकर कय पीढ़ीक ने नीक जकाँ निर्वाह भऽ जैतैक । हम सब की बुझितियैक ? मुदा जादूगर अपन रोजगार छोड़ि एते दूर धरि राजकुमारक देल मोटरी आ चिट्ठी पहुँचाबऽ आयल । ओ किछु पयबाक इच्छा बिना कयनहि तुरन्त आपस चल जाय चाहैत छल । हमही ँ ओकरा रोकि लेलियैक । शत्रुजीतके ँ जादूगर कोनो पैघ उपकार अवश्य कयने होयतनि । एहि जादूगरमे अवश्य किछु विशेषता ओ देखने होयथिन तेँ नोकरी देबाक हेतु लिखलनि अछि । जादूगर विश्वासपात्र भऽ सकैत अछि कि नहि, तकरे परीक्षाक लेल राजकुमार अपन मूल्यवान् वस्त्राभूषण पठौलनि । जादूगर विश्वासपात्र सेवक भऽ सकैत अछि से तँ सिद्ध भऽ गेल । आब अहाँपर दार-मदार अछि जे घर छोड़ि कऽ चल गेल राजकुमारक एक छोट सन आग्रह मानियनि कि नहि मानियनि ।'

राजा गम्भीर भऽ कऽ रानीक बात सुनैत रहलाह । रानीक कहब खतम भेलनि तँ राजा बजलाह— आब हमरा विश्वास भऽ गेल जे छोटका राजकुमारकेँ लोककेँ चिन्हबाक क्षमता आबि गेलनि अछि । जादूगर गुणी लोक अछि आ राज-काजमे ओ उपयोगी सिद्ध भऽ सकैत अछि । ओहुना जादूगर राजकुमारक गन्तव्य बाटक एकटा ठेकान आ कुशल समाचार तँ कहलक ! जादूगरक अयलासँ एतबा तँ जानि गेलहुँ जे ओ कोन दिशामे गेलाह अछि । एतबहु काजक हेतु जादूगर पुरस्कार पयबाक अधिकारी अछि । राजकुमारक अनुसन्धानमे ई सहायक भऽ सकैत अछि । आन कोन-कोन तरहक काज जादूगर कऽ सकैत अछि तकर निश्चय तँ बादमे कयल जायत । मुदा तत्काल राजमहलक लोकक मनोरंजन करबाक लेल जादूगरकेँ राजसेवकक रूपमे राखि लेल जाइत अछि ।'

जादूगरकेँ नोकरीमे राखि तँ लेल गेल । किन्तु ओकर जादूक खेल देखितैक के ? कहै छै मन उदगार तँ गाबी गीत । से महलमे आ कि महलसँ बाहरोमे राजकुमार शत्रुजीतक गृहत्यागसँ दुखी जनता खेल-तमासा देखबासँ विमुख छल ।

जादूगरकेँ बिना काजक बैसल-बैसल मोन अकछा गेलैक ।

ओ एक दिन सपरि कऽ राजदरबारमे पहुँचल । राजाकेँ कल जोड़ि

कऽ कहलकनि- सिरीजी ! हमरापर कृपा कऽ कऽ नोकरीमे राखि लेल गेल मुदा हमर जादूक खेल-तमासा देखनाहर केओ नहि अछि । बिना देह-हाथ लाड़ने-चाड़ने, अकाजक बैसल रहने तँ हम काहिल भऽ जायब । की तँ हमरा कोनो काज देल जाय, ने तँ जयबाक अनुमति देल जाय ।'

राजा गम्भीरतासँ जादूगरक बात सुनलनि । ओ जादूगरकेँ उपयुक्त काज देबाक सम्बन्धमे सोचऽ लगलाह ।

ओही समयमे अश्वपति दौड़ल आयल आ हकमैत राजाकेँ कहलकनि जे- महाराज ! ॠतुराज फेर आइ बगदि गेल अछि । एकदम उतफाल मचौने छैक ।'

राजाक ध्यान जादूगरसँ हटि ॠतुराजपर चल गेलनि । ॠतुराज शत्रुजीतक गेलाक बाद अपने घोड़सारमे आबि खुट्टा पर चुपचाप ठाढ़ भऽ गेल छल । ॠतुराजकेँ एकसर आयल देखिए कऽ लोक अनुमान कयलक जे शत्रुजीत रतनपुर राजक परित्याग कऽ देलनि ।

तकरा बादसँ एहिना ॠतुराज बमकि उठैत छल जकरा शान्त करब कठिन भऽ जाइत छलैक ।

ॠतुराज असाधारण कोटिक घोड़ा छल, तेँ ओकरापर सभक ध्यान रहैत छलैक । परन्तु बगदि गेलापर दुइए गोटे ओकरा सम्हारि सकैत छल । एक तँ राजकुमार शत्रुजीत आ दोसर राजा प्रसेनजीत स्वयं ।

राजा जादूगरकेँ पुछलथिन- तोँ अन्तिम व्यक्ति छह जे शत्रुजीतसँ गप्प कयने छलहुन । तोँ ॠतुराजक परिचारकक काज सम्हारि सकैत छह ?'

जादूगर बाजल-सिरीजी ! हम अपन सक भरि काज करबामे कोताही नहि करब ।'

राजा कहलथिन– चलह हमरा संग ।' राजा विदा भेलाह । आगाँ आगाँ अश्वपति, तकरा पाछा राजा आ हुनका पाछा जादूगर ।

घोड़सारक आँगामे बड़का टा घोड़दौड़ मैदान छलैक । ओहिमे ॠतुराज सौंसे दुलत्ती झाड़ैत दौड़ि रहल छल । कखनो खुरसँ माटि खखौड़ैत हिनहिनाय लगेंत छल । कखनो पछिला दुनू टाङ पर ठाढ़ भऽ अगिला दुनू टाङकेँ बेर बेर धरती पर पटकैत रहैत छल ।

–ऋतुराज !' राजा गम्भीर स्वरमे बजलाह ।

ऋतुराज ठामहि शान्त भऽ गेल । राजा लगमे जा कऽ ऋतुराजक पीठपर हाथ दैत कहलथिन– ई जादूगर तोहर राजकुमारकेँ अन्तिम बेरमे विदा कयने छलनि । जादूगरक मुहे अपन स्वामीक खिस्सा सुनह । आब यैह तोहर ताक–छेम कयनिहार मित्र रहतह । तोँ शान्त रहल करिहह ।'

राजा ऋतुराजक पीठ थपथपा कऽ आपस भऽ गेलाह ।

जादूगर शत्रुजीतसँ भेल गप्प ओ घटना सभक वर्णन ऋतुराजकेँ सुनाबऽ लागल ।

अन्तमे जादूगर बाजल– हम अपने हाथसँ राजकुमारक मुह–हाथमे रसायनक लेप लगा कऽ रूप बदलि देने छलियनि । राजकुमार अपन पोसाक, भूखन आ चिट्ठी रानीमाँकेँ देबाक लेल देने छलाह ।' ऋतुराजक आगाँ ओ अपन दुनू हाथ पसारि देलक ।

ऋतुराज जादूगरक दुनू पसरल हाथकेँ सुंघऽ लागल । ओकर दुनू आँखिसँ पानि जकाँ बहऽ लगलैक । ओ अपन मूड़ी झुका लेलक ।

जादूगर ऋतुराजक गरदनि, पीठ, पाँजर हँसोथैत बाजल– ऋतुराज, तोहर स्वामी बड़ वीर, जिबटगर आ साहसी छथुन । ओ अवश्ये राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिकेँ लऽ कऽ औथुन । तोँ खाली अगुताह नहि, धैर्य धयने रहय ।'

ओहि दिनसँ ऋतुराज शान्त भऽ गेल । जादूगर ओकर परिचर्यामे लागल रहऽ लागल ।

16

मलिछओन धोती, फाटल अंगा, कान्हपर अंगपोछा रखने, झामर–मलिन मुँह–कान, माथमे ओझरायल जटा सन केसबला युवक रजबान्ह पकड़ि लोक सभसँ पुछैत–आछैत विदा भऽ गेल । ककरो बाटमे लक्षित नहि होइक जे ई गरीब बटोही युवक कोनो देशक राजकुमार अछि ।

शत्रुजीत अपनहुँ बिसरि गेल जे ओ कोनो राजाक दुलारू छोट राजकुमार अछि । ओ बिसरि गेल राजमहल । राजमहलक सुखभोग ।

छोट-छोट बातपर तुनकब, तमसायब, आपठ खसायब, लोह-ताम भऽ कऽ खायक परसँ उठि जायब, परसल भोजनक थारकेँ उनटा कऽ फेकि देब; नोकर-चाकरकेँ डाँटब-दबाड़ब- सब किछु बिसरि गेल छल । बस एकेटा धुनि छलैक फुलकेसरिकुमरिक देश धरि पहुँचब ।

लोक सभसँ ओकरा सम्बन्धमे जिज्ञासा करैत ओ आगाँ पढ़ैत जा रहल छल ।

सब किछु बिसरि जायब सम्भव छैक । मुदा भूख-पियासकेँ बिसरब, बेसी समय धरि अनठाओलो ने जा सकैत छैक ।

पियास लगैत छलैक तँ बाटक कातमे कोनो इनार देखि पानि भरनिहारकेँ पानि पिया देबाक आग्रह करैत छलैक । जलपात्रक अभावमे दुनू हाथकेँ जोड़ि आँजुर बना कऽ मुहमे लगा लैत छल । पानि भरनिहार आँजुरमे पानि ढारि दैत छलैक आ शत्रुजीत पीबि लैत छल । गामघरसँ दूर पाँतरमे वा वन-झाड़बला बाटमे पियास खूब जोरसँ लगैत छलैक तँ कोनो जलाशय अथवा नदीमे पैसि आँजुरे आँजुर पानि पीबि लैत छल ।

असह्य भूख लगलापर यात्रापथमे जे कोनो काज भेटि जाइक से कऽ कऽ बोनिक रूपमे भूख शान्त करबा मात्रक लेल भोजनीय वस्तु टा लैत छल, से रुख-सुख, अनोन-बिसनोन, उसिझल-कुसिझल जे भेटि जाइक से खा लैत छल ।

कतोक बेर एहनो भेलैक जे गुल्लरि कि बड़क फड़, ने तँ कोनो जंगलीए गाछक फड़ खा कऽ भूख शान्त कऽ लियऽ पड़ैत छलैक । परन्तु ककरो आगाँ हाथ नहि पसारैत छल ।

शत्रुजीत अपन कठिन यात्रा पथमे गरीबी, अभाव, खेत-खरिहानमे खटैत रहनिहार जन-बोनिहारक कठिन परिश्रमक कारणे देहसँ बहराइत घाम-पसेनाक टघार, भूख-पियाससँ कनैत-कलपैत गरीब लोक सबकेँ लगसँ देखबे नहि कयलक, बल्कि स्वयं ओहि परिस्थितिक भुक्तभोगी सेहो होइत रहल ।

राजमहलमे रहैत भूख की होइत छैक से कहियो बुझबे नहि कयलक । किन्तु आब ओ नीक जकाँ बुझऽ लागल जे भूख की होइत छैक ? भूख ककरा लगैत छैक ? भूखक स्वाद केहन होइत छैक ? वास्तवमे

स्वाद भोजनमे परसल गेल विभिन्न प्रकारक व्यंजनमे नहि रहैत छैक, प्रत्युत खाद्य-व्यंजनक स्वाद तँ भूखमे बसल रहैत छैक । अभुख रहने खोआ-मलिद्दा, पूरी-पकमान, मेवा-मिठाइ, कथूमे स्वाद नहि भेटैत छैक । परन्तु भूखसँ लहालोट भेलापर नोनक संग मडुओक रोटी मलपूआसँ बेसी स्वादिष्ट लगैत छैक । एहन अवसरपर, राजमहलमे भोजनक बेरमे, जे तूम-कलाम मचा दैत छल से सोचि-सोचि कऽ ओ अपने गरानिमे डुबि जाइत छल । तुरन्ते इहो सोचऽ लगैत छल जे पहिने जे भेल से भेल । आब एकटा नव शत्रुजीतक जन्म भेलैक अछि । आब राजमहलमे एक नव राजकुमार शत्रुजीत पलटि कऽ जायत ।' परन्तु तखने ओ सोचऽ लगैत छल जे राजमहल तँ तैखन आपस भऽ सकत, जखन ओ फुलकेसरिकुमरिकेँ प्राप्त कऽ सकत । से नहि भेलापर ओ पलटि कऽ आपस राजमहल किन्नहु नहि जायत ।

यैह सब सोचि-सोचि कऽ शत्रुजीत आगाँ बढ़ैत जयबाक हेतु आओर सन्नद्ध भऽ जाइत छल । बाटमे जे कोनो दुख-कष्ट, विघ्न-बाधा सब अबैत जाइत छलैक तकरा सबकेँ अङेजैत, लोकसबसँ फुलकेसरिकुमरि ओ ओकर देशक सम्बन्धमे पुछारि करैत दिन-राति आगाँ बढ़ैत जा रहल छल । ओकर आत्मविश्वास ओकरा मुट्ठीमे बन्द छलैक जे ओकर पयरकेँ निरन्तर अपन लक्ष्य दिस बढ़ौने जा रहल छलैक ।

17

कतेको राज, नगर, नदी, जंगल पार करैत, भूखे-पियासे लहालोट होइत राजकुमार एकटा नवे नगरमे पहुँचल । ओतऽ जेमहर देखय तेमहर खाली केसरे फूलक गाछ देखबामे ओकरा अयलैक । रकती हरदि सन पिरछओन वा गहुमा रंग कही, की चम्पइ रंग कही । सर्वत्र खेत-पथार, बाध-बोन, आरि-धूर, बाट-घाटक कतबहि, लोकक बाड़ी-झाड़ी, आङन-घरमे केसरक गाछ सबमे फूल भरल छल । राजकुमार ओतऽ बिलमि कऽ लोक सबसँ पुछलक तँ सब कहलकैक जे यैह थिक– केसरपुर राज ।' एही ठामक राजाक बेटी अछि राजकुमारी फुलकेसरिकुमरि ।

ई सुनि कऽ राजकुमारक जानमे जान अयलैक । ओ जाहि उद्देश्यसँ घरसँ विदा भेल छल से आब ओकरा सामने छलैक । राजकुमारकेँ आब

कोनो तेहन स्थानक खोज छलैक जतऽ ओ रहि कऽ फुलकेसरिकुमरिक पता लगा सकय ।

राजकुमार शत्रुजीत नगरमे घुमि-घामि ओतऽसँ बाहर दिसक रुखि कयलक । आगाँ चलि एकटा निर्जन स्थानमे ओकरा एकटा खोपड़ी देखबामे अयलैक । राजकुमार खोपड़ीमे हुलकी दऽ कऽ देखलक तँ ओकरा एकटा बुढ़िया देखाइ पड़लैक । ओ बुढ़िया बैसलि चरखा काटि रहल छलि । राजकुमार बुढ्िसँ काज लेलक । ओ खोपड़ीक ओलतीमे ठाढ़ भऽ गेल आ मौसी-मौसी कहि कऽ जोरसँ सोर पाड़ऽ लागल । बुढ़िया चरखा कटनाइ छोड़ि बाहर आबि ओहि गरीब युवककेँ देखलक । ओ आँखि-भहुँ चमकबैत बाजलि- रे के छियेँ तोँ ? बहीन तँ हमरा केओ छले नहि, तखन हमर बहिनौत भऽ कऽ कतऽसँ उपर भेलेहेँ ?'

वाक्पटु राजकुमार चट बुढ़ियाक पैर छुबैत कहलकैक- आहि रे ब्बा ! तोहर जे बियाह भेलौ, तकर बाद ने हमर मायक जनम भेलै, तँ तोँ कोना जनबेँ हमरा, गय मौसी ?'

बुढ़ियाकेँ सत्तेमे अपना कोनो बहिन नहि छलैक । केओ अनजान लोक पहिल बेर ओकरा मौसी कहि कऽ बजौलकैक, तँ से सुनि कऽ ओकर छाती जुड़ा गेलैक । तैयो ओ अपन मोनक खुसीकेँ नुकबैत रुच्छ स्वरमे बाजलि-अच्छा, चल-चल ! आब तोँ जे केओ छियेँ से रह, मुदा जखन हमरा मौसी कहलेँ तँ हम तोरा मौसिए जकाँ रखबौ । नाम की छौ तोहर ?'

बुढ़ियाक एहि प्रश्नपर राजकुमार कनेक काल लेल धकचुका गेल । ओ अपन वेश-भूषा गरीब सन तँ बना लेने छल अवश्य, मुदा ओकरा अपन एकटा गरीब सन नाम सेहो राखऽ पड़तैक से तँ ओ सोचनहिँ नहि छल । हठात् राजकुमारकेँ मोन पड़ि गेलैक अपन राजहलक सुबुधी खबासिनक बेटा जे ओकरे बतारीक छलैक आ ओकर नाम छलैक खखना । राजकुमार तुरत अपन मुखमुद्रा बदलैत बाजल- ठीके तोँ आब बड़ बूढ़ भऽ गेलेँ गय मौसी ! गय एखने तँ तोरा हम अपन नाम कहलियौ अछि खखना । बड़ देवे-सेवे बड़ खखनला पर हमर जनम भेल तेँ हमर नाम राखल गेल खखन । मुदा की कहियौ गय मौसी ! हमरा केओ किए कहत खखन । सब एकारय मारि कऽ खखना कहैत अछि ।'

राजकुमारक आपकता भरल गप्प सूनि बुढ़िया अहलादसँ बाजलि– गे, के हमर सोन सन बहिनौतकेँ खखना कहत ? हम कहब अपन नेन्नाकेँ खखन बाबू ।' एतेक कहि बुढ़िया सिनेहसँ अपन खखनबाबूक मुँह–कान हँसोथऽ लागलि ।

राजकुमारकेँ बुझा गेलैक जे बुढ़ियापर ओकर जादू चलि गेलैक अछि। ओ दुलारसँ छिड़िआइत बाजल– गय मौसी ! तोँ केहन कठोरनी छेँ ? हमरा पियासेँ जान जा रहल अछि आ तोँ कने पानियो पिअयबेँ से नहि होइ छौ ?'

बुढ़िया फुरफुरा कऽ उठलि आ राजकुमारकेँ लोटामे पानि आनि कऽ देलकैक । राजकुमार पानि लऽ कऽ हाथ–मुँह धोयलक । ओ ततेक ने भुखल–पियासल छल जे आब ओकरा ठाढ़ नहि भऽ होइत छलैक । ओ ठामहि खोपड़ीक देहरिपर निच्चेमे पड़ि रहल ।

राजकुमारक कुम्हलायल मुँह देखि कऽ बुढ़ियाकेँ बड़ माया आबि गेलैक । ओ बड़ा सिनेहसँ पुछलकैक– रे बौआ ! किछु खयबेँ ?'

राजकुमार फुरफुरा कऽ उठल– हँ, हँ खायब ने किए, तोँ किछु देबेँ तखन ने ?

बुढ़िया कहलकैक– बौआ रे ! हमरा घरमे तँ और नीक–निकुत किछु नहि अछि । बस दू–तीनटा सुखायल रोटी अछि से दियौ ?'

राजकुमार बाजल– पूछै की छेँ मौसी, जे छौ से जल्दी आनि कऽ दे ने !'

बुढ़िया एकटा छिपलीमे सुखायल रोटीपर कने अखड़ा नोन धऽ कऽ खाइ लय देलकैक । राजकुमार तँ भूखसँ लोहछल छले, ओ हलसि कऽ बुढ़ियाक हाथसँ रोटी लेलक आ हाथेपर राखि कऽ खाय लागल । अपना राजमहलमे राजकुमारकेँ मेवा–मधुर सेहो कंठमे गड़ैत छलैक आ एतऽ सुखायल–टटायल रोटियो ओकरा अमृत सन बुझा रहल छलैक ।

जखन राजकुमारक पेटमे अन्न गेलै तखन ओकर देहमे किछु सक बुझयलैक । बुढ़िया ओकरा सुतबा लय फाटल पटिया आनि कऽ देलकैक । राजकुमार ओही पटियापर असुआ कऽ सूति रहल आ लगले फोंफ काटऽ लागल ।

दोसर दिन जखन खूब दिन चढ़ि गेलै तखन जा कऽ ओकर निन्न टुटलैक । उठलाक बाद राजकुमारकेँ फुलकेसरिकुमरिक पता लगयबाक चिन्ता भेलैक । ओ सहटि कऽ बुढ़िया लग आयल आ ओकरासँ पुछलक- मौसी गे ! ई फुलकेसरिकुमरि के छै ?'

बुढ़िया अकचका कऽ राजकुमारक मुँह दिस तकैत कहलकैक- तोरा कोन काज छौ फुलकेसरिकुमरिसँ रे खखनबाबू ? अयलेँहेँ तँ चुप-चाप संच-मंच भऽ कऽ रह ।'

राजकुमार कहलकैक- नहि, नहि, हमरा कोनो काज नहि अछि । लोकक मुँहे बड़ चर्चा सुनलियै तेँ तोरासँ पुछलियौ ।'

बुढ़ियाकेँ विश्वास भऽ गेलैक जे युवक ओहिना ओकरासँ फुलकेसरि दऽ पूछि रहल छैक । ओ खखनबाबूकेँ फुलकेसरिकुमरिक खिस्सा कहऽ लागलि जे- फुलकेसरिकुमरि एहि ठामक राजाक बेटी छै । ओ देखऽ-सूनऽमे केहन छै, से आइ धरि केओ ओकरा नहि देखलकैए । राजा सौंसे राजमे डिगडिगिया पिटबा देने छै जे, जे केओ राजाक शर्त पूरा कऽ ओहि राजकुमारीसँ बियाह करतै तकरा आधा राज बाँटि कऽ दऽ देतै । ई सुनि कऽ देस-बिदेसक कतोक राजकुमार सभ, सुन्दर-सुन्दर युवक सभ नित्तहु अबैत रहै छै । मुदा ने आइ धरि केओ कहियो राजकुमारीक बियाहे दऽ सुनलकै, आ ने जे जे राजकुमार आ युवक सभ राजमहलक भीतर गेल तकरा बहराइते देखलकैए ।'

एतेक कहैत-कहैत ओ बुढ़िया सिसकि-सिसकि कऽ कानऽ लागलि आ राजकुमारकेँ भरि पाँज कऽ पकड़ैत बाजलि-बाउ रे ! बिसरभोरोमे महल दिस नहि जैहेँ ।'

बुढ़ियाकेँ कनैत देखि राजकुमार ओकरासँ तकर कारण पुछलकैक । बुढ़िया कानि-कानि कऽ जे किछु कहलकैक ताहिसँ शत्रुजीतकेँ जानल भेलै जे- ओकरो एकटा पोता छलै । ओहो एक दिन ओकर बात काटि कऽ फुलकेसरिकुमरिसँ बियाह करबाक लोभसँ राजमहलमे गेलै, से घुरि कऽ नहि एलै । एहि बुढ़ारीमे ओकर पोता हाथसँ बेहाथ भऽ गेलै ।'

राजकुमार बुढ़ियाक गप्प सुनि गुम्म रहि गेल । ओ ओकर आँखिक नोर पोछैत बोल-भरोस देलक आ घुमबा-टहलबाक लाथेँ खोपड़ीसँ बहरा गेल ।

18

राजकुमार ओहि दिन, भरि नगर घूमल आ लोक सभसँ फुलकेसरिकुमरि दऽ पुछैत रहल । मुदा ओकरा केओ किछु निस्तुकी नहि कहलकैक । साँझ पड़लापर ओ घुरि कऽ बुढ़ियाक खोपड़ीमे चल अबैत रहल ।

अगिला दिन ओ बुढ़ियाकेँ कहलकै– गय मौसी ! हम राजाक दरबारमे जायब आ फुलकेसरिकुमरिसँ बियाह करबाक अर्जी लगायब । फल चाहे जे होअय !'

राजकुमारक ई गप्प सुनि कऽ तँ बुढ़ियाक करेज केराक भालरि जकाँ काँपि उठलैक । बुढ़ियाकेँ एकेटा बेटा छलैक से मरकीमे मरि गेल छलैक । ओकरा लागल एक दिन ओकर पुतोहु सेहो दुनियाँसँ विदा भऽ गेलैक । रहि गेलैक एकमात्र अनाथ पोता किसना–बुढ़ारीक आशा । बुढ़िया ओकरा पोसि कऽ जबान कयलक । मुदा एक दिन ओ पोता फुलकेसरिकुमरिसँ विवाह कऽ राजपाट प्राप्त करबाक लोभमे घरसँ जे निकललैक से निकलले रहि गेलैक । ओ अपन एकमात्र पोताकेँ गमा चुकल छलि । ई अज्ञात युवक जे ओकरा मौसी कहि कऽ सोर कयने छलैक तकरा प्रति ओकरा मोनमे दरेग उत्पन्न भऽ गेल छलैक । ओ अपन पोता जकाँ एहि दोसरो युवककेँ अपटी खेतमे नहि जाय देबऽ चाहैत छलि । बुढ़िया मारि कलपि–कलपि कऽ राजकुमारकेँ राजाक दरबारमे जाइसँ मना करऽ लगलैक । राजकुमार बुढ़ियाकेँ भरोस दैत बाजल–मौसी ! तोँ हमर चिन्ता नहि कर । हम तोरा एतेक वचन जरूर दै छियौ जे हम फुलकेसरिकुमरिकेँ पाबी कि नहि पाबी, मुदा हम तोहर पोताकेँ अबस्से आनि कऽ रहबौ ।'

बुढ़िया राजकुमारक एहन हठ देखि चुप्प भऽ गेलि । कनेक विलमि कऽ बाजलि– बाउ रे ! जँ जयबे करबेँ, तँ ठीक छौ, मुदा आइ भरि रहि जो । काल्हि चल जैहेँ ।'

राजकुमार बुढ़ियाक बात मानि ओहि दिन नहि गेल । बुढ़िया ओकरा अपन खोपड़ीयेमे चुपचाप कलमच बैसल रहऽ लेल कहि जंगल दिस चल गेलि ।

पहर–दुपहरक बाद बुढ़िया कतहुसँ भरि आँचर अँकटा–मिसिया सन

अन्न कि कथुक बीया बिछने चल आयलि । बुढ़िया ओकरा बीछि-बना कऽ जाँतमे पीसि कऽ ओकर चिक्कससँ थोड़ेक रोटी पकौलक ।

परात भेने जखन राजकुमार दरबार दिस विदा होअऽ लागल तँ बुढ़िया राजकुमारकेँ ओ रोटी दैत कहलकैक– बौआ रे ! ई रोटी एकटा गमछामे लपेटि कऽ डाँड़मे बान्हि ले । आ हे, जँ जंगल-पहाड़-नदी सभ बाटे जाय पड़ौक आ बाटमे बाघ, सिंह, अजगर सन कोनो हिंसक, विषधर, जानवर भेटौक तँ डेरैहेँ नहि । एहि रोटीमेसँ कने-कनेटा टुकड़ी खोँटि-खोँटि कऽ ओकरा सभक दिस फेकि देल करिहेँ । ओ सभ एकरा खा कऽ अनेरे तोहर बाट छोड़ि देतौ । आ हे, एकटा आर बात सुनि ले ! जखन खाइ लय किछु नहि भेटौ तँ एहि रोटीमेसँ एक टुकड़ी तोड़ि कऽ अपनो खा लेल करिहेँ । एहिसँ भूख-पियास नहि लगतौ । राति बीच कोनो गाछेपर सूतल करिहेँ ।'

राजकुमार बुढ़ियाक सब बात ध्यान पूर्वक सुनैत रहल । ओकरा बुझऽमे आबि गेलैक जे एहि बुढ़ियामे अवश्ये कोनो विशेष गुण छैक । जखन राजकुमार बुढ़ियाक पैर छूबि विदा भेल तँ, बुढ़ियाक आँखि डबडबा गेलैक । ओ राजकुमारकेँ माथ ठोकि आशीर्वाद दैत बाजलि– बौआ ! तोँ तँ अपने बड़ बुझनुक लगै छेँ । मुदा तैयो जखन कखनो ओहन जरूरति पड़ौ तँ एहि बुढ़िया मौसीकेँ अबस्से मोन पाड़ि लिहेँ ।'

राजकुमारक आँखि सेहो नोरा गेलैक । ओ धोतीक खूटसँ अपन आँखि पोछैत राजदरबार दिस विदा भऽ गेल ।

19

केसरपुर राजक राजा कामदेवसेनक दरबार लागल छलनि । राजा सिंहासनपर बैसल छलाह । दरबारी सब अपन-अपन स्थानपर बैसल छलाह । दरबार बड़ भव्य छल । मुदा राजाक मुँहपर एकटा स्थायी उदासी जेना छारने छलनि । प्राय: अपन बेटी राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिक विवाहकेँ लऽ कऽ राजा चिन्तित रहैत छलाह । एखन धरि हुनका कोनो जुगलतगर वर नहि भेटल छलनि ।

दूटा सेवक दुनू दिससँ पंखा हौँकि रहल छलनि । राजक कोनो

समस्यापर दरबारमे विचार-विमर्श भऽ रहल छल । एतबेमे एकटा द्वारपाल आबि कऽ राजाकेँ कहलकनि-सरकार ! एकटा युवक अपनेक दर्शन करऽ चाहैत अछि ।'

राजा ओकरा इसारासँ ओहि युवककेँ दरबारमे पठा देबऽ कहलथिन। राजाक आदेशसँ द्वारपाल ओहि युवककेँ दरबारमे हाजिर कयलक । गमैया युवकक वेश-भूषामे राजकुमार शत्रुजीत राजा कामदेवसेनकेँ माथ झुका कऽ प्रणाम करैत हाथ जोड़ि कऽ राजकुमारीसँ विवाहक अर्जी लगौलक । दरबारी सब ओहि युवककेँ देखि कऽ हँसि देलक ।

राजा ओकरा ऊपरसँ नीचाँ धरि निंघारैत गम्भीर बनल कहलथिन- युवक ! तोँ आपस चलि जाह । ई विवाह तोरा सकक बात नहि छह ।'

राजकुमार कहलकनि- महाराज ! छोट मुँह ओ पैघ बातलेल क्षमा करी । मुदा अपने राजकुमारीक विवाह दऽ सार्वजनिक रूपसँ ढोलहो दियौने छियै, तखन फेर अपन वचनसँ अपनेक पाछाँ हटब उचित नहि । संगहि हमरो संकल्पकेँ सूनि लियऽ । हम विवाह करऽ लेल अयलहुँ अछि तँ विवाह कैये कऽ जायब । शर्त्त केहनो कठिन होअओ, हम ओकरा अवश्य पूरा करब । अपने, अपन शर्त्त कहल जाय ।'

राजा एहि गमैया युवकक एहन दृढ़ आत्मविश्वास देखि चुप रहलाह । राजाक मुखमुद्रा देखि दरबारी लोकनि सेहो अपन मुस्कीपर लगाम देलनि।

राजा चुपचाप उठि ओहि युवककेँ लऽ कऽ रनिवासक ओहि एकान्त हबेली दिस विदा भेलाह जतऽ राजकुमारीकेँ कपड़कोटमे घेरि कऽ राखल जाइत छल । ओतऽ पहुँचलापर राजा पुनः विचलित जकाँ होइत निर्धन वेशधारी राजकुमारकेँ कहलथिन-युवक ! तोँ आबो हमर बात मानह आ घुरि जाह । तोरा नहि बुझल छह जे राजकुमारी फुलेकसरिकुमरिसँ विवाहक शर्त्त कतेक कठिन छैक । पहिनहुँ बहुत गोटे असफल भऽ चुकल छथि ।'

मुदा राजकुमार तँ अपन घरसँ ठानि कऽ आयल छल, तेँ ओ कनेको टससँ मस होयबाक लेल तैयार नहि भेल । युवकक एहन दृढ़ता देखि राजा कामदेवसेन गम्भीर भऽ गेलाह ।

महलक एक भागमे निमुन्न कऽ कपड़कोट लागल छल । कपड़कोटक

बाहरो किछु दासी सब ठाढ़ि छलि । राजकुमार मोने मोन सोचऽ लागल जे-प्राय: राजकुमारी ततेक सुन्दर ओ कोमल होयत जे ओकरा एना झाँपि कऽ राखल जाइत होयतैक । रौदो-बसात लगलासँ ओकर मुँह कुम्हला कऽ मलिन भऽ जाइत होयतैक । देहक चाम चछा जाइत होयतैक । तेँ राजा ओकरा एना निमुन्न कऽ कऽ रखैत छथिन । राजकुमार, कपड़कोटमे बन्द राजकुमारीकेँ देखबाक लेल अत्यन्त उत्सुक भऽ उठल ।

युवकक हठ देखि राजा कामदेवसेन दासी सबकेँ कपड़कोट हटा देबाक आदेश देलथिन । दासी सब जहिना कपड़कोट हटौलक कि सोझाँक दृश्य देखि कऽ राजकुमार भयसँ चिहुँकि उठल । ओकर सगरो देहक रोआँ काँटोकाँट भऽ उठलै । ओकर सर्वाङ्ग सिहरि उठलै । ओ मोनमे की सब ने कल्पना कयने छल । कपड़कोट हटलाक बाद जे ओ अपन आँखिसँ देखि रहल छल से ओकर कल्पनाक एकदम्मे उनटा छलैक । शत्रुजीतकेँ तराटक लागि गेलै । ओ जेना झमान भऽकऽ खसल । यैह थिकीह अलखसुन्दरी फुलकेसरिकुमरि !

सोनक सिंहासनपर बेस दामी कपड़ा-लत्ता, गहना-गुड़िया पहिरने एकटा लोथ-चोथ माँसुक थिम्हा बैसल छल । ओकर सिरखार तँ मनुक्खे सन छलैक, मुदा ओकर दुनू आँखि दूटा भूरमे धसल भगजोगनी सन भुकभुकाइत छलैक । नाकक थाह-पता नहि छल । ओहि स्थानपर दूटा भूर मात्र छल । उपरका ठोर पिचलाहा नाकसँ उपर उठल, निचला ठोर हाथीक ठोर जकाँ दाढ़ीसँ नीचाँ लटकैत । खुरपा सन-सन दाँत मुँहसँ बाहर निकलल छल । दुनू कान मालजालक कान सन एकहक बीतक नमरल-नमरल सन छल । छोट भुटिआयल आङुरबला हाथ देहक दुनू कात बेजान सन झुलैत । देह-दशा थुल-थुल, कोहा सन अलगल पेट आ तकर नीचाँ पातर-पातर काठी सन दूटा टाङ सिंहासनसँ नीचाँ, झुलैत । एहि विकराल आकृतिकेँ दासी सब पंखा हौँकि रहल छलैक ।

फुलकेसरिकुमरिक ई भयानक रूप देखि कऽ तँ राजकुमार अचम्भित ओ भयभीत रहि गेल । ओकर सबटा सपना ठामहि चूर-चूर भऽ गेलैक । ओ मोने-मोन सोचऽ लागल जे प्राय: एहने कुरूपासँ बियाह करबाक लेल ओकर रानीमाँ उकसा कऽ ओकरा दण्ड देलथिन अछि ।

राजकुमार समस्यामे पड़ि गेल जे आब ओ की करय आ की नहि करय ? एक मोन भेलैक जे ओ तुरन्ते राजाकेँ कहि दिअय जे ओ एहन कुरूपासँ बियाह नहि करत। फेर ओकरा भेलैक जे 'नहि' कहलापर तँ राजा ठामहिँ ओकरा बनिसारमे धऽ देतैक आ भरि जिनगी ओहीमे रहि कऽ मरि-खपि जाय पड़तैक। राजकुमारक लेल पाछाँ हटबाक बाट बन्द छलैक। आगाँ बढ़बाक बाट अन्हार छलैक। ओ ने नकारि सकैत छल, ने सकारि सकैत छल। ओ एकदम सकपञ्ज भऽ गेल छल।

अन्ततः ओ राजकुमारीक ई भयानक रूप देखियो कऽ ओकरासँ बियाह करब सकारि लेलक।

एकटा गमैया युवककेँ माँसुक थिम्हा सन भयभीत कऽ देबऽबाली राजकुमारीसँ विवाह करबाक लेल तैयार देखि केसरपुरक राजाकेँ आश्चर्यो भेलनि आ खुसियो भेलनि। एखन धरि कतोक देश-देशक राजकुमार सभ आ सुन्दर-सुन्दर युवक सभ आयल छल। मुदा सभ राजकुमारीक रूपकेँ देखिते नकारि देलक।

राजकुमारीक कुरूपताक खबरि बहरिया लोककेँ नहि होइक, तेँ राजाकेँ ओकरा सभकेँ बनिसार देबऽ पड़ल छलनि। ई पहिल युवक छल जे राजकुमारीक भयानक रूप देखलाक बादो विवाह करब स्वेच्छासँ गछि रहल छल। मुदा राजाक समस्या एहिसँ समाप्त नहि भऽ रहल छलनि। समस्या तँ एहिसँ आगाँ छल जे अत्यन्त कठिन छल।

राजा कामदेवसेन गम्भीर स्वरमे कहलथिन-युवक ! तोँ बियाहक लेल तैयार तँ भेलह अछि, मुदा हमर एकटा शर्त्त अछि। ओहि शर्त्तकेँ पूरा कयलाक बादे राजकुमारीसँ तोहर विवाह भऽ सकैत छह।'

राजकुमार अकचकाइत पुछलकनि- एहन कोन शर्त्त अछि अपनेक, महाराज ?'

राजा बजलाह-तोरा विवाहसँ पहिने 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' आनऽ पड़तह।'

'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी !' -राजकुमार तँ कहियो एकर नामो नहि सुनने छल। ओ आश्चर्यसँ राजा दिस तकैत बाजल- ई कतऽ भेटत हमरा ?'

राजा कहलथिन- कतऽ भेटतह से तँ हमरो नहि बूझल अछि ।'

राजकुमारी फुलकेसरिकुमरि राजा आ युवकक वार्ता ध्यानसँ सुनि रहलि छलि । ओकर शारीरिक स्थिति केहनो अविकसित-विरूप होउक परन्तु बुद्धिमे चेतन भऽ गेलि छलि । ओ देखैत आबि रहलि छलि जे कतेको सुन्दर-सुन्दर राजकुमार आ सुभग युवक सब केसरुपरक आधा राजक लोभमे अबैत रहलैक । परन्तु ओकरा सबकेँ कुरूपा पत्नीक संग प्राप्त आधा राजक सुखसँ बेसी आजीवन बनिसारेमे रहबाक दण्ड कम दुखदायक बुझयलैक । राजकुमारीकेँ एकर दुख तँ होइते रहैत छलैक किन्तु अपन मनोव्यथाकेँ प्रगटो ने कऽ पबैत छलि ।

आइ ओहि नव लोककेँ देखि सोचि रहलि छलि जे एकरो तँ वैह फल भेटतैक- जीवन भरिक बनिसार । परन्तु युवककेँ जखन राजकुमारीक संग विवाह करबाक लेल तैयार भेल देखलक तँ ओकरा घोर आश्चर्य भेलैक जे- एहनो भऽ सकैत छैक जे हमरासँ केओ बियाही करब गछत ? मोनमे आशा आ आनन्दक भाव जागि गेलैक । ओहि युवकक प्रति अपनत्व आ ममत्व उत्पन्न भऽ गेलैक ।

अपन पिताक मुँहसँ ई शर्त सुनि कऽ जे 'विवाहसँ पहिने हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी आनऽ पड़तह' सुनि ओकरा जे क्षणिक आनन्द भेटल छलैक से तूरक फाहा जकाँ उड़ि गेलैक । भेलैक जे युवक एहि शर्त्तकेँ अस्वीकार करत तँ बनिसार भोगत आ जँ स्वीकार करत तँ ओहि अन्हार, अगम्य आ अनन्त सुरंगमे ठेलि देल जयतैक । ओहीमे जा कऽ मरि-खपि जायत । जीबैत पलटि कऽ नहि आबि सकत । यैह सब सोचि कऽ राजकुमारीक दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर झहरऽ लगलैक । राजाक आदेशसँ दासी सब फेर कपड़कोट लगा देलक ।

राजकुमार चिन्तामे पड़ि गेल । मुदा फेर ओ मोनमे किछु सोचैत राजाकेँ कहलकनि-महाराज ! हमरा अपनेक शर्त्त मंजूर अछि । हम 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' आनि कऽ देब ।'

एकटा साधारण युवकक मुँहसँ एतेक पैघ बात सुनि कऽ तँ जेना राजाक आश्चर्य आ खुसीक ठेकाने नहि रहलनि । ओ राजकुमारकेँ

राजमहलक भीतर एकटा गुप्त अतिथिशालामे ठहरयबाक आदेश देलथिन । ओहि अतिथिशालामे केवल दासी मात्र जा सकैत छल जकरा महलक बाहरक लोकसँ कोनो सम्पर्क नहि छलैक । अतिथिशालामे जा कऽ राजकुमार शत्रुजीत मोने-मोन सोचऽ लागल जे ओ राजाक शर्त्त तँ मानि लेलक अछि । मुदा एकरा ओ पूरा कोना कऽ करत तकर तँ कोनो उपाये नहि सुझि रहल छलैक ?

20

राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिक कुरूपताक एकटा फराके खिस्सा छल ।

राजा कामदेवसेनकेँ कोनो सन्तान नहि होइत छलनि । ओ सदिखन चिन्तामे पड़ल रहैत छलाह । एक दिन कोनो सिद्ध महात्मा घुमैत-फिरैत हुनका ओहि ठाम पहुँचलथिन । राजा-रानी दुनू ओहि महात्माक खूब सेवा-सत्कार कयलथिन । एक दिन ओ महात्मा कामदेवसेनसँ पुछलथिन– राजा ! अहाँक मोन एना सदिखन दुखी किएक रहैत अछि ?'

महात्माजीक प्रश्नपर राजा मौन रहि गेलाह । मुदा रानीक आँखिसँ बसोधारा नोर बहऽ लगलनि । महात्माजीक पुनः पुछलापर राजा हुनका, एखन धरि अपना कोनो सन्तान नहि होयबाक गप्प कहलथिन । निराशा आ उदासी भरल स्वरमे महात्माजीकेँ अपन चिन्ता कहलथिन जे– हमरा बाद केसरपुर राज्यक उत्तराधिकारी के हयत ?'

महात्माजी राजा-रानीक व्यथा जानि गम्भीर भऽ गेलाह । थोड़ेक कालक बाद ध्यान लगा लेलनि । गोटेक पहरक बाद ध्यान टुटलापर ओ राजा-रानीकेँ वरदान देलथिन जे– राजा ! अहाँकेँ सन्तान अवश्य होयत । पहिल सन्तान बेटी होयत, मुदा....।'

–मुदा की ?' राजा-रानी दुनू हर्ष आ आशंकाक संग महात्माजीसँ पुछलथिन ।

–मुदा ओ बेटी मनुष्यक आकारमे माँसुक थिम्हा जकाँ होयत ।' महात्माजी कहलथिन ।

राजा-रानी, महात्माजीक एहन वरदान सुनि दुखी भऽ उठलाह । रानी कनैत-कलपैत कहलथिन-ई लोथ-मोट सन्तान, ताहूमे बेटी । जीवन भरिक

ओहि सन्तापक हम कोना निमेरा करबनि ?'

दुनू गोटा महात्माजीक पैर पकड़ि कनैत कहलथिन– हे महात्माजी ! अहाँ अपन वरदान आपस लऽ लियऽ । हम एहन सन्तानसँ बरु निःसन्ताने रहब ।'

महात्माजी राजा–रानीकेँ धैर्य बन्हबैत कहलथिन–हमरा तँ जे वरदान देबाक छल, से तँ दऽ देलहुँ । आब ई किन्नहुँ निष्फल नहि भऽ सकैत अछि । तखन एकर एकटा निवारण अवश्य अछि जे जहिया केओ ओहि लोथ सन्तानकेँ 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' आनि कऽ खोऔतै, तहिया ओकर रूप सामान्यो लोकसँ बढ़ि कऽ दिव्य भऽ जेतै ।'

एतेक कहि ओ महात्माजी उठि खड़ा भेलाह आ चल गेलाह ।

समय भेलापर माँसुक थिम्हाक रूपमे फुलकेसरिकुमरिक जन्म भेल। मुदा राजा अपन एहि पहिल सन्तानक कुरूपताक ककरो खबरि नहि होअऽ देलथिन । राजमहलसँ बाहरक लोककेँ फुलकेसरिकुमरिक सम्बन्धमे किछु नहि बूझल छलैक । राजकुमारीक विवाह योग्य भेलापर राजा सौँसे ढोलहो दिया देलथिन आ तकर बादसँ ओ तेहन साहसी व्यक्तिक खोज करऽ लगलाह जे हुनका 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' आनि कऽ दऽ सकनि ।

21

अतिथिशालामे राजकुमारकेँ भरि राति एको बेर निन्न नहि पड़लैक । घरसँ जहिया ओ टिरुसि कऽ बहार भेल छल, तकर बादसँ ओकरा पहिल दिन एतेक स्वादिष्ट भोजन आ गदगर ओछाओन भेटल छलैक । मुदा एको कओर खाइत ओकरा नीक नहि लगलैक आ ने मोलायम ओछाओने एको रत्ती सोहयलैक । ओ भरि राति यैह सोचैत रहल जे ओ राजाक शर्त्त तँ मानि लेलक अछि । मुदा ई हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी ओ कतऽसँ आनि कऽ देतैक जकरा सम्बन्धमे ओकरा किछु बुझले ने छैक !

भोर भेलापर राजा दिससँ ओकरा तलब भेलैक । राजा पुछलथिन– की युवक ! तोरा शर्त्त नीक जकाँ मोन छह कि ने ?'

–जी महाराज ! हमरा मोने नहि अछि, हम जे घड़ी ने ओहि काज लय निकललहुँ । मुदा जायसँ पहिने हमर एकटा अर्जी अछि ।' राजकुमार बाजल ।

राजा पुछलथिन–की छह तोहर अर्जी ? निःसंकोच भऽ कऽ कहह।'

राजकुमारकेँ मोन पड़ि गेलैक बुढ़िया मौसी जे ओकरा आबऽ कालमे कहने रहैक जे– बौआ ! जखन कखनो जरूरति पड़ौक तँ एहि बुढ़िया मौसीकेँ मोन पाड़ि लिहेँ।' राजकुमार राजाकेँ कहलकनि जे– महाराज ! एहि नगरक बाहर एकटा खोपड़ीमे एकटा बुढ़िया रहैत अछि। ओ हमर मौसी होयति। जायसँ पहिने ओकरा बजा कऽ हमरा एक बेर भेट करा दियऽ।'

राजा युवकक बात मानि लेलथिन। तुरन्ते राजक सिपाही सभ दौड़ल आ बुढ़ियाकेँ बजौने चल अबैत रहल।

बुढ़ियाकेँ देखिते राजकुमार ओकरा कहलकैक– गय मौसी ! हम जाइ छियौ हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी आनऽ लय। ई चीज कतऽ भेटै छै से हमरा किछु नहि बुझल अछि। की होयत–नहि होयत, सेहो नहि जनै छी। फेर तोरा देखबौ, की नहि देखबौ, तेँ आखरी बेर भेट कऽ लै छियौ।'

राजकुमारक गप्प सुनि कऽ बुढ़ियाक आँखि नोरा गेलैक। ओ दुलारसँ राजकुमारक दुनू गाल छुबैत बाजलि–बौआ रे ! जहिया हम बच्चा रही तहिया हमरा हमर माय ककरोसँ सूनल एकटा खिस्सा कहने छलि जे सात नदी, सात जंगल आ सात पहाड़ पार कयलाक बाद समुद्रक बीचमे एकटा 'अगम दीयर' छै। ओही दीयरपर पान आ सुपारीक जंगल छै। ओही जंगलमे 'हँसनी पान आ बजन्ता' सुपारीक कोनो लत्ती आ गाछ छै।'

राजकुमारकेँ ओहि बुढ़ियासँ 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी'क किछु थाह–पता भेटि गेलैक। ओ बुढ़ियाक पैर छुबैत बाजल– मौसी ! आब आशीर्वाद दऽ कऽ हमरा विदा कर जे हम सफल भऽ कऽ आबी।'

बुढ़िया, राजकुमारकेँ माथ ठोकि आशीर्वाद दैत फेर ओहि अँकटा–मिसियाबला चमत्कारी रोटीक गुण मोन पाड़ि देलकैक।

बुढ़ियाक गेलाक बाद राजकुमार राजाकेँ कहलकनि– आब हम अपन अभियानपर निकलब। तेँ राजमहलसँ बहार होयबाक बाट तँ देखा दियऽ।'

राजा कहलथिन– मुख्य द्वारसँ तँ तोँ बहार नहि भऽ सकै छह। एहिसँ फराक दूटा गुप्त सुरंग अछि। एकटा सुरंगक मुँह बनिसारमे जा कऽ

फुजै छै आ दोसर सुरंग एहन अछि जकर मुँह कतेको कोस दूर नदीक कछेड़मे जंगलमे जा कऽ फुजै छै । तोरा एहि दोसर सुरंग दऽ कऽ जाय पड़तह ।'

राजकुमार बाजल- महाराज ! हमरा ई दोसर सुंरग देखा दियऽ ।'

राजा अपनेसँ जा कऽ ओहि दोसर गुप्त सुरंगक दरबज्जा खोलि देलथिन । राजकुमार ओहि घुप्प अन्हार सुरंगमे उतरि गेल ।

22

सुरंग तेहन काजर सन कारी छल जे हाथ-हाथ नहि सुझाइत छल । राजकुमार टोइया-टापर दैत नाकक सोझे बढ़ैत रहल । कतेक दिन धरि ओ चलैत रहल से ओकरा कोनो ठेकान नहि रहलैक । अन्तमे ओकरा किछु झोलफल सन इजोत बुझि पड़लैक । ओहि दिशामे बढ़लापर आखिरमे ओ सुरंगक मुँहपर पहुँचल जे जंगलक बीच एकटा नदीक कछेड़मे फुजैत छलैक ।

राजकुमार शत्रुजीत सुरंगसँ बहार भऽ कऽ देखलक तँ एकटा बेस चौड़ा पाटबला नदी बहि रहल छलैक । ओ नदीक किनारमे बैसि कऽ सोचऽ लागल जे एहि नदीक सीरा दिस गेल जाय कि भाठा दिस । हठात् ओकरा बुढ़ियाक बात मोन पड़ि गेलैक-सात नदी । राजकुमार विचारलक जे-दहिना जाइ आ कि बामा, कतहु ने कतहु तँ ओकरा नदी पार करैए पड़तैक । किएक ने एही ठाम ओ नदी पार कऽ लेअय । मुदा नदी छलैक खूब चाकर आ अथाह । तेहने छलैक ओकर पानिक वेग । हेलि कऽ तँ ई नदी नहिएटा पार कयल जाय सकैत छलैक । राजकुमारकेँ तत्काल किछु फुरा नहि रहल छलैक जे ओ की करय ?

एतबेमे राजकुमार देखलक जे गोहि सभक एकटा बड़का झुण्ड आबि कऽ एहि पारसँ ओहि पार धरि नदीमे कलबल-कलबल करऽ लगलैक । राजकुमारकेँ बुढ़ियाक चमत्कारी रोटी मोन पड़ि गेलैक । ओ डाँड़सँ रोटी निकालि ओकर एक टुकड़ीकेँ तरहत्थीपर राखि छोट-छोट गोली बनाय ओकरा गोहि सभ दिस फेकऽ लागल । गोहि सभ ओहि गोलीकेँ लप-लप कऽ खाइत देरी अचेत भऽ पानिपर दहाय लागल । राजकुमार फुर्त्तीसँ अचेत गोहि सभक पीठपर पैर राखि-राखि फनैत-कुदकैत धारक ओहि पार पहुँचि गेल ।

चलैत-चलैत फेर ओकरा दोसर नदी भेटलैक । ओहू ठाम प्रश्न ठाढ़ भेलैक जे एकरा कोना पार कयल जाय ? ओ नदीक किनारमे बैसि कऽ सोचैत रहय कि तावत देखलक जे बहुत रास हाथीक झुण्ड जंगल दिससँ आबि कऽ नदीमे हेलि कऽ नहाय लागल । हाथीक संख्या ततेक छलैक जे नदीक पाट एहि कातसँ ओहि कात धरि छेका गेलैक । राजकुमार शत्रुजीत तुरन्त हाथीक पीठपर दऽ फनैत एहि पारसँ ओहि पार चल गेल ।

फेर एहि ठामसँ आगू बढ़ल तँ तेसर नदी भेटलैक । शत्रुजीत एकरा पार करबाक जोगाड़ ताकऽ लागल तँ थोड़े दूरपर ओकरा नदीमे भासि कऽ आयल बहुतो मोट-मोट गाछ सभ अड़का लागल देखयलैक । राजकुमार ओही गाछ सबपर पैर दैत ओकर ठाढ़ि सब पकड़ि-पकड़ि आगू बढ़ैत नदी पार कऽ गेल ।

ओतऽसँ आगू बढ़ल तँ चारिम नदी भेटलैक । एहि नदीमे पानि कम छलैक आ बीच-बीचमे दीयर सब ऊगल छलैक । राजकुमार थोड़े दूर हेलि कऽ फेर दीयरपर पैदल चलि कऽ एकरो कोनहुना पार कयलक ।

पाँचम नदी लग पहुँचल तँ ओ नदी लीढ़सँ तेना ने भरल छलैक जे पानि कतहु देखाइते नहि छलैक । राजकुमार ओहि लीढ़पर पैर दऽ बड़ा सावधानीसँ चलैत एकरो पार कयलक ।

छठम नदी लग पहुँचल तँ बड़ी काल धरि ओकरा पार करबाक उपाय तकैत रहल, मुदा किछु भेटलैक नहि । नदी बड़ चौड़गर छलैक । राजकुमार नदीक सीरा दिस विदा भेल । जाइत-जाइत एक ठाम देखलक जे ओतऽ नदीक पाट बड़ कम छलैक । मुदा राजकुमारकेँ कोनो युक्ति नहि लागि रहल छलैक जे एकरा कोना पार कयल जाय । पाट कम चौड़ा छलैक अवश्य, मुदा ओतऽ पानिक वेग ततेक ने बेसी छलैक जे हेलि कऽ पार करब असम्भव छलैक । हठात् राजकुमारक नजरि थोड़े दूरपर नदीक कछेड़मे स्थित बाँसक एकटा सघन बीटपर गेलैक । ओ ओहि बीट लग जाय ओहि महक एकटा बिटछुट्टू बाँस जे नदी दिस टगल छलैक तकरा टेबि ओहिपर ओरिया कऽ चढ़ि गेल । छीप लग पहुँचलाक बाद बाँस पकड़ि कऽ लटकि गेल । बाँस लीबि कऽ नदीक दोसर कछेड़पर पहुँचि गेलैक आ

राजकुमार बड़ा सम्हरि कऽ जमीनपर पैर रोपि देलक । बाँस फेरो उछटि कऽ अपना स्थानपर चल गेलैक । फेर एहि ठामसँ नदीक भाठा दिस चलि कऽ ओ ओतहि पहुँचि गेल जतऽसँ नदीक ओहि पारमे सीरा दिस बढ़ल छल ।

पुनः नाकक सोझे बढ़ैत-बढ़ैत राजकुमार सातम नदी लग पहुँचल । ई नदी उत्थर सन छलैक । पानियो बड़ कमे सन बुझयलैक । राजकुमार डाँड़सँ गमछा फोलि माथमे बान्हि लेलक आ नदीमे पैसल । कतहु थाहैत तँ कतहुँ हेलैत कोनहुँना एहू नदीकेँ पार कयलक ।

सातो नदी पार कयलाक बाद राजकुमारक देह थाकनिसँ चूर-चूर भऽ गेलैक । ओ एक ठाम सब्जीपर बैसि कने सुस्ताय लागल । कपड़ा सब भीजि गेल छलैक । भूख-पियास से फराके लागल छलैक । राजकुमारकेँ बुढ़ियाक देल ओ चमत्कारी रोटी मोन पड़लैक । ओ गमछामे भिड़िया कऽ राखल रोटीक एक टुकड़ी तोड़ि कऽ जहाँ खयलक कि ओकर भूख-पियास सब टा क्षण भरिमे मेटा गेलैक । देहमे पुनः पहिलुका स्फूर्त्ति आबि गेलैक । राजकुमारकेँ आब पूरा विश्वास भऽ गेलैक जे सात नदी होइत ठीके हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी धरि पहुँचबाक रस्ता छैक ।

राजकुमार रातिमे बुढ़ियाक कहल अनुसार एकटा गाछपर चढ़ि विश्राम कयलक ।

23

शत्रुजीतकेँ आब सातटा जंगल पार करबाक छलैक ।

सबसँ पहिने भेटलैक ओकरा सखुआक जंगल । एहन बीहड़ जंगल ओ कहियो नहि देखने छल । मेघ छुबैत अजोध-अजोध सखुआक गाछ सब । गाछक ठाढ़ि-पात सभ तेहन कऽ सघन छलैक जे एक रत्ती सूर्यक इजोत ओकर भीतर नहि प्रवेश कऽ रहल छलैक । ओहि अन्हार जंगलमे बड़ा बचा-बचा कऽ राजकुमार आगू बढ़ऽ लागल कि ओकरा किछु गरजबाक अबाज तखने कानमे पड़लैक । राजकुमार चौचंक भऽ कऽ चारू दिस ताकऽ लागल । अपनासँ किछु हाथक दूरीपर ओकरा आगिक चिनगी सन दूटा लाल-लाल बरैत कोनो वस्तु देखि पड़लैक । आँखिक चकचोन्ही

जखन कम भेलैक तखन ओकरा बुझयलैक जे कोनो भयानक सिंह ओकरापर झपट्टा मारबाक लेल लैयार छैक ।

राजकुमार सहचेत होइत एकटा गाछक अऽढ़मे ठाढ़ भऽ गेल आ स्वतः ओकर हाथ अपन मेयानपर चल गेलैक । मुदा हाय रे दुर्भाग्य ! तरुआरि लऽ कऽ तँ ओ चलले नहि छल । आब राजकुमार असमंजसमे पड़ि गेल जे कोना एहि सिंहसँ ओ अपन रक्षा करय ! ओकर समस्त शरीर घामसँ तर-बतर भऽ उठलैक ।

सिंह आब शत्रुजीतपर जे घड़ी ने झपट्टा मारितैक कि तखने बुढ़ियाक देल ओहि चमत्कारी रोटीक एक टुकड़ी फुर्त्तीसँ खोँटि कऽ सिंह दिस फेकि देलक । सिंह हवेमे ओहि रोटीकेँ मुँहसँ टप दऽ लोकि खा गेल। कण्ठक भीतर रोटी पहुँचिते देरी ओ सिंह पोसुआ कुकुर जकाँ अपन नाङड़ि डोलबऽ लागल । राजकुमार फक दऽ निसाँस छोड़ैत आगाँ बढ़ि चलल ।

ओहि सखुआक वनमे अगबे बाघ-सिंह सन हिंसक पशुक बसेरा छलैक । मुदा चमत्कारी रोटीक बलेँ राजकुमार बिना कोनो कुशक कलेपक सखुआ वनकेँ पार कऽ गेल ।

दोसर वनमे देवदारक गाछ सब छलैक । एहि वनमे सौंसे भालुए भालु छलैक । तेसर वन काँट-झंखाड़क छलैक । वनमे जहिना बैर, बबूर सन भाँति-भाँतिक कँटैया जातिक गाछ सब छलैक तहिना जहाँ-तहाँ राजकुमारकेँ अगबे हुराड़-सियार देखबामे अयलैक ।

चारिम वनमे अगबे बाँस छलैक । सटले-सटल कतेक कोस धरि बाँसक सघन बीट सभ पसरल छल । वनमे बाँसक सुखायल पात सब सेजओट जकाँ ओछायल छल । मच्छड़ आ रंग-विरंगक कीड़ा-मकोड़ा सब सह-सह करैत । कोम्हरो सनगोहि, तँ कोम्हरो फखसियार, छुछुन्नरि, गीदड़, नढ़िया सब हुलहुल करैत । बाँसक ओ वन बड़ भयाओन छल, मुदा शत्रुजीत कोनहुना ओकरो पार कऽ गेल ।

बाँस-वन पार कऽ कऽ राजकुमार जाहि पाँचम वनमे पहुँचल, ओ छल सिमरवनी । बड़का भारी-भारी सिम्मरक गाछ सब । चारू दिस सिम्मरक रुइ सब उधिआइत । ओहि वनमे सुगा, मैना, बगड़ा, चुहचुहिया, कोइली, महोखा-जानि

नहि, कतेक रंग-बिरंगक विभिन्न आकारक, विभिन्न जातिक चिड़ै-चुनमुनी सब चहचहाइत छल । कतेक कोसमे ई वन पसरल छल तकर एत्ता नहि ।

सिमरवनी पार कयलाक बाद शत्रुजीत जखन छठम वनमे पैर देलक तँ एकटा अद्भुत प्रकारक सुगन्ध ओकर दुनू नाकमे जाय लगलैक, ओहिसँ जेना ओकर सबटा थाकनि आ चिन्ता मेटाय लगलैक । राजकुमार किछु कालक लेल तँ जेना अपन सुधि-बुधि बिसरि गेल ।

ओकर ध्यान तखन भंग भेलैक जखन ओकरा कानमे बड़ी जोरक फुफकारक अबाज पड़लैक । देखैत अछि तँ सामने एकटा जुआयल कारी नाग फेंच काढ़ने ओकरापर झपट्टा मारबा लय तैयार । राजकुमार सहमि कऽ थकमका गेल । ओ फुर्त्तीसँ चमत्कारी रोटीक एक टुकड़ी तोड़ि कऽ नागक फनपर टिका कऽ फेकलक । रोटीक स्पर्श होइत देरी ओ नाग फट दऽ अपन मूड़ी खसा लेलक आ नितुआन भऽ गेल ।

ई चाननक वन छल ।

राजकुमार ओतऽसँ आगाँ बढ़ल तँ देखैत अछि जे चाननक गाछ सबपर भाँति-भाँतिक विषधर सब झुलैत । चाननक डारिसँ लेपटायल साप सब कखनो धब दऽ खसि सकैत छलैक । शत्रुजीत एक बेर गाछक डारिमे लटकल झुलैत सापकेँ देखय आ ओकर खसबाक सम्भावनाबला स्थानसँ दबि कऽ बढ़ि जाय । ओ चाननक वनकेँ दिन देखार पार कऽ लियऽ चाहैत छल । राति भऽ गेलापर कतहु विश्राम करब निरापद नहि होइतैक । तेँ ओ एक बेर उपरमे लटकल सापकेँ देखय आ दौड़ि कऽ आगाँ बढ़ि जाय । एहिना दौड़ैत-रुकैत, दौड़ैत-रुकैत लुकझुक बेरमे वनकेँ पार कऽ गेल ।

आगाँ एकटा छोट सन झील देखलक । ओकर भीड़ पर झमटगर बड़क गाछ छलैक । ओहि तरमे जंगल-झाड़ नहि छलैक । शत्रुजित ओतऽ बैसि कऽ थोड़ेक काल सुस्ताइत रहल । फेर झीलक किनारमे जाय हाथ-मुह धोयलक । पानि पिउलक । ऊपर आबि बड़का गाछक एकटा दोकन पर चढ़ि विश्राम करैत राति बितौलक ।

राजकुमार रंग-विरंगक हिंसक ओ विषधर जन्तु-जानवर सबसँ भरल कोनहुँना छओटा जंगल पार कऽ गेल ।

सातम जंगल रंग–विरंगक फूले सभक छलैक। ई पुष्पवन छल। चम्पा, चमेली, कचनार, केओला, कनैल, भालसरी, तग्गर, ओढ़ूल, वसन्त, गुलाब, जानि नहि कते प्रकारक फूलक गाछ सब ओहि वनमे छल। जहिना ओहि सबमे रंग–विरंगक फूल सब फुलायल, तहिना सभक फराक–फराक सुगन्ध छल। ओहि वनमे अगबे तितली, भौंरा आ मधुमाछी फूल सबपर लुधकैत, भनभन करैत छल। ओहि जंगलमे पहुँचलापर राजकुमारकेँ कनेक सुस्तयबाक मोन भेलैक। एहि जंगलक सुन्दरता ओ अद्भुत सुगन्धि ओकर मोनकेँ जेना मोहि लेलकैक। एकटा रमणीक जगह ताकि ओ सुस्ताइ लेल बैसल कि ओकर आँखि लागि गेलैक। कनेके काल तँ बीतल छल की ओ अचानक चेहा कऽ उठल।

ओकरा बुझि पड़लैक जेना निसाँसँ ओ मातल जा रहल अछि। ओकर देह तलमलाय लगलैक। पैर लटपटाय लगलैक। बुझि पड़लैक जेना ओ अचेत भऽ कऽ खसि पड़त। एहि सातम वनकेँ ओ नहि पार कऽ सकत। ओ सचेत भऽ गेल जे इहो एहि बाटक पैघ बाधा थिक। ओ एकाएक जी–जान लगा कऽ बेछोहे दौड़ऽ लागल। बड़ी काल धरि दौड़िते रहल। दौड़िते–दौड़िते एकबेर ओ पाछाँ घुमि कऽ तकलक तँ देखलक जे पुष्पवन बहुत पाछाँ छुटि गेल छलैक।

राजकुमार दम धरबाक लेल ओही ठाम थुसकुनियाँ मारि कऽ बैसि रहल आ सोचऽ लागल जे आइ जँ समयपर ओ सचेत नहि होइतय आ ओही पुष्पवनमे अचेत भेल पड़ल रहि जैतय तँ ओकर सब परिश्रम पानिमे चल जैतैक। ओ निश्चय कयलक जे आगाँ ओ कोनो मनमोहक दृश्य वा परिस्थिति भेटलापर मोहित नहि होयत। अपनापर कठोर नियन्त्रण राखत।

24

अथाह नदी ओ दुर्गम वन सभक असाध्य यात्रा राजकुमार पूरा कऽ चुकल छल। आब ओकरा सातटा पहाड़केँ पार करबाक छलैक। एतऽसँ आगू बढ़ल तँ पहाड़ सभ भेटऽ लगलैक। इहो पहाड़ सब विचित्र–विचित्र रंगक छल।

सभसँ पहिने भेटलैक– दुधिया पहाड़। मेघकेँ छुबैत दूरेसँ ई पहाड़ दूध सन उज्जर–सपेत देखबामे अयलैक। एहिपर जनमल गाछ–वृक्ष, जंगल–झाड़ सब उजरे–उज्जर। राजकुमार थाहि–थाहि कऽ पहाड़क चढ़ाइपर चढ़ैत चल

गेल आ ढलानपर उतरऽ कालमे दौड़ि कऽ उतरल । नीचाँ जखन उतरल तँ देखैत अछि जे ओकर देह, माथ, कपड़ा-लत्ता सबपर उज्जर-उज्जर किछु वस्तु सब जमा भऽ गेल छैक । कतबो झाड़लक, मुदा नीक जकाँ ओ उजरा वस्तु नहि झड़ि सकलैक ।

दोसर पहाड़ जे ओहिसँ आगाँ भेटलैक से दूरेसँ चानी जकाँ चमचम करैत । ई छल– रूपा पहाड़ । एहि पहाड़कें राजकुमार बड़ कठिनतासँ पार कयलक आ चानीक मुरुत बनि कऽ उतरल ।

एतऽसँ आगू बढ़ल तँ तेसर पहाड़ भेटलैक । ई छल– सोना पहाड़ । दूरेसँ सोना जकाँ तेना चमकैत छलैक जे राजकुमारक आँखि चोन्हिआय लगलैक । सोझे आँखिएँ ताकि कऽ एहि पहाड़पर चढ़ब कठिन छलैक । राजकुमार बामा हाथसँ आँखिकें अऽढ़ करैत पहाड़पर चढ़ल । एहि पहाड़ परक सभ गाछ-बिरिछ, जीव-जन्तु सोनहुल रंगक छलैक । पहाड़सँ उतरैत-उतरैत राजकुमारक अपन सरूप तेहन भऽ गेलैक जेना ओ सोनाक कोनो जीबैत मुरुत होअय ।

चारिम पहाड़क रंग कहकह-पीयर छल । ई छल पीत-पहाड़ । ओहि पहाड़ परक गाछ-बिरिछ, जीव-जन्तु सभ देखैत पीरे-पीरे । पाँचम पहाड़क रंग कुण्डाबोर लाल । छठम पहाड़क रंग एकवर्ण नील । सातम पहाड़ छल– काला पहाड़ । एहि पहाड़कें पार करैत-करैत राजकुमारक रंग कारी-खुंझा भऽ गेलैक । कारी खटखट भूत सनक अपन देह-हाथ देखि कऽ राजकुमारकें जेना अपनो भय भऽ गेलैक ।

कतेको सप्ताहमे सात पहाड़क सतरंगी यात्रा पूरा कयलाक बाद राजकुमारकें भेटलैक समुद्र । दस-दस हाथ ऊँच लहरि उठैत समुद्र । जतऽ धरि राजकुमारकें देखयलैक तँ खाली पानिये-पानि छलैक । एहि अगाध समुद्रकें पार करबासँ पहिने राजकुमार सोचलक जे कने नहा-सोना ली, जाहिसँ देहपर पड़ल सात पहाड़क रंग धोआ जाय । राजकुमार समुद्रक कछेड़मे पानिमे डुब्बी दऽ दऽ कऽ, देह-हाथकें मलि-मलि कऽ नहायल । देहसँ मारते घोर-मट्ठा सन गादि निकललैक । मुदा नहयलाक बाद राजकुमारक शरीरक रंग विचित्रे तरहक भऽ गेलैक– उज्जर, सोनहुल,

चानीक चकमकी, पीयर, नील, लाल आ कारी रंग मिलि कऽ एकटा नवे चितकाबर रंग ।

स्नान कयलाक बाद राजकुमार समुद्र कोना पार करत ताहि सोचमे पड़ि गेल, किएक तँ समुद्रे पार कऽ कऽ 'अगम द्वीप' पर पहुँचल जा सकैत छल जतऽ पान आ सुपारीक वन छलैक ।

ओ समुद्रक किनारमे घूमि-घूमि कऽ देखऽ लागल । एक ठाम बालुमे गड़ल एकटा नाव ओकरा देखाइ पड़लैक । ओ अपन हाथसँ नावक चारू कात भरल बालुकेँ हटबऽ लागल । बालु हटौलाक बाद नावकेँ घीचि कऽ बहार कयलक आ घिसिया कऽ समुद्रक पानि धरि लऽ गेल ।

25

समुद्रक पानिमे जखन नाव हेलऽ लगलैक तँ ओ नावपर चढ़ि गेल आ नाव खेबऽ लागल । समुद्रमे उठैत लहरिसँ नावकेँ बचबैत, भाँति-भाँतिक भयंकर समुद्री जीवसँ बचैत, कतेक दिन-कतेक राति धरि एक सूरमे नाव खेबैत राजकुमार अन्ततः समुद्र पार कऽ कऽ 'अगम-द्वीप'पर पहुँचल । ओहि ठाम एकटा गाछ लगा कऽ जंगली लत्तीसँ नावकेँ बान्हि देलक जे आपस होयबा कालमे ओ फेर काज दितैक ।

'अगम-द्वीप' पर पहुँचलाक बाद राजकुमारकेँ एको डेग आगू बढ़बाक मोन नहि करैत छलैक । गत्र-गत्र दुखा रहल छलैक । समुद्री बसातसँ औँघी लागऽ लगलैक । सूर्य सेहो पश्चिम दिशामे अस्त होबऽ जा रहल छलैक । ओ एकटा मोटगर गाछक जड़िमे ओठङि कऽ बैसि गेल । ठामहि ओकरा गाढ़ निन्न भऽ गेलैक । सुतल-सुतल भिनसर भऽ गेलैक । ओ धड़फड़ा कऽ उठि गेल । ओकरा बड़जोर भूख सेहो लागि गेल छलैक । मुदा खैतय की ? बुढ़ियाक देल रोटी खोंटि-खोंटि कऽ खाइत-खाइत सधि गेल छलैक ।

राजकुमार एमहर-ओम्हर नजरि खिरौलक । थोड़ेक दूर हटि कऽ पथलचूरक गाछ सन छोट-छोट अत्यन्त हरियर आ गुदगर पातबला गाछ सब छलैक । ओ गाछक किछु पात तोड़ि अनलक ओकरे चिबाबऽ लागल । भरि पेट पात चिबा लेलक । ओकरा बड़ आश्चर्य भेलैक जे पात खयलासँ ओकर

भूखेक शान्ति नहि, प्रत्युत देहक सब थाकनियो दूर भऽ गेलैक । देह फुरतीसँ भरि गेलैक । ओ ओहि गाछक थोड़ेक पात तोड़ि कऽ अपन गमछामे बान्हि कऽ राखि लेलक जे भूख लगलापर एकरा खा लेल करब ।

राजकुमारक आब सबसँ पैघ चिन्ता छलैक ओहि पान-सुपारीबला वनक पता लगयबाक ।

राजकुमार किछु काल धरि बौखैत रहल । ओ एहि सुनसान दीयरपर आगाँ बढ़ैत गेल कि ओकरा दूरेसँ देखबामे अयलैक पान आ सुपारीक बड़का टा वन । ओकर खुसीक ठेकान नहि रहलैक । भेलैक जे आब तँ 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' ओकरा भेटिये गेलैक ।

राजकुमार दौड़ैत-हकमैत वन लग पहुँचल । वनमे हरियर-कचोर पानक लत्ती सब लतरल-पसरल छलैक, तँ दोसर दिस सुपारीक असंख्य गाछमे घुघरू जकाँ लटकल हरियर-पीयर सुपारीक घौर सब छल । ई वन अग्गहसँ बिग्गह पसरल छल । राजकुमारकेँ तँ से देखि कऽ सबटा खुसी बिला गेलैक । एहि विशाल ओ दुर्गम वनमे 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' कोन छलैक से पता लगायब असम्भव छलैक ।

राजकुमार ओहि वनमे बौआय लागल । कतहु कोनो थाह-पता नहि लगलैक । साँझ पड़ि गेलैक तखन ओ वनसँ बहार भऽ गेल । ओहि वनसँ सटले एकटा बड़का पीपरक गाछ छलैक । राजकुमार ओहि गाछक धोधरिमे जा कऽ पड़ि रहल ।

दोसर दिन ओहि धोधरिसँ निकलि कऽ राजकुमार पान आ सुपारीक वनमे घूमि-घूमि कऽ थाहैत रहल । कोन लत्ती 'हँसनी पान'क छैक आ कोन गाछ 'बजन्ता सुपारी'क छैक, से कोना चीन्हल जाय ? सब गाछ तँ देखैत एके रंगक छलैक ।

एहिना राजकुमार भरि दिन वनमे घूमय आ राति होइते पीपरक धोधरिमे जा कऽ सूति रहय ।

26

'अगम-द्वीप' परक ओ पुरान-झमटगर पीपरक गाछ, कोनो साधारण

गाछ नहि छल । ओहि पीपरक गाछपर राति कऽ विधि-विधाता सौंसे संसारक चऽर-चित लेबासँ पहिने आ चरऽ-चित लेलाक बाद, उड़ि कऽ आबि कऽ बैसैत छलाह । भरि राति दुनू संसारक लोक सभक भूत, भविष्य आ वर्त्तमानक सम्बन्धमे अनेक प्रकारक गप्प करैत छलाह आ भोर होइते उड़ि कऽ अपन पाट चल जाइत छलाह ।

विधि कय दिनसँ ओहि पीपरक धोधरिमे एकटा चितकाबर वर्णक युवकके̐ सूतल देखैत छलथिन । एहि 'अगम-द्वीप' पर कोनो प्राणीके̐ देखि हुनका आश्चर्यो भेलनि आ मोनमे खोदबेद सेहो जागि गेलनि ।

अगिला दिन विधि जारनि-बिछनी वनवासिनी स्त्रीक रूप धारण कऽ कऽ ओहि पीपरक गाछ तरमे पहुँचलीह । वनवासी स्त्रीक रूपमे विधि, शत्रुजीतके̐ पुछलथिन-युवक ! तों̐ के थिकह ? एहि निर्जन वनमे कोना अयलह आ किए अयलह ?'

राजकुमार ओहि वनवासिनी स्त्रीके̐ अपन सभ वृत्तान्त कहि सुनौलकनि । विधिके̐ राजकुमारपर दया आबि गेलनि।

वनवासिनी बनलि विधि राजकुमारके̐ कहलथिन-युवक ! ई स्थान कोनो साधारण स्थान नहि थिकै । एतऽ जे किछु होइ छै से रातिये कऽ होइ छै । तों̐ जँ एना दिन कऽ बौअयबह आ राति कऽ निसभेर भऽ सुतबह तँ तोरा अपन वस्तु कहियो नहि भेटि सकतह ।'

ओहि वनवासिनीक गेलाक बाद राजकुमार शत्रुजीत मोने मोन विचारलक जे आबसँ भरि दिन ओ एहि धोधरिमे सूतत आ रातिमे जागल करत ।

साँझ पड़लैक । फेर राति भेलैक । राति अन्हरिया छलैक । बिचली रातिमे विधि-विधाता सौंसे संसारक खोज-खबरि लऽ कऽ ओहि पीपरक गाछपर आबि कऽ बैसलाह आ अपनामे गप्प-सप्प करऽ लगलाह ।

विधि पुछलथिन विधातासँ- अएँ अओ विधाता ! एतऽ ई एतेटा पान आ सुपारीक वन किए छै ? एहि वनक ने केओ पान खाइ छै आ ने सुपारिये खाइ छै ? तखन ई कथी लेल छै ?'

विधाता कहलथिन-ने ई स्थाने साधारण छै, आ ने ई पान-सुपारीक वने कोनो सामान्य वन छै ।'

विधि कहलथिन–एहि स्थानक आ एहि पान–सुपारीक वनक कोन एहन विशेषता छै, से तँ कहूँ ।'

विधाता कहलथिन–ई देवभूमि थिकै । इन्द्रक कहलापर देवता सभक वैद्य एतऽ आबि कऽ पान आ सुपारीक ई जंगल लगौलथिन ।'

–मुदा एहि जंगलक कोन काज जखन ई पान–सुपारी ककरो काजे नहि अबै छै ।' विधि कहलथिन ।

एहिपर विधाता कहलथिन जे– एकर बड़ पैघ खिस्सा छै ।'

विधि खौँझाइत कहलथिन– एते जे पिहानी तखनसँ बुझा रहल छी, से कहबो तँ करू जे एकर कोन एहन खिस्सा छै ?'

विधाता कहऽ लगलथिन ।

'एक बेर स्वर्गलोकक किछु देवता सभ बूढ़ होअऽ लगलाह । इन्द्रकेँ बड़ चिन्ता भऽ गेलनि । ओ देवता सभक वैद्यकेँ बजौलथिन आ कहलथिन जे– अपने कोनो एहन उपाय करू जाहिसँ बूढ़ होइत देवता सभ फेरसँ युवा भऽ जाथि ।'

'वैद्यराज हुनका सभ लेल पान आ सुपारीक रूपमे औषधिक गाछ बनौलथिन । ओकरा सात नदी, सात जंगल आ सात पहाड़क बाद समुद्रक बीचमे स्थित एहि 'अगम–द्वीप' पर आबि कऽ रोपि देलथिन जे कोनो मनुक्ख ने एतऽ पहुँचि जाय ।'

–एँ अओ विधाता ! पान–सुपारीक ई सौंसे जंगल औषधियेक जंगल छै ?' विधि पुछलथिन ।

–नहि नहि । देवता सबकेँ एहि बातक भय छलनि जे मनुक्खक कोनो ठेकान नहि । ओ कतहु पहुँचि जा सकैत अछि । जँ कोनो मनुक्ख एहि 'अगम–द्वीप' पर पहुँचियो गेलै तँ ओकरा औषधिबला ई दैवी पान–सुपारीक गाछ चिन्हबामे नहि आबि सकैक, तेँ वैद्यराज ओकरा चारू कात ओहने सन देखैत सामान्य पान आ सुपारीक सघन कऽ वन लगा देलथिन ।' विधाता उत्तर देलथिन ।

एहिपर विधि मुसकिआइत पुछलथिन–आब ई कहू जे एहि वनमे ओ औषधिबला गाछ कोन ठाम छै ?'

विधाता कहलथिन- दिनक ठीक बिचला दुपहरियामे एहि पीपरक छाहरि पान-सुपारीक वनमे जतऽ धरि पड़ै छै, तकर दुन्ना दूरीपर ई औषधिबला पान-सुपारीक गाछ छै ।'

विधि हँसैत-हँसैत पुछलथिन- अएँ अओ विधाता ! एकरा 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' किए कहल जाइ छै ?'

विधाता कहऽ लगलथिन-एकर कारण छै । एहि दुनू दैवी गाछकेँ वाक्‌शक्ति भेटल छै । सब मासक अन्हरिया पक्खमे बिचली रातिमे औषधिबला पानक लत्ती सुपारीक गाछसँ हँसैत पुछै छै जे- अएँ हओ सुपारी ! हमरा तोरा कहिया भेट ?'

एहिपर सुपारी कहै छै- जहिया होअय पितरपैठ ?'

—वाह !' विधि कहलथिन- ई तँ विचित्रे बात भेल ! गाछो-बिरिछ बाजय आ सेहो चिकारीमे ! आब कहू जे ई 'पितरपैठ' की भेलै ?'

विधाता कहलथिन जे— नहि बुझलियै ? अमावास्या दिन जे पिण्ड देल जाइ छै सैह ने पितरकेँ पैठ होइ छनि ।'

'अच्छा ! तँ अन्हरिया पक्खमे पान आ सुपारीक गाछकेँ अपनामे गप्प-सप्प होइ छै । मुदा अमावास्याक दिन कोन एहन विशेष बात होइ छै आ तकर 'पितर पैठ'सँ कोन सम्बन्ध होइ छै ?' विधि बातकेँ अरथबैत पुछलथिन ।

—अच्छा सेहो कहिये दै छी ।' विधाता कहलथिन-अन्हरिया पक्खक आने राति जकाँ अमावास्योक रातिमे दुनूक बीच गप्प-सप्प होइ छै । एहि दिन किछु विशेष बात होइ छै । अमावस्याक रातिमे हँसनी पान बजन्ता सुपारीसँ हँसैत पुछै छै जे- 'हमरा तोरा कहिया भेट ?' एहिपर बजन्ता सुपारी मुसकिया कऽ उत्तर दै छै- हमरा तोरा आइए भेट ।'

विधि आश्चर्यसँ तकैत पुछलथिन- अच्छा ! तकर बाद फेर विशेष बात की होइ छै ?'

विधाता कहलथिन-तकर बाद विशेष यैह होइ छै जे तखन पानक लत्ती आ सुपारीक गाछसँ खूब तेज इजोत बहराय लगै छै । सुपारीक गाछ लीबि जाइ छै आ पानक लत्ती ओकरासँ लेपटा जाइ छै । ओही कालमे

खोँटल पान आ तोड़ल सुपारी दुनू मीलि कऽ औषधि बनि जाइ छै । यैह औषधि वैद्यराज देवता सभके‍ँ बेर पड़लापर दैत छथिन, जाहिसँ हुनका लोकनिक 'कायापलट' होइत रहै छनि ।'

विधाता, 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी'क विषयमे आरो-आरो बहुत रास बात आ प्रयोग-विधानक सम्बन्धमे कहैत रहलथिन ।

विधि विस्मित होइत कहलथिन-भला कहू तँ ! एतेक युगसँ दुनू गोटा एक संगे संसारक चऽर-चित लैत रहलहुँ अछि, मुदा ई बात सब हम आइये बुझलहुँ अछि ! अहाँ हमरासँ किएक नुकौने रहलहुँ ?

विधाता बिहुँसैत कहलथिन– ई सभ देव-रहस्य थिकैक । ई सभ हरसट्ठे कतहु नहि बाजल जाइत अछि । आइ अहाँ जे‍ँ पूछि देलहुँ तेँ हमहूँ कहि देलहुँ ।'

विधि पुनः पुछलथिन- एखन तँ अन्हरिया पक्ख छै कि ने ? अमावास्या तिथि कहिया हेतै ?'

विधाता कहलथिन- कहिया की हेतै, अमावास्या तँ काल्हिये छै ।'

एहिपर विधि कहलथिन- काल्हिये छै ! भने अहाँसँ पूछि लेलहुँ । हे ! काल्हि अहाँ, एसगरे संसारक भ्रमण करब । हम कने पहिने आबि कऽ एहि ठामक अजगुत घटना देखऽ चाहै छी ।'

विधाता कहलथिन-बड़ बेस ! अहाँके‍ँ जे मोन होअय ।'

ई गप्प-सप्प करैत-करैत भोर होअऽ लागल । पओ फटैत देखि विधि-विधाता दुनू गोटे, पीपरक गाछ परसँ उड़ि कऽ अपन देश विदा भऽ गेलाह ।

27

पीपरक धोधरिमे दम साधि कऽ चुप-चाप बैसल राजकुमार विधि-विधाताक सभ गप्प कान पाथि कऽ सुनैत रहल । भोर भेलापर ओ बिचला दिनमे पीपरक छाँहक पसारके‍ँ नीक जकाँ ठेकना लेलक आ ओहि ठाम कोनो-कोनो वस्तुसँ चेन्ह-चाक लगा देलक । फेर पीपरक जड़िसँ ओकर छाहरिबला चेन्ह धरिक जमीनके‍ँ अपन डेगसँ नापि लेलक आ छाहरिक अन्तिम सीमासँ आगाँ ओतबे डेगसँ जमीन नापि कऽ फेरो पान-सुपारीक

वनमे चेन्ह लगा देलक । एकर बाद राजकुमार एहि चेन्हक लग-पास बला सभ पानक लत्ती आ सुपारीक गाछकेँ गहिँकी नजरिसँ ठेकना कऽ देखि लेलक आ आबि कऽ पुनः गाछक धोधरिमे पड़ि रहल ।

दिन भरि राजकुमारक मोन कछमछ करैत रहलैक जे कखन साँझ होयतैक । जखन झोलफल साँझ भऽ गेलैक तखन ओ पीपरक छाँहक दुन्ना दूरीपर ओहि ठेकनाओल स्थानमे ठीक बीचो बीचमे जा कऽ छपकि कऽ बैसि रहल आ चारू भर अकानैत रहल ।

साँझ पड़लैक, सहे-सहे घनगर अन्हार होइत चल गेलैक ।

बीच रातिमे विधि-विधाता अयलाह । विधि पिपरक गाछपर आबि कऽ बैसलीह । विधाता भ्रमण करऽ चल गेलाह । अमावास्याक ओहि गुजगुज अन्हरिया रातिमे पान-सुपारीक वनमे छपकि कऽ बैसल राजकुमारकेँ हाथो हाथ किछु नहि सुझा रहल छलैक । आँखि जेना आन्हर भऽ गेल छलैक । जखन बिचली राति भेलैक तँ ओ ककरो खिल-खिला कऽ हँसैत बाजब सुनलक– की हओ बजन्ता सुपारी ! हमरा तोरा कहिया भेट ?'

शत्रुजीत ई सुनैत देरी चेति गेल जे ई स्वर तँ हँसनी पानक थिकैक । तखने ओकरा कानमे दोसर स्वर पड़लैक– हँ हए हँसनी पान ! हमरा तोरा आइए भेट ।'

राजकुमारकेँ ई बुझबामे कनेको भाङठ नहि रहलैक जे ई उत्तर बजन्ता सुपारीक छलैक ।

राजकुमार पूरा सचेत भऽ गेल । एमहर ई गप्प होइते देरी एकटा पानक लत्ती आ ओकरासँ सटल एकटा सुपारीक गाछमेसँ खूब तेज इजोत बहराय लगलैक । राजकुमारक दुनू आँखि चोन्हिआय लगलैक । तखने एकटा औरो चमत्कार भेल । ओ सुपारीक गाछ लीबि गेलैक आ पानक लत्ती ओकरासँ लेपटा गेलैक ।

ई अद्‌भुत दृश्य देखि पहिनेसँ तैयार भेल राजकुमार चुमकीसँ ओहि इजोतबला दुनू गाछ लग तड़पि कऽ पहुँचल आ बिना एको पलक समय गमौने ओहि विचित्र इजोतमे एकटा पानक पात खोँटि लेलक आ एकटा सुपारी तोड़ि लेलक, कि तखने इजोत मिझा नेलैक आ चारू कात पहिने जकाँ अन्हार गुज्ज भऽ गेलैक ।

राजकुमार ओरिया कऽ ओहि पानक पात आ सुपारीक फड़केँ अपन गमछामे लपेटि डाँड़मे बान्हि लेलक । एकर बाद पान-सुपारीक ओहि वनमेसँ कोनहुना टोइपा-टापर दैत बहार भेल आ पीपरक धोधरिमे आबि सकदम्म भऽ कऽ बैसि रहल । ओ भरि राति जगले रहल, एहि डरसँ जे कोनो देव-दैत, भूत-परेत आबि कऽ ओकरासँ ई दिव्य औषधि छीनि ने लैक ।

28

आने दिन जकाँ ओहू दिन जखन भोर होअऽ लगलैक तँ पीपरक गाछपर बैसल विधिकेँ विधाता आबि कऽ विदा होयबा लय कहलथिन । मुदा फेर विधि कहलथिन- हे औ विधाता ! अहाँ ताबत आगाँ बढ़ू । हम पाछाँसँ किछु ठामसँ कने टहलि-बूलि कऽ भेल अबै छी ।'

विधाता- 'बड़ बेस' कहि कऽ उड़ि गेलथिन आ विधि बैसले रहि गेलीह ।

भिनसर भेलापर विधि फेर ओही वनवासिनी स्त्रीक रूप धऽ कऽ जारनि-काठी बिछैत पीपरक गाछ तरमे अयलीह । राजकुमार सेहो गाछक धोधरिसँ बहार भऽ गेल छल । राजकुमारक मोनमे आतुरता छलैक जे कखन ओ एहि 'अगम-द्वीप'सँ विदा भऽ जाय ।

धोधरिसँ बहार होइतहि राजकुमार फेर ओही वनवासिनी स्त्रीकेँ देखलक । ओकरो नजरि राजकुमारपर पड़लैक । ओ पूछि देलक- की हओ युवक ! किछु भेटबो कयलह ?'

राजकुमार एहि प्रश्नपर बिहुँसि देलक, जाहिसँ विधिकेँ बुझा गेलनि जे एकर काज भऽ गेलैक ।

राजकुमार ओहि वनवासिनी स्त्रीकेँ कल जोड़ैत कहलकैक जे- जाहि ठाम कोनो मनुक्खक दरस-परस नहि, ताहि ठाम अहाँकेँ देखै छी । आब अहाँ जे क्यो छी तनिका हम प्रणाम करै छी ।'

वनवासिनी स्त्रीक वेशमे विधि कहलथिन- हमहूँ तोरे जकाँ एकटा मनुक्ख थिकहुँ । तोरा ओहि स्थितिमे देखि कऽ हमरा बड़ मात्सर्य भेल छल । सोचलहुँ जे तोँ एतेक दूरसँ अयलह अछि तँ हमरा हाथेँ तोहर जैह

किछु उपकार भऽ जाह ।'

फेर ओ वनवासिनी रूपधारिणी विधि-पुछलथिन-युवक ! तोँ आब आपस कोना जयबह ? कतेक दिनमे पहुँचबह ?'

राजकुमार बाजल-आपस तँ ओही बाटेँ जायब जाहि बाटेँ अयलहुँ अछि, मुदा कते दिनमे अयलहुँ, ने तँ सैह बुझलियै आ ने कतेक दिनमे पहुँचब, सैह बुझि पड़ैए ।'

वनवासिनी रूपधारिणी विधि युवकक गप्प सुनि कनेक काल गुनधुन करैत रहलीह । फेर ओ कहलथिन– युवक ! तोरा एकटा गप्प कहि दै छिअह, तकरा गीरह बान्हि कऽ राखि लिहह ।'

राजकुमार उत्सुकतासँ वनवासिनीक मुँह तकैत बाजल– से की ?'

वनवासिनी कहलथिन– युवक ! तोरा एतऽ जे किछु भेटलह अछि से ने ककरो देखऽ दिहक आ ने ई कोना भेटलह सैह समाद कहिहक । जखन घर पहुँचिहह तँ एकर प्रयोग ओही तिथि आ ओही समयमे करिहह जाहि तिथि आ जाहि समयमे ई तोरा भेटलह अछि । हँ, एकटा औरो बात सुनि लैह ! जखन तोँ एकर प्रयोग करऽ लगिहह तँ सावधान रहिहह जे दूर-दूर धरि कतहु कोनो इजोत नहि रहय । जकरापर एहि वस्तुक प्रयोग करबाक छह से आ तोरा छोड़ि केओ तेसर ओहि समयमे ओहि ठाम नहि रहय, से ध्यान रखिहह । जँ एहि सब बातमे कनेको कोनो चूकि भेलह तँ जानि लैह जे तोहर आ ओहि राजकुमारी दुनूक माथ फाटि जयतह ।'

राजकुमार, वनवासिनीरूपी विधिक बात ध्यानपूर्वक सुनैत 'हँ ! हँ !'क मुद्रामे अपन मूड़ी डोलबैत रहल ।

फेर वनवासिनी राजकुमारकेँ एक बेर नीचाँसँ ऊपर निंघारैत बाजलि– युवक ! एहि 'अगम-द्वीप'क दुस्साहसिक यात्राक झमारसँ तँ तोहर रंगे बेदरंग भऽ गेल छह । तोहर देह-मुँह से झामर-चितकाबर लगै छह जे घर पहुँचलापर चिन्हलो नहि जयबह । थाकल– ठेहिआयल से फराके छह !'

राजकुमार बकर-बकर ओहि वनवासिनी स्त्रीक मुँह तकैत रहल । एहि प्रश्न सभक ओ की उत्तर दितय से ओकरा किछु नहि फुरयलैक ।

ओ स्त्री अपन आँचरक गीरह फोलि ओहिमेसँ धातरीक आकारक एक छोट सन फल निकालि राजकुमारकेँ दैत बाजल– युवक ! ई वनक अद्‌भुत फल थिक । ई खयलासँ तोहर सरूप तेहने भऽ जयतह जेहन लऽ कऽ एहि जतरापर विदा भेल छलह आ सबटा ठेही-थाकनि सेहो समाप्त भऽ जयतह ।'

राजकुमार हाथ बढ़ा कऽ ओ फल वनवासिनीक हाथसँ लऽ लेलक । ओ पुनः कहलकैक– हे, फल खाइ कालमे अपन आँखि बन्द कऽ लैह आ एकसँ तीस धरि तीस बेर बाजि कऽ गनती करैत रहह । तकर बाद आँखि खोलिहह ।

राजकुमार आँखि बन्द कऽ कऽ ओ अद्‌भुत फल मुँहमे धऽ लेलक आ जेँ कि ओकरा दाँतसँ कच्च दऽ दबौलक कि ओकरा विचित्र प्रकारक अनुभव होअऽ लगलैक । बुझि पड़लैक जेना ओ धरती-आकाश छोड़ि बीचमे कोनो हबा-बसातमे उधिया रहल होअय । तथापि ओ अपन आँखि नहि फोललक आ वनवासिनीक कहनामक अनुसार एकसँ लऽ कऽ तीस धरिक मोने मोन तीस बेर गनती करैत रहल ।

29

केसरपुरक राजा कामदेवसेन अपन दरबारमे बैसल छलाह । मन्त्री, सेनापति, देवानजी, दरबारी सभक संगे कोनो विषयपर विचार-विमर्श कऽ रहल छलाह । राजाक मुँहपर ओहिना पुरनका उदासी आ गम्भीरता पसरल छलनि ।

एकाएक राजमहलक अन्दर दिससँ एकटा सेवक दरबारमे दौड़ल हकमैत आयल आ राजाकेँ कहलकनि-महाराज ! राजमहलक भीतर शत्रु देशक कोनो भेदिया कोना ने कोना पैसि गेल अछि ।'

राजा ई समाद सुनि कऽ चौँकि उठलाह । हुनकर मुँहपर विचित्र प्रकारक भाव आबि गेलनि । ओ ठामहि दरबार बरखास्त करैत सेनापतिकेँ आदेश देलथिन जे ओ सेनाकेँ तैयार कऽ कऽ राखथि । भऽ सकैत अछि जे शत्रुदेश हमला करबाक तैयारी कऽ रहल होअय । तेँ चऽर-चित लेबाक हेतु भेदियाकेँ पठौने होअय ।'

राजा गम्भीर भेल राजमहल पहुँचलाह । भीतर अयलापर देखैत छथि जे राजमहलसँ बाहर निकलऽबला गुप्त सुरंगक मुँहपर एकटा युवक ठाढ़ भेल

चकुआइत चारू दिस ताकि रहल अछि आ दूटा सिपाही दुनू दिससँ ओकरापर भाला तनने ठाढ़ अछि ।

ओ युवक दोसर केओ नहि, राजकुमार शत्रुजीत छल ।

बात भेलैक ई जे 'अगम द्वीप'पर राजकुमार ओहि वनवासिनीक कहनामक अनुसार अपन आँखि बन्द कऽ कऽ तीस धरिक गनती तीस बेर करैत रहल आ तकर बाद जे आँखि फोललक तँ ओकरा बुझयबे ने कयलैक जे ओ कतऽ अछि ? ओकरा तेना ने भक लागि गेल छलैक जे ओ कते काल धरि चकुआइत रहल । तकर बाद जखन ओकर भक खुजलैक तँ ओ देखैत अछि जे आहि रे बा ! ओ तँ ओही केसरपुर राजक राजमहलक गुप्त सुरंगक मुँहपर ठाढ़ अछि । ओ जा किछु बजितय कि ताबत पहरापर लागल सिपाही राजमहलक एहि सुन्न भागमे एकटा अनचिन्हार लोककेँ देखि ओकरा पकड़ि लेलकैक । राजाक आगाँ ओकरा हाजिर कयल गेल ।

राजा कामदेवसेन अपन राजमहलमे पैसल एहि युवककेँ देखि क्रोधित होइत पुछलथिन-तोँ के थिकह आ राजमहलक एहि गुप्त भागमे कोना पहुँचि गेलह ?'

राजकुमार राजाकेँ प्रणाम करैत बाजल- महाराज ! अपने हमरा नहि चिन्हलहुँ की ? हम वैह मनुक्ख छी जकरा अहाँ 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' अनबाक शर्त्त देने छलियै ।'

राजा अकबका गेलाह । ओ गहिँकी नजरिसँ ओकरा देखलथिन तखन हुनका मोन पड़ि गेलनि जे ई तँ वैह युवक थीक जे आइसँ किछु वर्ष पहिने राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिसँ विवाह करबाक हेतु आयल छल ।

राजाकेँ भेल छलनि जे ओ युवक सुरंग बाटेँ एतऽसँ जे गेल तकर तँ कतेको समय बीति गेलैक । एतेक दिनमे तँ ओ कतहु मरि-खपि गेल होयत । मुदा तखन ओकरा अपना सामनेमे ठाढ़ देखि राजाकेँ घोर आश्चर्य भेलनि । ओ युवककेँ पूछऽ चाहलथिन जे-जाहि काज लय गेल छलह से भेलह की ?'

राजकुमार हुनका बीचेमे रोकैत कहलकनि-एखन हमरासँ अहाँ किछु नहि पुछू आ ने एखन हमहीँ किछु कहब । बस अहाँ एतबे कहि दिअऽ जे आइ कोन तिथि छै ।'

राजा कहलथिन जे- आइ अमावास्या छै ।'

–अमावास्या !' राजकुमार चौँकि कऽ बाजल ।

ओ मने मन सोचऽ लागल जे– पछिला अमावास्याकेँ ओ 'अगम-द्वीप' पर 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' प्राप्त कयने छल । तकर प्रात भेने ओ पड़िबा तिथिकेँ ओहि वनवासी स्त्रीक 'उड़न-छू-विद्या' क बलेँ ओतऽसँ उड़ि कऽ विदा भेल छल । वनवासिनी एकसँ तीस धरिक गनती बाजि कऽ तीस बेर करबाक हेतु एकरा कहने छलैक । एकर अर्थ भेलैक जे एक बेरक गनतीमे ओ एक दिन चलल । तीस बेरक गनतीमे ओ पूरा तीस दिन धरि चलि कऽ आइ एतऽ पहुँचि गेल । एतऽ धरि आबऽमे ओकरा पूरा एक मास लागि गेलैक । 'अगम-द्वीप'सँ 'उड़न-छू-विद्या'क बलेँ अयबामे जखन तीस दिन लागि गेलैक, तखन पैदल जयबामे ओकरा कते दिन लागल छलैक, तकर अनुमान कऽ कऽ ओ स्वयं रोमांचित भऽ उठल ।

राजकुमार ई सब सोचि रहल छल कि देखैत अछि जे पश्चिम दिशामे सूर्य अस्त होयबापर छथिन आ साँझ पड़ऽ लागल छैक । धीरे-धीरे अन्हार सेहो पसरऽ लगलैक । राजकुमार हड़बड़ाइत राजाकेँ कहलकनि- महाराज ! अपनेसँ हमर एकटा अनुरोध अछि । आइ राति भरि महलमे तँ नहिएँ, एहि सौंसे नगर भरिमे कतहु इजोत नहि बरय से व्यवस्था करबा दियऽ । दोसर ई, जे एहि राजमहलमे हमरा छोड़ि, केओ अन्य व्यक्ति नहि रहय ।'

राजा युवकक आत्मविश्वासकेँ देखैत बिना कोनो प्रश्न कयने ओकर दुनू बात मानि लेलथिन । महलसँ लऽ कऽ सौंसे नगर भरिमे अजुका राति केओ दीप नहि बारय से आदेश दऽ देलथिन । बारी सबकेँ ओहि दिन अनेरे छुट्टी भेटि गेलैक । तहिना महलमे जे रानी आ आन-आन दासी-खबासिनी लोकनि छलि तकरो सबकेँ राति भरि लय ओहि महलसँ बाहर दोसर महलमे चल जयबाक आदेश दऽ देलथिन । तत्काले महल खाली भऽ गेल । आब रहि गेलाह राजा, युवक आ कपड़कोटक भीतर राजकुमारी ।

युवकक एहि विचित्र आग्रहसँ राजा कामदेवसेनक उत्सुकता बढ़ऽ लगलनि । हुनका अपना इच्छा भेलनि जे आन केओ तँ नहि, मुदा कमसँ कम ओ अपने एहि ठाम रहथि जाहिसँ एहि युवकक क्रिया-कलाप ओ

अपना आँखिसँ देखि सकथि ।

राजा कने संकुचित होइत युवक लग अपन मोनक ई भाव प्रगट कयलथिन । एहिपर राजकुमार हुनका कहलकनि–नहि महाराज ! एहि ठाम अपनहुँकेँ नहि रहबाक अछि । जँ अपने जिद्द कऽ कऽ रहि गेलहुँ तँ हमर सब परिश्रम निष्फल चल जायत । हमर तँ अन्त होयबे करत संगहि अहाँक आ एहू रूपमे अहाँक जे बेटी छथि ताहूसँ अपने वंचित भऽ जायब ।'

राजा युवकक बात सुनि कऽ डेरा गेलाह ।

शत्रुजीत राजाकेँ कहलकनि–महाराज ! अहाँ अपनेसँ राजकुमारीक कपड़कोट हटा दियौन आ एतऽसँ शीघ्रे चल जाउ । महलक बाहर, महलसँ एक सय हाथक भीतर केओ नहि आबय । भिनसरमे जखन सूर्यक किरण महलपर पड़तैक तखने अपने एतऽ आयब ।'

30

राजा, राजकुमारक बात मानि राजकुमारीक कपड़कोट हटा महलसँ बाहर चल जाइत रहलाह । महलक द्वार बन्द भऽ गेलैक । महलक बाहर सय हाथक भीतर जे केओ लोक छल तकरा सबकेँ हटा देल गेलैक । महलक सिपाही–पहरेदार सभ सेहो एक सय हाथक बाहरे जा कऽ ठाढ़ भऽ गेल ।

कपड़कोट हटलाक बाद फुलकेसरिकुमरि आ ओ युवक सोझाँ–सोझी भऽ गेल छल जे पूर्वमे फुलकेसरिसँ विवाह करबाक लेल तैयार छल । दीर्घकालक बाद महलमे आपस आयल ओहि युवककेँ कामदत्तसेन पहिल बेरमे भनहि नहि चिन्हने होथिन किन्तु राजकुमारीकेँ युवककेँ चिन्हबामे कनेको विलम्ब नहि भेलैक । ओ तँ ओहि युवककेँ मानसी मूर्त्तिक रूपमे अपना हृदयमे चिरकालक लेल स्थापित कऽ लेने छलि ।

भूरमे भुकभुकाइत भगजोगनी जकाँ राजकुमारीक आँखि चमकि उठलैक । ओकरा हृदयमे एकटा एहन आह्लाद आ हुलास भरि गेलैक जकरा ओ अपन विकराल मुखाकृति द्वारा व्यक्त करबामे असमर्थ आ असहाय छलि । परन्तु एकटा विश्वास जागि गेलैक जे ई युवक ओकर उद्धारक रूपमे आबि गेलैक जेना पाथर भेलि अहल्याक उद्धारक लेल राम

आबि गेल होथि । ओ अपलक युवककेँ देखैत रहलि ।

आध पहर राति एही सबमे बीति गेल ।

राति जँ-जँ घन होइत गेल, तँ-तँ गुजगुज अन्हार पसरैत चल गेलैक । दूर-दूर धरि कतहुसँ कोनो शब्द नहि सुनाइ दैत छलैक । ओहि अन्हार राजमहलमे बैसल शत्रुजीतकेँ अपनो साँसक आबाज जोरसँ सुनाइत बुझा रहल छलैक । जखन ओकरा बुझयलैक जे चारू कात आब नीक जकाँ निसबद भऽ गेलैक तखन ओ थाहि-थाहि कऽ राजकुमारीक सिंहासन लग पहुँचल । ओतऽ डाँड़सँ 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' निकालि सिंहासनक नीचामे लगे-लग कऽ कऽ दुनूकेँ राखि देलक ।

एकर बाद राजकुमार चुप-चाप ओहि ठाम बैसि चमत्कारक प्रतीक्षा करऽ लागल । अन्हारोमे ओकर आँखि ओही 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' पर टिकल छलैक । बिचली रातिमे राजकुमार खनकैत हँसीक संग हँसनी पानकेँ बजैत सुनलक– की हओ बजन्ता सुपारी ! हमरा तोरा कहिया भेट ?'

बजन्ता सुपारी बिहुँसैत उत्तर देलकैक– हँ हए ! हँसनी पान ! हमरा तोरा आइए भेट ।'

तखने हँसनी पान आ बजन्ता सुपारीमेसँ खूब तेज इजोत बहराय लगलैक । बजन्ता सुपारी हँसनी पान दिस आ हँसनी पान बजन्ता सुपारी दिस ससरि एक-दोसरासँ लेपटा गेल । तखने राजकुमार फुर्त्तीसँ दुनूकेँ अपन मुट्ठीसँ बकोटि ओही इजोतमे राजकुमारीक मुहमे ठूसि देलकैक आ कहलकैक– एकरा जल्दीसँ चिबा कऽ घोंटि जाउ ।'

राजकुमारीक मुँहमे पान-सुपारी जाइते देरी फेर चारू दिस अन्हार-गुज्ज भऽ उठल ।

मुदा तकर बाद भेल एकटा अद्‌भुत चमत्कार जकर प्रतीक्षा राजकुमारकेँ छलैक । राजकुमार देखलक जे राजकुमारीक देहसँ अचानक तेज रोशनी बहराय लगलैक । सौंसे राजमहल ओहि इजोतसँ जगमगा उठल । राजकुमार आब ध्यानपूर्वक राजकुमारीकेँ देखऽ लागल । ओ देखलक जे राजकुमारीक जतेक नमरल आ विकृत अंग सब छल, से सहे-सहे सटकऽ लागल । दोसर दिस जे ओकर छोट-छोट हाथ-पैर छल से स्वतः नमरऽ लागल । माँसुक

थिम्हा सन जे राजकुमारीक देह छलैक से बुझि पड़लैक जेना ऊपर दिस नमरल जा रहल छैक ।

देखिते-देखिते ओहि सिंहासनपर जेना स्वर्गलोकक अप्सरा सन सुन्नरि एकटा युवती प्रकट भऽ गेलि । आश्चर्यसँ अपना दिस तकैत ओहि युवककेँ देखि ओ दिव्य रूपमती राजकुमारी फुलकेसरिकुमरि लजा उठलि । ओ दुनू हाथसँ अपन मुँह झाँपि लेलक । राजकुमारक तखन जा कऽ भक फुजलैक । ओ ओतऽसँ उठि झटसँ कपड़कोट लगा देलक ।

कपड़कोट लगलासँ फेर चारू दिस अन्हार पसरि गेलैक । राजकुमार कपड़कोटक बाहर नीचाँमे ठेहुन मोड़ि ओहिमे माथ दऽ कऽ बैसि रहल । बैसले-बैसले ओकरा आँखि लागि गेलैक । ओ निसभेर भऽ कऽ सूति रहल ।

31

निसबद अन्हार रातिमे राजा कामदेवसेन कछमछ करैत भोर होयबाक प्रतीक्षा करैत रहलाह । रनिवासमे रानी सभकेँ सेहो निन्न नहि भेलनि । एहन स्थितिमे दास-दासी सब कोना सुतितय ? ओहो सब दम सधने जगले रहल ।

राजा, राति भरि सोचैत रहलाह जे जानि नहि काल्हि की होयत की नहि ? यैह सब सोचैत-सोचैत भिनसर भऽ गेलनि । पूब दिस जहाँ पह फाटल कि राजा दौड़ले फुलकेसरिकुमरिक ओहि गुप्त राजमहलमे अयलाह । एतऽ देखैत छथि तँ ओ युवक धरतीपर पड़ल फोँफ काटि रहल अछि । व्यग्र भेल राजा, राजकुमारकेँ जगबैत कहलथिन- की हओ युवक ! रातिमे की सब भेलह ?'

राजकुमार चेहा कऽ उठल आ राजाकेँ अपना सामने ठाढ़ देखि अन्यमनस्क होइत बाजल- महाराज ! अपनेसँ कपड़कोट हटा कऽ देखियौ ने जे रातिमे की सब चमत्कार भेलै !'

राजा आतुरतासँ कपड़कोट हटौलनि तँ राजकुमारीक स्वरूप देखि चकित-छकित रहि गेलाह । कतऽ ओ माँसुक पिण्ड आ कहाँ ई दिव्य सुन्दर रूप ! राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिक देहसँ इजोत बहरा रहल छलैक । सोना जकाँ सौंसे शरीर चमचम चमकि रहल छलैक । अंग-अंगसँ जेना हीरा-मोती

झहरि रहल छलैक । नाम-नाम कारी भौर केशसँ केसरक फूल झहरि-झहरि कऽ खसि रहल छलैक । राजा तँ अपन पहिल सन्तानक ई 'काया पलट' भेल देखि दंग रहि गेलाह । हुनका जेना अपने आँखिपर विश्वास नहि भऽ रहल छलनि ।

राजकुमार सेहो दिनक इजोतमे फुलकेसरिकुमरिकेँ देखलक तँ बुझि पड़लैक नेना रातुक तुलनामे ओ औरो बेसी सुन्नरि भऽ गेल छलैक । राजकुमारपर नजरि पड़ितहिँ फुलकेसरिकुमरि फेर लजा उठलि ।

ओमहर ई खबरि रनिवासमे पहुँचलैक । रानी अपन दासी-खबासिन सभक संगे हहाइत-फुहाइत गुप्त राजमहल दिस दौड़ल अयलीह । बेटीक ई रूप देखि कऽ तँ हुनका विश्वासे नहि होइनि जे एहनो भऽ सकैत छैक । ओहो लोकनि राजकुमारीक ई दिव्य रूप देखि आनन्द मनाबऽ लगलीह ।

विस्मित भेल राजा कामदेवसेन तँ आनन्दविभोर भऽ कऽ शत्रुजीतकेँ भरि पाँज पकड़ि कऽ छातीसँ लगा लेलथिन । हुनका दुनू आँखिसँ दहो-बहो आनन्दक नोर बहऽ लगलनि ।

राजा, राजकुमारकेँ कहलथिन-एते दिन बीति गेल आ तोँ नहि अयलह तँ हमरा भेल जे तोँ असफल भऽ कऽ कतहु मरि-खपि गेल होयबह । हम तँ हिया हारि चुकल छलहुँ जे- ने केओ 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' आनि सकत आ ने हमर बेटीक 'काया पलट' भऽ सकतनि आ ने हिनक कहियो विवाहे भऽ सकतनि । तोँ तँ असम्भव काजकेँ सम्भव कऽ कऽ देखा देलह । आब कहह कोना की सब भेलह ? केहन होइ छै 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' आ रातिमे कोन-कोन जादू कयलह ?'

राजकुमार शत्रुजीत पिपरक धोधरिमे रातिमे जागल रहलापर सुनल विधि-विधाताक संवाद आ वनवासिनी स्त्रीक कहल ओ बात आ चेतौनीक एक-एक शब्द मोन रखने छल । ओहिसँ ओ कहियो, कखनो चल-बिचल नहि होयत से निश्चय कऽ लेने छल ।

राजाकेँ प्रश्नक अमार लगबैत देखि राजकुमार गम्भीर होइत बाजल-महाराज ! अपनेकेँ तँ आम खयबासँ प्रयोजन अछि, आँठी गनबाक कोन काज ? आब जे, जेना आ जे किछु भेलै तकरा गुप्ते रहऽ दियौ । ई सभ जनने ककरो नीक नहि होयत ।'

युवकक उत्तर सुनि राजा मौन भऽ गेलाह आ फेर घूरि कऽ कोनो जिज्ञासा नहि कयलथिन ।

32

राजा कामदेवसेनक जे शर्त्त छलनि से ओ अज्ञात साधारण घरक युवक पूरा कऽ कऽ देखा देलकनि । सिद्ध महात्माक देल वचनक अनुसार राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिकेँ दिव्य स्वरूप प्राप्त भऽ गेल छलनि । आब राजाकेँ अपन शर्त्त पूरा करबाक छलनि । केसरपुर राजपरिवारमे तँ कोनो राजकुमारीक विवाह एखन धरि कोनो देशक राजकुमारेसँ होइत आयल छल । मुदा ई पहिल उदाहरण छल जे कोनो राजकुमारीक विवाह एक साधारण घरक युवकसँ होइतय, किएक तँ राजा अपन शर्त्तक अनुसार वचनबद्ध छलाह ।

राजा, आब राजकुमारीक विवाहक सम्बन्धमे युवकसँ अपन शर्त्तक अनुसार गप्प करऽ चाहलनि । मुदा ताहिसँ पहिनहि साधारण युवकक रूपधारण कयनिहार शत्रुजीत कऽल जोड़ि कऽ राजाकेँ कहलकनि– महाराज ! अपनेक शर्त्त आ मनोरथ दुनू पूर भऽ गेल । आब अपनेसँ हमर दूटा आग्रह अछि । पहिल तँ हमर ओहि बुढ़िया मौसीकेँ बजबा कऽ मङबा दियऽ आ दोसर जाहि–जाहि राजकुमार आ युवक सभकेँ बनिसारमे राखि देने छलियनि, तनिका सभकेँ बाहर कऽ दियनि आ उचित सम्मानक संग विदा करियनि ।'

राजा युवकक बात मानि कऽ खड़खड़िया पठा कऽ ओकर ओहि बुढ़िया मौसीकेँ बजबौलथिन आ बनिसारमे बन्दी बनल राजकुमार आ युवक सभकेँ मुक्त कऽ देलथिन । बनिसारसँ मुक्त बन्दी युवक सब थहाथही भेल एक दोसराकेँ आश्चर्यसँ देखि रहल छल ।

बुढ़ियाकेँ जखन राजमहलमे आनल गेल तँ राजकुमार ओकर पैर छुबैत बाजल–मौसी ! तोरा हम वचन देने छलियौ जे तोहर पोताक पता लगा कऽ रहबौ से लगा देलियौ । आब अपन पोताकेँ चीन्हि कऽ लऽ जो ।'

एतेक कहैत राजकुमार बनिसारसँ छुटल युवकक भीड़ लग बुढ़ियाकेँ लऽ गेलैक । बुढ़ियाकेँ अपन पोता किसनाकेँ चिन्हैत कनेको देरी नहि लगलैक । दुनू दादी–पोता एक दोसराक घेँट धऽ कऽ कानऽ लागल । बुढ़िया

अपन पोताकेँ लऽ कऽ नाभरोस भऽ गेल छलि, तकरा सकुशल देखि खखना नामे बहिनौत बनल राजकुमार शत्रुजीतकेँ भरि मोन आशीर्वाद देबऽ लागलि।

शत्रुजीत पुनः बनिसारसँ मुक्त युवकक समूहपर अपन नजरि खिरौलक आ जोरसँ बाजल- अहाँ सबमे वीरधन नामक व्यक्ति केओ छी ? जँ छी तँ आगाँ आउ ।'

समूहमेसँ एकटा युवक आगाँ बढ़ि कऽ आयल आ राजकुमारकेँ कहलकैक- हमरे नाम अछि बिरधन ।'

राजकुमार अत्यन्त मन्द-स्वरमे पुछलकैक- नाम तँ माय-बाप रखलकौ वीरधन । वीरताक धनबला, मुदा तोँ तँ भऽ गेलेँ कायरधन ! विना परिश्रम कयनहि धनिक बनबाक लौलि भऽ गेलौ ? माय मुरही बेचि कऽ तोरा पोसलकौ जे तोँ समर्थ होयबेँ तँ कमा-खटा कऽ परिवारक पालन करबही । मुदा हड़गर-कठगर युवक होइतो महाक अहदी, कोढ़ियाठ आ काहिल छेँ । तेँ ने संगी सभक कहलापर आधा राज पयबाक लोभेँ बौआइत चल अयलेँ !'

बिरधन तँ एकटा अनचिन्हार लोकक मुहसँ पहिने अपन नामे सुनि कऽ चौंकल छल मुदा ई बात सब सुनि कऽ आश्चर्यमे पड़ि गेल । ओ माथ झुका कऽ पैरक औंठासँ धरतीक माटि खोधऽ लागल ।

राजकुमार बिरधनकेँ कहलकैक जे- बनिसारबला युवक सभक संग तोँहू नहि चल जैहेँ ।' ई ओकर डेन पकड़ि कऽ बुढ़िया लग लेने आयल आ बुढ़ियाकेँ कहलकैक- गे मौसी ! ई थिक बिरधन । तोरे पोता जकाँ इहो धनिक बनबाक लोभमे बनिसारमे पड़ि गेल छल । अपना लग अपने पोता जकाँ एकरा रखही । हम जखन अपना देश जाय लागब, तँ एकरा संग लेने जयबैक । एकसर ई कतऽ बौआइत रहत ?'

बिरधन बुढ़िया लग किसनाक संग ठाढ़ भऽ गेल ।

राजाक बनिसारमे बन्द राजकुमार ओ युवक सभक देह-दशा अत्यन्त मलिन भऽ गेल छलैक । झबड़ल-झबड़ल केश-दाढ़ी भऽ गेल छलैक । देहपर वस्त्र सभ मैल, फाटल, पुरान भऽ गेल छलैक । राजाक आदेशसँ राजसेवक सब बनिसारसँ मुक्त युवक सबकेँ स्नानादि कराय परिष्कृत करौलक ।

राजा ओकरा सबसँ विनम्र भावसँ क्षमायाचना करैत कहलथिन जे हमर जे विवशता छल ताहि कारणे अहाँ सभकेँ एहि कष्टमे राखऽ पड़ल।'

फेर ओ विनीत भावेँ बजलाह जे– अहाँ सबसँ आग्रह जे एहि अन्तःपुरमे अहाँ सब जे किछु देखलहुँ वा अनुभव भेल तकरा एकदम गोपनीय राखी। बल्कि, एकटा सपना बुझि कऽ बिसरि जाइ ।'

ओ सब मौन सहमति देखौलक ।

कामदेवसेन अपनहि हाथेँ सब युवककेँ विदाइमे नव वस्त्र, आभूषण आ आन तरहक नीक वस्तु सब उपहारमे देलथिन । ओ सभ गोटे उपहार ओ बिदाइ पाबि बड़ प्रसन्न भेल आ अपन मुक्तिदाता ओहि युवकक प्रति कृतज्ञता देखबैत विदा होअऽ लागल ।

शत्रुजीत ओहि सभ गोटाकेँ रोकि लेलक आ राजा कामदेवसेनकेँ कहलकनि–महाराज ! ई देश-देशक राजकुमार ओ सुन्दर-सुन्दर युवक लोकनि राजकुमारीसँ विवाहक कामनासँ आयल छलाह । आब राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिकेँ अनुमति दियौन जे एहि सभ गोटामेसँ जनिकापर हुनक मन भाबनि तनिका अपन वरक रूपमे वरण कऽ लेथि ।'

राजा ओहि युवकक गप्प सुनि कऽ अवाक् रहि गेलाह । ओ किछु बजितथि कि ताहिसँ पहिनहि राजकुमार हुनका चुप करैत बाजल– महाराज ! हम तँ माँसुक ओहि थिम्हा सन राजकुमारीसँ विवाह करबा लय तैयार छलहुँ जे हमरा सन गरीब लोकक हेतु छजि सकैत छल । मुदा आब ई दिव्य रूपबाली राजकुमारी हमरा सन साधारण रूप-रंगबला मनुक्खक संग विवाह करथि से कतहुसँ उचित नहि होयत । दोसर, ई भेली राजाक बेटी आ हम भेलहुँ एकटा गरीब लोक । लूटि लाउ कूटि खाउ । सब दिन हाड़ तोड़ि कऽ कमायब-खटायब आ तखन जे किछु कऽन-खुद्दी भऽ सकत सैह खा कऽ गुजर करब । हम ने तँ अपन रूपेसँ आ ने अपन स्थितियेसँ एहि दिव्य राजकुमारीक जोगर छियनि, तेँ हिनक विवाह कोनो उच्च राजकुलक रूपवान राजकुमारसँ करायब उचित होयत ।'

राजा, युवककेँ बीचमे रोकऽ चाहलथिन । मुदा युवक बजिते रहल–महाराज ! हमरा माध्यमसँ जे किछु भेल अछि ताहिमे हमर कोनो

बड़प्पन नहि अछि । ई तँ सबटा भगवानक लिखलाहा छलनि । एकर हम आब अनुचित लाभ उठाबी से हमरा उचित नहि लगैए । पहिल दिन, जहिया हम हिनका देखने रहियनि, तहिया विचारने रही जे ई राजकुमारी भने केहनो छथि, अहाँक दिससँ आधा राजपाट तँ भेटबे करत । सुखसँ गुजर कऽ लेब । मुदा आब तँ से बात रहल नहि, तेँ हमर विनती अछि जे..........।'

—राजकुमारीक विवाह कोनो राजकुलक सुन्दर राजकुमारसँ करा दियनि, सैह किने !' राजा बीचेमे राजकुमारक मुँहसँ बात लोकैत कहलथिन—यैह ने कहब अहाँ ?

—हँ, महाराज ! अपनेसँ हमर यैह प्रार्थना अछि ।' राजकुमार बाजल ।

—मुदा, युवक ! हम तोहर एहि प्रार्थनाकेँ कदापि नहि स्वीकार कऽ सकैत छियह, किए तँ हम अपन वचनसँ बान्हल छी । ओहिसँ हम एकोरत्ती पाछाँ नहि हटि सकै छी ।' राजा कहलथिन ।

—हम अपनेकेँ ओहि वचनसँ मुक्त करै छी ।' राजकुमार कहलकनि ।

युवकक एहन हठधर्मिता देखि राजा असमंजसमे पड़ि गेलाह । की करी-की नहि करी, से किछु फुराइये नहि रहल छलनि । युवककेँ अपन जिद्दपर अड़ल देखि कऽ राजाकेँ सेहो जेना अपन बचनपर पुनर्विचार करबाक लेल मन डोलऽ लगलनि

ओमहर राजकुमारी फुलकेसरिकुमरि सभ बात कान पाथि कऽ सूनि रहल छलीह । युवकक अस्वीकारात्मक रुखि देखि फुलकेसरिकुमरिक मुखमण्डल विषाद आ उदासीसँ भरि गेलनि । युवक भने अपनाकेँ असुन्दर आ अति सामान्य कहैत होअओ । किन्तु राजकुमारी युवककेँ देवतासँ बेसी दिव्य रूपमे दखऽ लागलि छलीह । युवकक बात सुनि हुनका आँखिसँ साओन-भादवक बरखा जकाँ दहो-बहो नोर झहरऽ लगलनि ।

युवककेँ कोनो स्थितिमे टससँ मस नहि होइत देखि राजकुमारी अधीर भऽ गेलीह । भेलनि, आब चुप बैसल रहने अनर्थ भऽ जायत । ओ धड़फड़ा कऽ सिंहासनपरसँ उतरलीह । लगमे आबि राजकुमारक हाथ पकड़ि लेलथिन आ राजा दिस ताकि कऽ कहलथिन-पिताजी ! ई युवक पहिल लोक छथि जे हमरा सन लोथ आ कुरूपासँ विवाह करबाक लेल तैयार भेल

छलाह ! आइ हमरा जे ई रूप भेटल अछि, सेहो यैह देलनि अछि । हम तँ ओही दिन हिनका मोने मोन अपन वर मानि लेने छलियनि जहिया मांसक पिण्ड सन घिनाओन रूप देखियो कऽ हमरासँ विवाहक हेतु तैयार भऽ गेल छलाह । परन्तु अहाँ एकटा विकट शर्त दऽ हिनका अन्ध सुरंगमे ढुका देने छलियनि जे ई पलटि कऽ फेर नहि आबथि । हिनका सुरंग दिस जाइत देखि ओहू दिन हमरा आँखिसँ नोर बहल छल । विश्वास राखू, । हम हिनका संग कऽनो-खुद्दी आ सागो-रोटी खा कऽ गुजर कऽ लेब ।'

राजकुमारकेँ कनेको अनुमान नहि छलैक जे फुलकेसरिकुमरि एना कऽ सकैत छैक । ओ राजकुमारीक हाथसँ अपन हाथ छोड़बैत बाजल- राजकुमारीजी ! भावुकतामे नहि बहू । एतेक छोट सन उपकारक हम एते पैघ मूल्य नहि लऽ सकै छी । अहाँ भेलहुँ राजाक बेटी । गरीबक जिनगीक अनुभव अहाँकेँ नहि अछि, तेँ भावुकतावश जीवनक एतेक पैघ निर्णय कऽ रहल छी । हमरा संग अहाँक निर्वाह नहि भऽ सकैत अछि । अहाँ अपन स्वरूप ओ नामहुसँ फुलकेसरि छी । मड़ुआक खेतमे कतहु केसरक फूल लगलैए ?'

बनिसारसँ मुक्त भेल राजकुमार ओ युवक सब, राजा आ राजकुमारीक ई वार्त्तालाप मौन भावसँ सुनि रहल छल । सुनैत-सुनैत ओहि राजकुमार सबमेसँ एकटा बाजल- महाराज ! राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिक हेतु सबसँ उपयुक्त वर यैह युवक छथि से तँ सिद्ध भऽ गेल अछि । हम सब तँ एहि युवककेँ धन्यवाद दऽ कऽ प्रस्थान करबाक लेल छलहुँ । परन्तु अपन मुक्तिदाता एहि युवकक आग्रहेँ थम्हि गेल छलहुँ । आब तँ राजकुमारी सेहो अपन इच्छा जनाइये देलनि जे सर्वथा उचिते अछि । आब हमरा सबकेँ जयबाक आज्ञा दी ।'

सब ओकरा सहमतिमे 'हँ हँ' करऽ लागल ।

राजाक संकेतपर अन्तःपुरक प्रहरी सैनिक सब बनिसारसँ मुक्त भेल राजकुमार ओ युवक सबकेँ ससम्मान अरियाति देलक ।

सभक चल गेला पर राजकुमार सेहो कऽल जोड़ि कऽ राजाकेँ कहलकनि- महाराज ! बिरधन हमर मित्र अछि जे एखने बनिसारसँ बहरायल अछि । आब बुढ़िया मौसी अपन पोताकेँ लऽ कऽ जायत, तेँ

ओकरे संग हमरो दुनू गोटेके जयबाक हुकुम देल जाय । मौसी अछि गरीब तेँ बेसी दिन ओकर भार नहि बनबै । दू-एक दिन रहि हम दुनू मित्र अपन देश विदा भऽ जायब । अपन लोक-वेद, परिवार-समाजसँ बिछुड़ना बहुत दिन भऽ गेल । मोन आतुर भऽ रहल अछि ।'

कामदेवसेन बजलाह– युवक ! आब अपन बुढ़िया मौसी आ अपन मित्रक चिन्ता नहि करबाक छह । ओकर सब व्यवस्था राज दिससँ करबाक आदेश हम किछु काल पहिनहि दऽ देलियैक अछि । आब तोँ अपन चित्त स्थिर करह । हम जे वचन घोषित कयने छलहुँ से वचनवद्धता तँ हमरा अछिहे । तोँहू तँ राजकुमारीक पूर्व रूप देखियो कऽ विवाहक वचन देने छलह । हँ, राजकुमारी जँ अस्वीकार कऽ देने रहितथुन तँ अवश्ये हमरा धर्मसंकट भऽ जाइत मुदा से तँ राजकुमारी सेहो तोरे वरण कयलथुन । तखन आब कोन बाधा छैक ?'

33

राजा कामदेवसेनकेँ अपन बेटीक मनोभाव बुझबामे आबि गेलनि । संगहि इहो बुझबामे आबि गेलनि जे ई युवक अपन साधारण रूप-रंग आ गरीबीक कारणे फुलकेसरिकुमरिकेँ स्वीकार करबा लय तैयार नहि अछि ।

राजाकेँ अपन वचन ओ बेटीक इच्छाक पूर्त्ति लय जे किछु करऽ पड़ितनि ताहि लेल ओ तैयार छलाह । ओ एकटा औरो युक्ति दैत कहलथिन– युवक ! हम बुझि गेलहुँ– जे तोँ अपन गरीबीसँ त्रस्त छह । गरीबक बेटा भऽ कऽ एकटा राजाक जमाय बनबामे तोरा संकोच होइत छह । तँ कोनो बात नहि, हम अपन वचनक अनुसार विवाह कयनिहार वरकेँ बादमे आधा राज बाँटि कऽ दितिऐ, मुदा हम तोरा पहिनहि आधा राज बाँटि कऽ दै छियह, ओकर बाद हम तोरासँ नहि, एकटा राजासँ अपन बेटीक विवाह करब, आब भेलह !'

राजकुमारकेँ बुझयलैक जे राजा तँ अपन चतुरतासँ ओकरा फँसा देलथिन अछि । ओ फेर हुनकर प्रस्तावकेँ नकारैत बाजल– महाराज ! हम गरीब लोक छी । हमरा राजपाट नहि चलबऽ अबैत अछि । हमरा सन अपटु लोककेँ आधा राजपाट देलहुँ, तँ ओहो बिरहा जायत । हम जहिना छी तहिना हमरा जाय दियऽ ।'

अपन वचनपर अड़ल राजा कहलथिन– सुनह युवक ! एतेक जिद्द ठीक नहि । राजमुकुट आ राजदण्ड से वस्तु होइत अछि जे ओ केहनो दरिद्रकेँ महान धनवान बना दैत अछि । केहनो कुरूपकेँ रूपवान बना दैत अछि आ केहनो छोट-क्षुद्र कुलक लोककेँ कुलीन बना दैत अछि । जखने राजा बनबह कि तखने धन, रूप आ कुल– ई तीनू वस्तु अनेरे तोरा भेटि जयतह । तोहर मोनमे जमल अपन हीनताक भाव बिला जयतह । सेहो नहि, तँ फेर हमर कुल तँ अछिहे कि ने ! हमरे कुलसँ तोँ अपनाकेँ कुलीन बुझिहह ।' फेर राजा अपन राजपुरोहित दिस तकैत बजलाह– राजपुरोहितजी एहि युवकक राजतिलकक तैयारी एखनहिँ आरम्भ करू ।'

राजकुमारकेँ भेलैक जे केसरपुरक राजा अपन आधा राजपाट दऽ कऽ ओकर कुलकेँ उकटि रहल छथिन । मनुक्ख सब अपमान सहि सकैत अछि, मुदा ओकरा अपन कुलक अपमान नहि सहाज होइत छैक । गरीब ओ सामान्य रूपक युवकक अभिनय कऽ रहल राजकुमार शत्रुजीतक अपन कुलाभिमान ओ स्वाभिमान एके बेर जागि उठलैक । ओ एकाएक जोरसँ बाजि उठल-राजा कामदेवसेन ! बन्द करू ई अपन राजतिलकक तैयारी । हम ने कुलसँ हीन छी, ने धनसँ हीन छी आ ने रूपसँ हीन छी । हम नाम-गाम विहीन, अनाथ आ टुअर-टापर नहि छी । हमरो माता-पिता छथि, भाइ-भाउजि छथि । बड़काटा परिवार अछि, सऽर-सम्बन्धी, कुटुम्ब-परिजन लोकनि छथि । बिना पिता-माताक अनुमतिएँ हम ई विवाह नहि कऽ सकैत छी ।'

राजाक प्रति ओहि युवकक एहन सम्बोधन सुनि ओतऽ ठाढ़ सभ लोक अवाक् रहि गेल । अन्त:पुरक प्रहरी लोकनिक हाथ तरुआरिक मुठपर चल गेलैक ।

राजा कामदेवसेनक मुँह तमतमा उठलनि । ओ किछु बजितथि, ताहिसँ पहिने राजकुमार ओही सुरमे बजैत रहल- केसरपुर नरेश ! अहाँ पैघ राजा छी तँ रहू, हमहूँ थिकहुँ रतनपुर राजक महान राजा प्रसेनजीतक छोट राजकुमार शत्रुजीत । कतेको राजा हमरहुँ पिताक मातहतमे रहैत छथिन । हमर पिताकेँ अपने बड़ पैघ राज-पाट छनि । हम अहाँक राजपाट लऽ कऽ की करब ? राखू अपन राजपाट ।'

ओतऽ ठाढ़ लोक सभकेँ भेलैक जे ई युवक प्रायः बताह भऽ गेल अछि । एहनो बगय-बानि, एहन साधारण मुँह-कानबला लोक कतहु रतनपुरक महान राजाक बेटा भऽ सकैत अछि ? सबकेँ भेलैक जे अवश्ये ई युवक फूसि बाजि कऽ सबकेँ ठकि रहल अछि ।

क्रोधित मुख्य प्रहरी युवक दिस बढ़ऽ लागल कि राजा कामदेवसेन ओकरा रोकि देलथिन ।

ताबत सब देखैत अछि जे युवक अपन आङुरक नहसँ अपन कपारकेँ खखोड़ि रहल अछि । सबकेँ विश्वास भऽ गेलैक जे ठीकेमे ई युवक बताह भऽ गेल अछि । अपन बतहपनीमे फुलेकेसरि सन राजकुमारीसँ विवाहक एहन स्वर्णिम अवसर आ राजपाटकेँ त्यागि देलक आ आब अल्ल-बल्ल बजैत अपनेसँ अपन मुँह-कान नोचि रहल अछि । ओ तँ रच्छ रहल जे ई अपनेसँ एहि विवाहकेँ अस्वीकार कऽ देलक । नहि तँ आइ की होइत ! जन्मक एतेक दिनक बाद राजकुमारीकेँ जँ सरूपो भेटलनि तँ कपारपर बताहे बथा जैतनि ।

मुदा आहि रे बा ! ई की ? सब देखलक जे ओहि साधरण युवकक मुँह-कान आ देह-हाथपर जमल पपड़ी चर्र-चर्र कऽ ओदरल जा रहल छल आ देखिते-देखिते मलिछौन वस्त्रमे एकटा सुन्दर आ भव्य युवक ओहि ठाम अवतरित भऽ उठल ।

युवकक ई गन्धर्व रूप देखि कऽ तँ सब छकित भऽ दाँते आङुर काटऽ लागल । जेहने अप्सरा सन सुन्नरि राजकुमारी फुलकेसरिकुमरि तेहने गन्धर्व सन सुन्दर युवक । वाह रे विधाता ! केहन दुनूक भव्य जोड़ी बनौलनि !

राजा कामदेवसेनक तँ प्रसन्नताक ठेकाने नहि रहलनि । ओ मुरुत जकाँ ठाढ़ भेल राजकुमारकेँ हृदयसँ लगबैत कहलथिन-राजकुमारजी ! आब तँ अहाँक वास्तविकता सभक सामने उजागर भऽ गेल । आब तँ 'नहि' कहबाक कोनोटा बहाना नहि रहि गेल । परन्तु अहाँक विचारक हम सम्मान करैत छी जे अपन पिता-माताक सहमति-अनुमतिक बिना विवाह नहि करब । आब जखन अहाँ अपन असल परिचय दऽ देलहुँ तँ अहाँक पिता-माता लग हम अपन कन्याक विवाहक प्रस्तावक विनय-पत्रिका लऽकऽ मन्त्री ओ

राजपुरोहितकेँ पठा रहल छियनि । हम हुनका लोकनिक अनुमतिक प्रतीक्षा करब । हमर आत्मा कहैत अछि जे महाराज प्रसेनजीत सन महान् आ उदार राजा हमर विनम्र प्रार्थना अवश्य स्वीकार करताह । जाबत हुनक उत्तर नहि आबि जाइत अछि, ताबत अहाँ हमर अतिथि रूपमे अतिथिशालामे निवास करी, से आग्रह ।'

राजमहल छोड़लाक बाद राजकुमार अनजान दिशामे, अनजान देशमे रहैत फुलकेसरिकुमरिक खोजमे दिन-राति चलैत रहल छल । साधारण लोक जकाँ चल जाइत शत्रुजीतकेँ अमीरी-गरीबी, मान-अपमान, सुख-दुखक सहज अनुभव होइत गेलैक । कहियो घृत-घना, कहियो मुट्ठी चना आ कहियो ओहो मनाक भोग-भोगैत शत्रुजीतक तुनकाह आ तरङाह स्वभाव, मनक प्रतिकूल छोटो सन बात पर बमकि-बमछि उठबाक चालि जेना एकदमसँ बिसरा गेल छलैक । परन्तु तखन राजा कामदेवसेनक गप्पपर ओकर राजमहलमे रहैत कालक तरङाह स्वभाव जेना एके बेर विस्फोट कऽ गेलैक ।

अचानक शत्रुजीतकेँ भेलैक जे ओ आवेशमे आबि कऽ एना किएक बाजि गेल ? राजा कामदेवसेनकेँ ओकर असली परिचय बुझले नहि छलनि तँ ओ की करितथिन !

राजकुमारक उत्तेजना जखन किछु कम भेलैक तँ ओकरा अपन व्यवहारपर अपने ग्लानि होअऽ लगलैक । ओ राजा कामदेवसेनक समक्ष हाथ जोड़ैत कहलकनि– राजन् ! क्रोधमे हमरासँ जे किछु अनट-सुनट बजा गेल, तकरा अपने क्षमा कऽ देल जाय ।'

राजा हँसैत कहलथिन-राजकुमार ! अहाँक ई क्रोध तँ हमरा लेल वरदाने साबित भेल अछि । हम तँ तखने बुझि गेलहुँ, जखन अहाँ ओहन असाध्य काज पूरा कयने चल अबैत रहलहुँ । हमरा बुझायल जे अहाँ कोनो असामान्य व्यक्ति थिकहुँ । तकर बादो जेना अहाँ राजकुमारी आ हमर आधा राजपाटकेँ ठोकरयबा लेल तैयार छलहुँ, से देखि सन्देह और गाढ़ भऽ गेल जे एहन सन्तोष आ त्याग कोनो असाधारण स्वाभिमानी लोकहिसँ सम्भव अछि । अहाँक वास्तविकताकेँ सभक सामने देखारे करबाक हेतु हम जानि-बूझि कऽ ओना कयलहुँ, अहाँकेँ उकसौलहुँ आ हमर जे सन्देह छल से सत्य सिद्ध भऽ गेल ।'

राजकुमारकेँ बुझा गेलैक जे केसरपुर नरेश महाराजेटा नहि मनुष्यक कुशल पारखी सेहो छथि । अनुभव, ज्ञान, धैर्य ओ चातुर्यमे ओ ककरोसँ कम नहि छथि ।

केसरपुरक राजाकेँ तँ आब प्रसन्नताक ठेकान नहि छलनि । जाहि फुलकेसरिकुमरिक जन्मक बादसँ राजा कहियो हँसल नहि रहथि से आब खुसीसँ धरतीपर हुनकर पैर नहि पड़ि रहल छलनि । माँसुक थिम्हा सन फुलकेसरिकुमरिकेँ दिव्य काया प्राप्त भऽ गेल छलनि । वीर, साहसी, सुन्दर राजकुमार शत्रुजीत सन जमाय भेटऽबला छलथिन । राजा जेना धन्य-धन्य भऽ उठलाह ।

34

शत्रुजीतक माता-पिताक दिससँ विवाहक अनुमति भेटबाक अवधि धरि अतिथिशालामे रहबाक कामदेवसेनक आग्रहपर शत्रुजीत बाजल जे– नहि, ताबत धरि हम अपन बुढ़िया मौसीक घरमे रहब । जँ पिताक अनुमति भेटत तँ आबि कऽ फुलकेसरिकुमरिसँ विवाह करबनि, नहि तँ ओम्हरहिसँ चल जायब ।'

कामदेवसेन शत्रुजीतकेँ जेना-तेना बुझा-सुझा कऽ राजमहलक अतिथिशालासँ फराक एकटा स्वतन्त्र भवनमे रहबाक लेल मनौलनि । ओही भवनमे बुढ़िया मौसी, ओकर पोता किसना ओ विरधनक रहबाक व्यवस्था कयल गेल । केसरपुर राज दिससँ सब सुविधाक इन्तजाम अछैतो शत्रुजीत ओहि भवनमे एकटा स्वतन्त्र परिवार जकाँ रहि सकैत छल ।

राजकुमार शत्रुजीतक उत्तेजनाक शान्ति तथा रहबाक नीक तरहेँ व्यवस्था कयलाक बाद कामदेवसेन अपन मन्त्री सुमतिबल एवं राजपुरोहित धर्मनिधिकेँ राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिक विवाह राजकुमार शत्रुजीतक संग करबाक प्रस्तावक विनयपत्री लऽ कऽ राजा प्रसेनजीतक ओतऽ जयबाक भार देलथिन ।

दुनू विश्वस्त दूत ओ हुनक परिचर सभक तेजगतिसँ रतनपुर जयबाक आ ओतऽसँ उत्तर लऽकऽ शीघ्र अयबाक व्यवस्था कयल गेल । मन्त्री सुमतिबल ओ राजपुरोहित धर्मनिधि तुरन्त रतनपुर दिस प्रस्थान कऽ गेलाह ।

दूतकेँ विदा कयलाक बाद कामदेवसेन विवाहक व्यवस्था करबामे लागि गेलाह । परन्तु मनमे एकटा दुगदुगी पैसि गेलनि जे शत्रुजीतक

माता–पिता जँ एहि विवाहक लेल अपन अनुमति–सहमति नहि देलथिन तँ की होयत ? शत्रुजीत छथि एकबोलिया स्वभावक । जे बाजि देथि ताहिपर अटल–डटल रहनिहार । जे ठानि लेथि से कऽ कऽ छोड़थि ।

फेर कामदेवसेन अपनहिसँ अपन मनकेँ सान्त्वना देथि जे हम तँ अपन आदिसँ अन्त धरिक सब वृत्तान्त लिखिये देने छियनि । राजा प्रसेनजीत विचारवान् राजा छथि । ओ अपन विवेककेँ नहि छोड़ताह आ अनुमति देबे करताह । जँ से नहि भेल तँ हम स्वयं जाय निवेदन करबनि ।

केसरपुरक दिससँ रतनपुर गेनिहार दूतक हाथेँ शत्रुजीत अपन रानीमाँकेँ जहिया पत्र लिखि कऽ पठौलकनि तहियासँ ओकरा अपन घरक सुधि आबऽ लगलैक ।

क्रोधावेशमे महल छोड़ि कऽ बाहर भऽ गेल छल तँ एकटा ईर भऽ गेलैक । एकटा धुनि सबार भऽ गेलैक । अपन लक्ष्य धरि पहुचबाक सूरिमे कहियो ने सोचलक जे ओकर चल अयलाक बाद पिता आ मातापर की बीतल होयतनि ? महलक लोक आ प्रजावर्ग की सोचने होयत ? परन्तु आब दिन–राति अपन अतीतक चिन्तामे लागि गेल जे पिताश्री तँ उचिते रुष्ट भेल होयताह आ एखन धरि हुनकर रोष कम नहिएँ भेल होयतनि; परन्तु रानीमाँक मन हमरा विषयमे एखन केहन छनि से के कहत ? एखनो तमसाइलिए होयतीह, कि तामस कम भेल होयतनि ? पहिनहि जकाँ आबो हमरा पर सिनेह रखतीह की नहि ?

स्वर्णावतीकेँ हम सब दिन मानसिक पीड़ा दैत रहलियनि मुदा ओ कहियो किछु बजलीह नहि । आब जखन हम महलमे नहि छी, तखन केहन लगैत होयतनि ? की सोचैत होयतीह ?

राजकुमारकेँ अपन प्रिय घोड़ा ऋतुराज बेर–बेर मन पड़ैत रहलैक । रतनपुर राजक सीमापरसँ राजकुमार शत्रुजीतक बिना आपस होइत काल ऋतुराजक आँखिमे जे पीड़ा ओ देखने छल से मोन पड़ैत देरी ओकर आँखि ढबढबा गेलैक ।

राजकुमारक मनक ओझरओट निरन्तर बढ़ले जा रहल छलैक । अपन रानीमाँक समक्ष बाजि कऽ आयल छल जे आब फुलकेसरिकुमरिसँ विवाह कैये कऽ महलमे पैर देब ।

केसरपुरक एहि भवनमे रहैत राजकुमार सोचैत रहैत छल जे फुलकेसरिकुमरि तँ भेटि गेलीह, ठीक ओही रूपमे जाहि रूपमे हुनकर ख्याति छनि । ओ हमरा वरणो कयलनि स्वेच्छासँ । हम महाराज कामदत्तसेनकेँ फुलकेसिरकुमरिसँ विवाह करबाक सहमति देलियनि किन्तु शर्त्तक संग जे हमर माता-पिता सहमति-अनुमति देताह तखन । आब जँ पिताश्री आ रानीमाँ विवाहक अनुमति नहि देथिन तँ ओहन परिस्थितिमे हम बी करब ? एहि धर्म संकटसँ कोना उबरब ?

एही गुनधुनमे राजा आ राजकुमारक समय बीतल जा रहल छल ।

35

रतनपुर राजक राजधानीमे कामदेवसेनक विशेष दूत बनि कऽ मन्त्री सुमतिबल ओ राजपुरोहित धर्मनिधि अयलाह अछि, ई समाद जखन प्रसेनजीतकेँ देल गेलनि तँ हुनका आश्चर्य ओ उत्सुकता भेलनि । ओ दुहू अतिथि ओ हुनक परिचर लोकनिकेँ राजकीय सम्मानक संग अतिथि-निवासमे विश्रामक व्यवस्थाक आदेश देलथिन । संगहि दुहू दूतकेँ समाद देलथिन जे काल्हि राजसभामे अपन अयबाक प्रयोजन उपस्थित करथि ।

सुमतिबल ओहि समदियाक माध्यमसँ राजा प्रसेनजीतक निकट निवेदन पठौलथिन जे- राजाश्रीक दर्शन एकान्तमे करऽ चाहैत छी आ तखनहि हम अपन स्वामी राजाक विनय-पत्री अर्पित करबाक अनुमति चाहैत छी ।'

दोसर दिन अपन एकान्त कक्षमे प्रसेनजीत केसरपुरक दुनू दूतकेँ भेटक अवसर देलथिन । मन्त्री सुमतिबल ओ राजपुरोहित धर्मनिधि बहुत रास उपहार लऽ कऽ ओहि ठाम पहुँचलाह । दुनू गोटे पहिने राजा प्रसेनजीतक अभिवादन कयलथिन । राजाक संकेत पर आसन ग्रहण कयलनि । राजा प्रसेनजीत हुनका लोकनिक तथा हुनक राजा कामदेवसेनक कुशल-क्षेम पुछलाक बाद अयबाक प्रयोजन जनयबाक संकेत कयलथिन ।

सुमतिबल आ धर्मनिधि लक्षित कऽ रहल छलाह जे राजाक मुखमण्डलपर एकटा उदासी पसरल छनि । ओ जे किछु कुशलादि ओ अन्यान्य जिज्ञासा करैत छथि ताहिमे आत्मीयता कम आ राजनयिक मर्यादाक निर्वाह अधिक कऽ रहल छथि ।

कोनो राजदूतक सबसँ पैघ गुण ई होइत छैक जे ओ श्रोता राजा वा राजपुरुषक मनोभावकेँ तुरन्त परखि लिअय । सुमतिबल ओ धर्मनिधि-दुहू व्यक्तिमे ई गुण छलनि ।

काल्हि जखन ओ लोकनि पहुँचल छलाह तखन हुनक आवास ओ स्वागतादिक व्यवस्था कयनिहार सेवक गणमे सेहो उदासीक भाव लक्षित भेल छलनि । गोटेक सेवकसँ अस्फुट रूपमे इहो ज्ञात भेलनि जे राजाक छोट राजकुमार किछु वर्ष पूर्व रूसि कऽ चल गेलथिन से आइ धरि ने पलटि कऽ अयलथिन, ने हुनक कोनो कुशल-क्षेम भेटलनि अछि एखन धरि ।

सुमतिबल ओ धर्मनिधिकेँ बुझबामे कोनो भाङठ नहि रहलनि जे राजाक आ राज-परिचर जनक उदासीक कारण थिक राजकुमार शत्रुजीतक चिरकालिक अज्ञातवास ।

ककरहु अकस्मात् शुभ ओ सुखद संवाद सुनयबाक अवसर ओ तकर आनन्दे अद्‌भुत होइत छैक । ओ अवसर आइ दुहू व्यक्तिकेँ भेटि रहल छलनि । तेँ ओ लोकनि अत्यन्त उल्लसित आ उत्साहित छलाह ।

सुमतिबल अभिवादन करैत कहलथिन-श्रीमान् ! सबसँ पहिने ई समाचार दियऽ चाहैत छी जे अपनेक छोट राजकुमार शत्रुजीत सकुशल छथि आ एखन केसरपुरक राजअतिथिक रूपमे छथि ।'

शत्रुजीतक एकाएक तमसा कऽ चल गेलाक बाद राजा खिन्न रहऽ लागल छलाह । शत्रुजीतकेँ तकबाक ओ बहुत प्रयास कयलनि । मुदा एखनधरि कोनो सफलता हुनका नहि भेटि सकल छलनि । से, आइ पहिल बेर एतेक समयक बाद शत्रुजीतक सम्बन्धमे सूचना पाबि ओ आनन्दसँ भरि गेलाह । शत्रुजीतक नाम सुनैत देरी प्रसेनजीत एकाएक साकांक्ष भऽ उठलाह । हुनका एकाएक आनन्दक अतिरेक भऽ उठलनि । ओ जिज्ञासा करऽ लगलथिन-कुमार शत्रुजीत ! कतऽ छथि ? कोना छथि ? निकेँ छथि किने ? कहिया पहुँचलाह केसरपुर ? कोना कऽ पहुँचलाह ओतऽ ? कोनो अपराध तँ ने भेलनि हुनकासँ ? एतेक दिन कतऽ छलाह ? की करैत रहल छलाह ?'

आतुरतामे राजा प्रसेनजीत प्रश्नक झड़ी लगा देलथिन । ओ औरो प्रश्न सब पुछितथिन परन्तु सुमतिबल राजाक समक्ष हाथ जोड़ि कऽ कहलथिन-क्षमा

कयल जाय महाराज ! राजकुमार शत्रुजीतक सम्बन्धमे कयल एहि जिज्ञासा सभक उत्तर हमरा सब लग नहि अछि । हमरा लोकनि सर्वथा अनभिज्ञ छी । हम सब ओतबे जनैत छी जतबा हमर सभक राजाश्री कहलनि । अधिक बात ओ अपन गोपनीय पत्रमे अवश्ये जनौने होयताह ।'

सुमतिबल सोना-चानीसँ मढ़ल, मूल्यवान् रत्न सब जड़ल अति सुन्दर चङेरीमे कामदेवसेनक विनयपत्री राखि प्रसेनजीतकेँ अर्पित करैत कहलथिन- श्रीमान् ! ई हमर राजाश्रीक विनयपत्री थिकनि । एकरा ग्रहण कयल जाय आ एकर उत्तर देबाक कृपा कयल जाय । पत्र अत्यन्त गोपनीय छैक । सभक समक्ष एकर वाचन नहि हो तेँ अपनेसँ एकान्तमे दर्शनक निवेदन कयल । हमर राजाजीक निवेदन छनि जे केवल श्रीमाने एकरा पढ़ी ।'

प्रसेनजीत सहमतिक संकेत देलथिन ।

ओहने एकटा दोसर चङेरीमे राजपुरोहित धर्मनिधि एकटा दोसर पत्र राखि राजाकेँ अर्पित करैत कहलथिन- श्रीमान् ! राजकुमार शत्रुजीत ई पत्र अपन रानीमाँकेँ देबाक लेल पठौने छथि । एकरा हुनका लग पठबा देल जाइनि ।'

आन अबसर रहैत तँ एहन खुसीक समाद कहबाक हेतु राजा अपनहि रानी कर्णावती लग चल जैतथि । परन्तु दू गोट अनठीया प्रतिष्ठित लोकक समक्ष एना करब मर्यादाक अनुकूल नहि बुझलनि । ओ एकटा दासीक हाथेँ धर्मनिधिक देल चङेरी सहित पत्र रानी कर्णावती लग पठबा देलथिन ।

राजा प्रसेनजीत दुनू दूतकेँ शीघ्रे उत्तर देबाक आश्वासन दऽ कऽ अतिथि-निवास दिस विदा कयलथिन । एकान्तक क्षण पाबि ओ उत्साह ओ उत्सुकतासँ कामदेवसेनक पत्र पढ़ऽ लगलाह । पत्रमे कामदेवसेन सन्तान-प्राप्तिक सम्बन्धमे मुनिक देल ओ वरदान ओ जेठि कन्या फुलकेसरिकुमरिक जन्मसँ लऽ कऽ शत्रुजीतक द्वारा अदम्य साहससँ दुर्लभ 'हँसनी पान ओ बजन्ता सुपारी' आनि फुलकेसरिकुमरिक काया-पलट करबाक सकल वृत्तान्त लिखने छलथिन । अन्तमे निवेदन कयने छलथिन जे- फुलकेसरिकुमरिक विवाहक हेतु देल गेल हमर शर्त्तकेँ पूरा कयनिहारक संग हुनक विवाह करयबाक देल वचन तथा राजकुमारी फुलकेसरिकुमरि द्वारा शत्रुजीतकेँ वर रूपमे वरण कयलो उत्तर राजकुमार शत्रुजीत माता-पिताक सहमति आ अनुमतिक बिना विवाह करबाक लेल एकदम

तैयार नहि छथि । तें अपनेक सहमति आ अनुमतिक हेतु विनयपत्री लऽ कऽ हमर सबसँ विश्वस्त मन्त्री सुमतिबल आ राजपुरोहित धर्मनिधि उपस्थित भेल छथि ।'

एक बेरमे सन्तोष नहि भेलनि तँ पत्रके फेरसँ पढ़ि गेलाह । अपन छोट राजकुमार शत्रुजीतक कामदेवसेन द्वारा कयल गेल अति प्रशंसासँ जेना प्रसेनजीतक हृदय हुलाससँ भरि गेलनि ।

36

रानी कर्णावती जहिया शत्रुजीतकें कठोर भऽ कऽ डँटने छलथिन, तकर दू-चारि दिन बाद धरि हुनका होइत छलनि जे राजकुमार तामसपर महल छोड़ि कऽ चल गेलाह अछि । तामस शान्त भेलापर अपने चल औताह । कखनो कऽ सन्देहो होइत छलनि जे ओ छथि जिदियाह आ एकबोलिया । आनिपर कहीं नहियों ने आबथि । रानीक सन्देह एकदम सत्य भऽ गेलनि । कतोक समय बितियो गेलापर शत्रुजीत आपस नहि आयल ।

गृहत्यागक किछु समयक बाद जखन जादूगर शत्रुजीतक वस्त्राभूषणक पोटरी आ चिट्ठी कर्णावतीकें देने छलनि तँ किछु दिन धरि ओ भरोस बन्हने रहलीह । बीच-बीचमे जादूगरकें बजा कऽ राजकुमारक विषयमे ओतबे बात बेर-बेर सुनैत छलीह जे बात सब पहिल बेर जादूगर कहने छलनि । कर्णावती जादूगरकें बेर-बेर खोधिया-खोधिया कऽ शत्रुजीतक सम्बन्धमे पुछैत छलथिन । जादूगरकें कहबाक लेल कोनो नव बात तँ छलैक नहि तथापि शत्रुजीतक सम्बन्धमे ओतबे बात सुनि सुनि कऽ कर्णावतीकें सन्तोष होइत छलनि । किन्तु से कतेक दिन चलैत ! ओ राजकुमारक सम्बन्धमे नाभरोस भऽ गेलीह ।

कर्णावतीक चिन्ता बढ़ैत गेलनि । शरीर घटैत गेलनि । मन अवसन्न रहऽ लगलनि ।

पूत कतबो कपूत भऽ जाउक मुदा मायक ममता कहियो कम नहि होइत छैक । से, कर्णावती अपन पुत्रक चिरबिछोहमे खटबास-पटबास लऽ लेलनि । खयनाइ-पिउनाइ कम होइत गेलनि । शरीर रोगी-टट्टी जकाँ दुर्बल भऽ गेलनि । बेसी काल ओ पड़ले रहऽ लगलीह । रानीक हाल देखि राजा सेहो सतत काल चिन्तित रहऽ लगलाह ।

पुतोहु स्वर्णावती हुनक परिचर्यामे अपनहि लागल रहैत छलीह। हुनका मनमे कचोट होइत रहैत छलनि जे हुनकहि कारण रानीमाँ छोट राजकुमारकेँ डँटने छलथिन।

कर्णावती बरमहल सोचैत रहैत छलीह आ बजितो रहैत छलीह जे- हमरा कोन दुरमतिया घेरलक जे छोट राजकुमारकेँ ओना भऽ कऽ डँटलियनि, जे ओ अपन देश-कोस त्यागि कऽ चल गेलाह।'

स्वर्णावती हुनका बोल-भरोस दैत रहैत छलथिन जे- राजकुमार अत्यन्त बुधियार छथि। अवश्ये अपन वचन पूरा कऽ कऽ औताह।'

ओहि दिन साँसे राजमहलमे काने-कान ई बात पसरऽ लागल जे आन राजसँ कोनो दूत आयल छैक। ओ प्रायः राजकुमार शत्रुजीतक सम्बन्धमे कोनो सूरि-पता देबऽ आयल छैक। चारू कात गुलगुल-गुलगुल तँ होइत छलैक, मुदा रानी कर्णावती धरि ई बात पहुँचयबाक साहस ककरो ने होइत छलैक- के जानय, बात सत्त छैक कि फूसि!'

ओही बीचमे राजाक पठाओल चङेरीमे पत्र लेने एकटा दासी रानी कर्णावती लग पहुँचलि। ओ रानीकेँ कहलकनि जे- ई छोट कुमरजीक पत्र छियनि जे राजाश्री पठौलनि अछि।'

छोट कुमरजी अर्थात् शत्रुजीतक प्रसंग सुनि रानी कर्णावती दुर्बल रहितो फुरफुरा कऽ उठलीह आ हलसि कऽ चङेरीमे राखल पत्र उठा लेलनि। ओ तुरन्त ओकरा फोलि कऽ पढ़ऽ लगलीह।

शत्रुजीत पत्रमे लिखने छलनि जे- रानीमाँ! अपन उद्धत चालिसँ सब दिन अहाँकेँ दुखी करैत रहलहुँ। अपन सुशीला गुणवती भौजी स्वर्णावतीकेँ सब दिन अपमानित करैत रहलियनि। एहि सब लय हमरा दण्ड भेटबाक चाही। अहाँकेँ जखन सहाज नहि भेल तँ हमरा दण्ड नहि दऽ कऽ अत्यन्त कठोर भऽ डँटलहुँ। परन्तु हमरा तँ दण्ड भेटिये गेल जे हम एते दिन धरि छिछियाइत रन-बनक पात तोड़ैत रहलहुँ।'

'अहाँक डँटनाइ हमरा मनमे फुलकेसरिकुमरिकेँ पयबाक आनि उत्पन कऽ देलक। कतेक बौअयलाक बाद फुलकेसरिकुमरि भेटलीह तँ अवश्य परन्तु ओ भेटब कोनो प्रकारक कठोरसँ कठोर दण्डसँ बेसी कठोर आ दुखदायी

छल । रानीमाँ ! हमरा विश्वास अछि जे अहाँक मनमे हमरा लेल ममताक भण्डार अछि । अहाँ अपन डँटनाइयोमे जेना हमरा आशीर्वादे देने छलहुँ । तेँ फेर दोसर बेर जाहि रूपमे फुलकेसरिकुमरि भेटलीह से कोनो देवताक वरदानेसँ सम्भव भऽ सकैत छैक । फुलकेसरिकुमरिक पिता आ केसरपुर राजक राजा कामदेवसेनक शर्त्त हम पूरा कऽ देलियनि । आब ओ अपन वचनक अनुसार अपन बेटी फुलकेसरिकुमरिक विवाह हमरा संग करऽ चाहैत छथि ।'

'रानीमाँ ! अहाँकेँ ओ भौजी स्वर्णावतीकेँ अपन नेनपनक कारणे हम बड़ कष्ट पहुँचौने छी । मुदा आब अहाँक ई छोटका बेटा ओहन उद्धत आ बेकहल नहि रहि गेल अछि, से विश्वास करू । अहाँ जे हमरा डँटैत काल उलहन दैत कहने छलहुँ जे अपने पसिन्न आ जूतिसँ बियाह करब । हमरा ओ बात सदति काँट जकाँ गड़ैत रहल अछि । ओ बात कहैत काल अहाँक मनमे कतेक पीड़ा भेल होयत, से हम आब बुझैत छी । तेँ हम राजाकेँ कहि देलियनि अछि जे अपन माता-पिताक अनुमतिक बिना फुलकेसरिकुमरिसँ बियाह नहि करब । आब खास कऽ जाबत अहाँ अपन सहमति-अनुमति नहि देब, ताबत हम राजकुमारीसँ बियाह नहि करब । तखन, इहो, जे फुलकेसरिकुमरिक बिना अपन राजमहलमे पैर नहि देब से तँ कहिए कऽ आयल छी..... ।'

पत्र पढ़ैत-पढ़ैत रानीमाँकेँ आँखिसँ नोर झहरऽ लगलनि । ओ राजाकेँ किछु समाद पठबितथिन ताहिसँ पहिनहि प्रसेनजीत कर्णावतीक लग पहुँचि गेलाह । राजा किछु बजितथि, ताहिसँ पहिनहि रानी हुनकासँ आतुर भऽ कऽ कहलथिन जे– एको क्षण बिना विलम्ब कयने फुलकेसरिकुमरिक संग शत्रुजीतक विवाहक अनुमतिक संगहि विवाहक दिन सेहो निश्चित कऽ लेल जाय ।'

प्रसेनजीत अपन राजपुरोहितकेँ बजबाय शत्रुजीतक संग राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिक विवाहक शुभ तिथि तकबा लेलनि । तकरा बाद केसरपुरक मन्त्री सुमतिबल ओ राजपुरोहित धर्मनिधिकेँ बजबाय कामदेवसेनक पत्रक उत्तर स्वरूप अपन सहमति-अनुमतिक संग विवाहक शुभ तिथि सेहो सुना देलथिन ।

सुमतिबल ओ धर्मनिधि राजाक अनुकूल उत्तर पाबि अत्यन्त आनन्दित भेलाह । हुनक यात्रा सगुनियाँ सिद्ध भेलनि ।

दुनू पक्षक राजमन्त्री आ राजपुरोहित मीलि कऽ स्थिर कयलनि जे

केसरपुरक राजपुरोहित धर्मनिधि प्रसेनजीतक पत्र ओ विवाहक शुभ समाचार लऽ कऽ आगाँ जाथि आ राजमन्त्री सुमतिबल बरियाती लोकनिकेँ अरियातने केसरपुर पहुँचथि ।

अपन बेटा राजकुमार शत्रुजीतक सकुशलताक समाचार भेटलनि आ संगहि फुलकेसरिकुमरिक संग विवाहक समाद सेहो, तँ कर्णावतीक खुसीक ठेकान नहि रहलनि । एतेक दिनसँ बेटाक वियोगमे खटबास-पटबास देने छलीह से आनन्द मनाबऽ लगलीह । अपन बेटाक धूम-धामसँ विवाहक तैयारीमे लागि गेलीह ।

37

छोटका राजकुमार शत्रुजीतक कुशल-क्षेम भेटबाक ओ राजकुमारी फुलकेसरि कुमरिक संग बियाह होयबाक समाचार राजमहलसँ लऽ कऽ नगरे भरि नहि, अपितु सौंसे रतनपुर राजक गाम-गाममे पसरि गेल । सब ठाम खुसी मनाओल जाय लागल । ढोल-पिपही बाजऽ लागल । नाच-गान, उधब-बधाबा होअऽ लागल ।

चारू भर पसरल आनन्दक लहरिमे राजा प्रसेनजीतकेँ जादूगरक स्मरण भेलनि । जादूगरकेँ ओ बजबा पठौलथिन । जादूगर घोड़सारसँ हकासल-पियासल दौड़ले आयल आ राजाक समक्ष हाथ जोड़ि कऽ ठाढ़ भऽ गेल ।

राजा पुछलथिन-की जादूगर ! एतेक दिनमे तोँ अपन जादूक खेल-तमासा सब बिसरि गेल होयबह ?'

जादूगर विनम्रता पूर्वक बाजल-सिरीजी ! अपराध माफ कयल जाय, हम एते दिन ऋतुराजकेँ छोटका कुमरजीक सरूप मानि कऽ ओकरा सोझाँ अपन जादूक किछु-किछु खेल-तमासा देखबैत रहलियैक अछि । ऋतुराजकेँ बराबरि कहैत रहैत छिऐक जे- तोँ यैह बुझैत रहह जे तोरा पीठपर छोटका राजकुमार बैसल छथुन आ हम हुनका तमासा देखबैत छियनि । तेँ हम अपन हुनर नहि बिसरलहुँ अछि ।'

राजा पुछलथिन जे- एखन ऋतुराजक की हाल छै ?'

जादूगर बाजल-महाराज ! ऋतुराज आब ओते उतफाल नहि होइत

अछि । थोड़-बहुत करबो करैत अछि तँ हमरा पोल्हओला- पुचकारलापर स्थिर भऽ जाइत अछि । मुदा आइ दू-एक दिनसँ ओ बिना कोनो प्रकारक उधम मचौने केवल हिहिआइत रहैत अछि आ अपन मूड़ीकेँ नीचाँ-उपर करैत रहैत अछि । लगैत अछि जेना ओकरा कोनो आगम भऽ रहल छैक ।'

राजा कहलथिन– तोँ ठीके बुझलह जादूगर । जे तोँ पहिल बेर अयलापर राजकुमार दऽ कहने छलाह, से ओ अपन संकल्प पूरा कयलनि । एखन ओ केसरपुरमे छथि आ राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिसँ हुनक विवाह होयतनि । तेँ तोरा बजौलियह जे आब तोँ अपन जादूक खेल-तमासा राजमहलमे देखा सकैत छह । आब तोँ अपना मन भरि लोकक मनोरंजन करह ।'

राजाक बात सुनि कऽ जादूगरक छाती सूप सन भऽ गेलैक । ओ दौड़ले घोड़सार आयल आ ऋतुराजक गरदनिकेँ भरि पाँज कऽ धरैत बाजल- ऋतुराज ! खुसी मनाबह । तोहर स्वामीक समाचार राजाश्री आ रानीमाँ धरि पहुँचि गेलनि अछि । जाहि फुलकेसरिकुमरिक खोजमे ओ तोरा छोड़ि कऽ चल गेल छलथुन से हुनका भेटि गेलथिन ।'

ऋतुराज एके बेर अपन सौंसे देह सिहरा लेलक आ जोर-जोरसँ हिहिआय लागल । जादूगर ऋतुराजकेँ लऽ कऽ घोड़दौड़ मैदानमे गेल । ओहि ठाम जा कऽ जादूगर ओकरा कहलकैक-ऋतुराज ! आइ तोरा एहि मैदानमे जतबा रेकबाक होअह, से रेकह । आइ तोरा केओ ने रोकतह ।

ऋतुराज घोड़दौड़ मैदानमे दौड़ऽ लागल ।

ऋतुराजे किएक, राजमहल आ राजमहलसँ बाहर, नगरोक लोक सब राजकुमार शत्रुजीतक विवाहक ओरियानमे अपसेयाँत भेल दौड़ि रहल छल । ककरो दम धरबाक ओफा नहि छलैक ।

प्रसेनजीतक आज्ञानुसार मन्त्री लोक सभकेँ भिन्न-भिन्न काज सभक भार दऽ रहल छलथिन । कोन काज भेल, कोन काज नहि भेल तकर लेखा-जोखा कऽ ओकरा सबकेँ पूरा करबाक आदेश दऽ रहल छलाह ।

प्रसेनजीतक जतेक मित्र-राजा लोकनि छलथिन तनिका सबकेँ विशेष दूत सब द्वारा बरियातीमे चलबाक हकार पठाओल गेलनि ।

रतनपुरक छोटका राजकुमार शत्रुजीतक विवाह केसरपुरक राजा कामदेवसेनक कन्या राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिक संग होअऽ जा रहल छल। अवश्ये बरियाती बड़ विशाल होइतैक। ओहि बरियातीक सुरक्षा लेल सशस्त्र सैनिकक रहब अनिवार्य छलैक। केसरपुर छलैक बड़ दूर। अनेक राज होइत ओतऽ जयबाक बाट छलैक। से दू-चारि दिनमे नहि पार कयल जा सकैत छल।

एतेक विशाल बरियाती जाही राजमे बिना सूचना प्रवेश करितैक तँ अनेरे ताहि राजमे अकस्मात् कोनो शत्रु द्वारा आक्रमण करबाक भ्रम भऽ जैतैक। प्रसेनजीत बरियातीक यात्रापथमे भेनिहार बाधा सभक सम्बन्धमे गम्भीरतासँ सोच-विचार कयलनि। अन्ततः जाहि-जाहि राज बाटे बरियाती जाइत, ताहि-ताहि राजमे बरियाती लोकनिकेँ निर्विघ्न केसरपुर जयबा ओ अयबाक अनुमति लेबाक हेतु विशेष दूत सब पठाओल गेल।

विवाह-दानक शुभकार्यमे केओ बाधक किएक बनैत ! यात्रा-पथमे पड़निहार सकल राजा लोकनि अनुमति तँ देबे कयलथिन, संगहि अतिथि-सत्कारमे कोनो कमी नहि होयबाक सेहो सहर्ष वचन दैत गेलथिन।

ई सब तैयारी भैए रहल छल कि ओही बीचमे केसरपुरक एकटा विशेष दूत कामदेवसेनक सन्देश लऽ कऽ पहुँचल। सन्देशमे विवाहक अनुमति देबाक आभार आ कृतज्ञता-ज्ञापनक संग प्रसेनजीतकेँ स्वयं अयबाक हेतु आग्रह कयल गेल छलनि।

अन्ततः जेठ राजकुमार विश्वजीतकेँ राजाक अनुपस्थितिमे शासन-व्यवस्थाक भार देल गेलनि। हुनक सहायताक लेल मुख्य सेनापति आ किछु मन्त्रीगणकेँ राजधानीमे रहबाक आदेश देल गेल।

जेठ राजकुमार विश्वजीतकेँ तमसा कऽ पड़ा गेल अपन छोट भाइसँ भेट करबाक तथा हुनक विवाहोत्सवमे सम्मिलित होयबाक उत्कट अभिलाषा छलनि। परन्तु जेठ राजकुमार होयबाक कारणे राजधर्म निर्वाहक जे दायित्व देल गेल छलनि तकर अवज्ञा कोना करितथि ? तेँ अपन मनक अभिलाषाकेँ मनमे दबौने रहि गेलाह।

निश्चित दिन रतनपुर राजसँ साजि-धाजि कऽ बरियाती विदा भेल। हाथी, घोड़ा, पालकी, खड़खड़िया, रथ सभक तँ धरोहि लागि गेल।

स्वजन-परिजन, कर-कुटुम, सर-सम्बन्धी, गाजा-बाजा, नर्त्तक-गायक, सैनिक-सिपाही, नोकर-चाकर, दास-खबास आदि कतेक लोक ओहि बरियातीमे छल तकर एत्ता नहि ।

38

चलैत-चलैत कतेको दिनमे रतनपुरक बरियाती केसरपुरक सीमापर पहुँचल । केसर फूलक बहुलता आ सर्वत्र केसरिया रंग देखिए कऽ बरियाती लोकनि अनुमान कऽ लेलनि जे एहि ठामसँ केसरपुर राजक सीमा प्रारम्भ होइत छैक ।

केसरपुरक सीमापर पथप्रदर्शक लोकनिक एकटा समूह पहिनहिसँ तनात छल । पथप्रदर्शक सब बरियाती सबकेँ अरियातने -अरियातने केसरपुर नगरक मुख्य द्वार धरि अनलक ।

ई भव्य बरियाती जखन केसरपुर नगरक मुख्य द्वार पर पहुँचल तँ ओहि ठामक राजा कामदेवसेन अपनेसँ नगर-द्वारपर आबि कऽ राजा प्रसेनजीत ओ बरियाती लोकनिक स्वागत करैत अरियाति कऽ लऽ गेलथिन ।

बरियातीक स्वागत करबाक लेल, बरियातीक शोभा देखबाक लेल, फुलकेसरिकुमरिक विवाहोत्सवमे सम्मिलित होयबाक लेल केवल केसरपुरेनगर अथवा केसरपुर राजेक प्रजागण नहि, अपितु आनो आनो राजक नागरिक सब आबि आबि जमा भऽ गेल छल । तमसगीरक करमान लागि गेल छल ।

राजा प्रसेनजीतक सबारी जखने मुख्यमार्गसँ नगरमे प्रवेश कयलक कि सैकड़ो धुतहू धू...धू..... धूधू..... धुधूक ध्वनि करऽ लागल । सैकड़ो नगाड़ा ढमाढम....ढमाढम... ढमाढम निनाद करऽ लागल । प्रसेनजीत ओ रतनपुरक बरियाती लोकनिक स्वागतमे शंखनाद ओ शहनाइक ध्वनिसँ आकाश मण्डल गुंजायमान भऽ उठल । नगरवासी लोकनि बरियातीक उपर सुवासित जल ओ फूल बरिसाबऽ लागल । जरैत अगर, धूप, गुगुलक धुआँ आ फूल-फुलेलक गमकसँ सौंसे केसरपुर नगर महमहा उठल ।

बरियातीमे प्रसेनजीतक सम्बन्धी ओ मित्र राजा, राजकुमार, राजपुरुष इत्यादि विशिष्ट लोक सभसँ लऽकऽ सैनिक, बहिया, खबास धरिक सामान्य जनक संख्या हजारो छल । कतोक दिनक यात्रा कऽ कऽ दूरसँ आयल

थाकल-ठेहियायल बरियाती लोकनिक विश्रामादिक यथोचित व्यवस्था आवश्यक छल । ओहि बरियाती सबकेँ केसरपुरमे किछु समय धरि टिकबाक सेहो छलैक । तेँ एहन जनबासाक व्यवस्था करब आवश्यक छलैक जे अस्थायी होइतो नयनाभिराम ओ सब सुविधासँ सम्पन्न होइक । रतनपुर राजक बरियाती लोकनिकेँ कखनो ई अनुभव नहि होइन जे ओ लोकनि अपन नगर छोड़ि दूर देशक कोनो अनचिन्हार-अनभोआर स्थानमे रहि रहल छथि ।

मन्त्री सुमतिबल ओ धर्मनिधि राजपुरोहित महाराज कामदेवसेनक सन्देश लऽ कऽ रतनपुर गेल छलाह, तँ अपना संग जे अनुचर सब लऽ गेल छलाह ओहिमे सुमतिबल केसरपुरक किछु श्रेष्ठ ओ चतुर वास्तुशिल्पीकेँ सेहो लऽ गेल छलाह ।

रतनपुरमे सुमतिबल ओ धर्मनिधि राजा प्रसेनजीतक निकट जाय अपन स्वामीक सन्देश अर्पित कऽ अपन आवासमे विश्राम करऽ चल अयलाह । बादमे जखन-जखन प्रसेनजीतक आदेश-सन्देश भेटनि तखन-तखन विचार-विमर्शक हेतु रतनपुर राजसभामे गेल करथि । परन्तु संगमे आयल वास्तु शिल्पी भरि दिन राजमहलमे अथवा रतनपुर नगरमे भ्रमण कऽ कऽ ओकर संरचनाक अवलोकन-अध्ययन कयल करैत छल । ओ सब रतनपुरनगरमे एक-एक विशेषता सभकेँ देखि-परेखि कऽ अपना मस्तिष्कमे राखि लेने छल । ओही वास्तु शिल्पी द्वारा जनबासाक निर्माण कयल गेल छल ।

केसरपुर नगरक बीचो-बीच एकटा विशाल रमना छलैक, ओकर चारू कात खूब चौड़गर पथ छलैक । ओहि पथमे चारू दिशा आ चारू कोण पर नगर दिससँ पथ सभ आबि कऽ मिलि गेल छलैक । तेँ नगरक कोनहु भागसँ लोक सहजतासँ एहि रमनामे पहुँचि सकैत छल । पश्चिम दिशाक राजपथ राजमहलक मुख्यद्वार धरि जाइत छल ।

रमनामे बरियाती लोकनिक टिकबाक हेतु जनवासाक निर्माण कयल गेल छल । जनवासाक निर्माण एवं ओकरा सजयबामे वास्तु शिल्पी सब अपन समस्त कला-कौशल ओ कारीगरीकेँ लगा देने छल ।

कारीगर सब दिन-राति एकलक्खति काज कऽकऽ जनबासाकेँ रतनपुर नगरक लघु प्रतिकृति बना देने छल । लगैत छल जेना रतनुपरकेँ

छोट रूपमे ओहि रमनामे उतारि देल गेल हो ।

ओहि लघुनगरमे हाट–बजार सेहो छलैक जाहिमे बरियाती लोकनिक आवश्यक वस्तु सभक दोकान सब लागल छलैक । मुदा सामान्य दोकान सभसँ ई दोकान सब भिन्न छल । एहि दोकानमे कोनो वस्तुक दाम नहि लेल जाइत छलैक । बरियाती लोकनिकेँ जाहि वस्तुक खगता होइतनि से वस्तु, दोकानपर नियुक्त कर्मचारीकेँ आदेश छलैक जे ओ वस्तु ओ स्वयं हुनका विनम्रता पूर्वक अर्पित करैनि ।

ओहि रमनामे बसल नगरक रूपमे बाट–घाट, हाट–बाजार देखि, आवासीय भवनक पाँती सब देखि बरियाती लोकनिकेँ पहिने रतनपुरे होयबाक भ्रम भऽ गेल छलनि । पछाति भ्रम टुटलनि तँ ओ लोकनि विस्मित भऽ उठलाह ।

रमनाक एक प्रमुख दिशामे ऊँच मञ्चपर राजसभाक निर्माण कयल गेल छल । ओहो रतनपुरक राजसभाक अनुकृतिए छल । ठीकाठीक ओही रूपक ।

राजा प्रसेनजीत एवं हुनक सभासद लोकनिकेँ राजसभा–मञ्चपर बैसाओल गेलनि । अन्य बरियाती लोकनिकेँ यथायोग्य आसनपर बैसाओल गेलनि । सभक स्वागत–सत्कार एवं अभ्यर्थना कयल गेलनि । ओकरा बाद सभ बरियाती लोकनिमे जनिका हेतु जे आवास बनल छल ततऽ पहुँचाओल गेलनि ।

महाराज प्रसेनजीतक लेल खास राजमहलक एक विशिष्ट भवनकेँ सजाओल गेल छल । कामदेवसेन हुनका ओही भवनमे चलि कऽ विश्राम करबाक आग्रह कयलथिन ।

प्रसेनजीत हँसैत कहलथिन–महाराज ! अपने तँ एहि जनवासाकेँ रतनपुर नगरक प्रतिबिम्ब बना देने छिऐक । अपनेक वास्तु शिल्पीगण तेहन कुशल छथि जे सभामण्डपक एहि मंचपर रतनपुरक राजसभाक असली रूपकेँ उतारि देने छथि । परन्तु केसरपुरक मध्य स्थित रतनपुरक एहि ठामक राजसभा ओकर राजाक बिना अपूर्ण रहि जायत ।' प्रसेनजीत एतबा कहैत–कहैत कामदेवसेनक हाथ पकड़ि कऽ पुछलथिन– की, हम ठीक कहल ने ! हमरहु रहबाक व्यवस्था जँ एहि जनबासामे भेल रहितय, तँ ई रतनपुर नगरी सर्वाङ्ग सम्पन्न भऽ जैतय ।'

महाराज कामदेव सेन अकस्मात् ई प्रस्ताव सुनि अकबका गेलाह ।

हुनका भेलनि जेना अनजानमे त्रुटि भऽ गेल । ओ मन्त्री सुमतिबल दिस प्रश्न भरल दृष्टिसँ तकलनि ।

सुमतिबल मन्द बिहुँसीक संग कहलथिन- श्रीमान् ! अपने सर्वथा उचित कहल-बिना राजा राज की ? बिना गायक साज की ! एहि राजसभासँ सटले पछिला भागमे रतनुपरक राजमहल सेहो छैक ।

सुमतिबल दुइ गोट सेवकके संकेत देलथिन । ओ दुनू सेवक राजसभाक पछिला भागक एक अंशके ससारि कऽ एक कात कऽ देलक । प्रसेनजीतक सोझाँमे रतनपुर राजमहलक झाँकी आबि गेलनि । ओ चकित भऽ उठलाह अमितबलक दूरदर्शितापर । केसरपुर राजक भीतर रतनपुरक प्रतिकृति देखि ओ अभिभूत भऽ उठलाह ।

सुमतिबल कहलथिन-श्रीमान् ! अपनेके जाहि ठाम विश्राम करबाक इच्छा हो, ओतहि विश्राम कऽ सकैत छी । सब ठामक व्यवस्था समतूल अछि ।

आब राजा प्रसेनजीतके अपन छोट राजकुमार शत्रुजीतसँ भेट करबाक उत्कट इच्छा जागि गेलनि । अपन मनक भावके मुक्त भऽ प्रगट नहि कऽ पबैत छलाह ।

चिरकालसँ बिछुड़ल सन्तानसँ भेट करबाक उत्कट आवेग महाराज प्रसेनजीतक हृदयमे उठि रहल छनि तकर सहजे आभास कामदेवसेनके भऽ गेल छलनि । ओ सुमतिबलके आँखिए आँखि संकेत देलथिन ।

सुमतिबल प्रसेनजीतके कहलथिन-श्रीमानजी ! राजमहलक परिसरमे जाहि भवनमे अपनेक विश्रामक व्यवस्था अछि ओकरहि निकटमे अपनेक छोट राजकुमार शत्रुजीतक आवासक भवन छनि । अपन पिताक दर्शन करबाक हुनकहु उत्कट इच्छा छनि । यैह सब सोचि कऽ ओहि भवनमे सेहो सुव्यवस्था कयल गेल अछि । आब श्रीमानक जे आदेश होयत तकर पालन होयत ।'

राजा प्रसेनजीतक मनमे जे बात छलनि तकर अनुमान केसरपुरक राजा आ राजमन्त्री पहिनहि कऽ लेने छलाह, से सोचि ओ विमुग्ध भऽ उठलाह ।

शुभ मुहूर्तमे विवाहक विधि सम्पन्न भेल । विवाहक उत्सव तेहन भेल जे केओ एहन उत्सव पहिने कहियो ने तँ देखने छल आ, ने सुनने छल । केसरपुर राजाक समस्त प्रजाकेँ तँ बहुत दिनक बाद एहन आनन्दोत्सव देखबाक अवसर भेटल छलैक ।

विवाहक बाद बिदागरीक तैयारी सुरू भेल । राजा कामदेवसेन तँ जी उपछि कऽ अपन बेटी आ जमायकेँ उपहार देलथिन । राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिक माय रानीक हाल तँ कनैत-कनैत बेहाल छलनि । फुलकेसरिक जन्मक बादसँ तँ ओ सब दिन दुखिये रहलीह । सब दिन झखैत रहलीह जे एहि अथबल, कुरूप, असर्घ सन्तानक कोन गति होयतनि ? मुदा भगवानक कृपासँ आब हुनकर बेटीक स्वरूप तेहन अपरूप भऽ गेल छलनि जे, जे देखय से देखिते रहि जाय । रानी आब ही भरि कऽ अपन बेटीक ई रूप निरखितथि । हुनकासँ भरि मोन गप्प करितथि । मुदा कायाकल्प होइते फुलकेसरिकुमरि हुनका सबकेँ छोड़ि कऽ अपन सासुर विदा भऽ रहल छलथिन ।

जखन राजकुमार शत्रुजीतक संग राजकुमारी फुलकेसरिकुमारि विदा होयबा लेल रथपर सवार भेलीह तँ एहि जोड़ीकेँ देखि सभक नयन जुड़ा गेलैक । सभक आँखिमे खुसी आ बिछोह, दुनूक नोर छलैक ।

एही समयमे एकटा घटना घटित भेल । रथक लगमे राजकुमारक ओ बुढ़िया मौसी सेहो आनन्दाश्रु बहबैत, वर-कनियाँक एहि सुन्दर जोड़ीकेँ निंघारैत ठाढ़ि छलि । राजकुमार रथपरसँ उतरि कऽ बुढ़ियाकेँ भरि पाँज धरैत कहलकैक-मौसी ! तोरा हमरा सभक संगे चलबाक छौ । आब सभ गोटा संगे रहब । ई बात पहिनहि कहि देने छलियौ, तखन रथपर एखन धरि सबार नहि भेलेँ, से किएक ? किसना कतऽ छौ ?'

ओहि ठाम ठाढ़ राजा कामदेवसेन तुरन्त एकर प्रतिवाद कयलथिन-नहि, नहि । ई अहाँ लोकनिक संग कोना जा सकैत छथि ? हिनका तँ हम अपना राजमे राजपरिवारक महिला जकाँ सम्मानक संग रखबनि । हिनके कारण तँ आइ हमर बेटीकेँ ई रूप भेटल आ हमरा अहाँ सन जमाय भेटलाह ।'

राजकुमार बाजल– से सब नहि होयत, ई बूढ़ी हमर मौसी छथि । माय आ मौसीमे कोनो अन्तर नहि होइत अछि । ई हमर माय जकाँ भेलीह । भला कहू जे माय–बेटाकेँ अपने कोना फराक कऽ सकै छी ?'

राजा कामदेवसेन कहलथिन–से कोना होयत ? ई बूढ़ी हमर राजक नागरिक थिकीह । आब तँ हम हिनका अपन परिवारक सदस्ये बना लेलियनि अछि । एहि सम्बन्धेँ तँ ई फुलकेसरिकुमरिक माय, पितियाइन, पीसी दाखिल भेलीह । आब भला कोनो नीक घरक महिला अपन समधियानामे जा कऽ रहथि, से तँ आइ धरि नहि सुनल अछि ! हमरा सभक कुलमे तँ आइ धरि एहन नहि भेल अछि । तेँ ई अहाँक संग नहि जा सकै छथि ।'

दुनू ससुर–जमायक बीच एहि बिदागरीक समयमे चलि रहल ई मधुर नोक–झोँक लोककेँ रोचक लागि रहल छलैक । एते काल धरि तँ ओ बुढ़िया चुप–चाप ई झंझ–मंझ देखैत रहलि । अन्तमे ओकरा नहि रहल गेलैक तँ ओ ससुर–जमायक बीचमे आबि बाजलि–अन्नदाता लोकनि ! हमर गलती माफ होअय, छोट मुँह पैघ बात । अहाँ लोकनि भेलहुँ राजा आ हम भेलहुँ अहाँक साधारण प्रजा । अहाँ लोकनि हमरा एतेक मान–सम्मान देलहुँ आ दऽ रहल छी, हम ताहीसँ धन्न छी । एहिसँ बढ़ि कऽ हमर दियामान की भऽ सकैत अछि जे एक छोड़ि दू–दूटा राजपुरुष हमरा अपन सम्बन्धी कहि रहल छथि । अन्नदाता लोकनि ! अपन बुढ़ारीक लाठी ई हमर हेरायल पोता हमरा आब भेटि गेल अछि । हम आब अपन एहि पोताक संग जहिना रहैत छलहुँ तहिना रहब । बस अहाँ लोकनिक कृपादृष्टि हमरापर बनल रहय ।'

एतेक कहैत–कहैत ओहि बुढ़ियाक आँखिमे नोर ढबढबा गेलैक । ओकर स्वर घहराय लगलैक । ओ राजा कामदेवसेनकेँ दुनू हाथ जोड़ि झुकि कऽ प्रणाम कयलक आ तकर बाद अपन स्नेह ओ आशीर्वाद सूचक हाथ राजकुमार–राजकुमारीक माथपर राखि देलक ।

ओहि बुढ़ियाक आत्मसम्मानक भावनाकेँ देखि राजा कामदेव आ राजकुमार शत्रुजीत दुनू विमुग्ध रहि गेलाह ।

राजकुमारी फुलकेसरिकुमारिकेँ माता-पिताक घर छोड़ि कऽ आब सासु-ससुरक घर जयबाक बेर आबि रोल छल । राजमहलक महिला लोकनि फुलकेसरिकुमरिसँ गराँ मिलि रहल छलीह । समदाउनि-उदासीक करुण भास सुनि सुनि सभक धैर्यक बान्ह टूटि रहल छलैक । बेटीक विदाकालक एहन करुणामय दृश्य देखि, के एहन होयत जकर कोँढ़ नहि फटतैक !

दुरागमनक बिध-बाध सम्पन्न भेलाक बाद आब कन्याकेँ नैहरक परित्याग कऽ सासुर पहुँचयबाक विधि पूरा करबाक छलैक । रनिबासक मुख्य द्वारपर कनियाँक लेल पालकी ओ वरक लेल रथ तैयार छल । कनैत-खिजैत फुलकेसरिकुमरिकेँ जेना-तेना पकड़ि कऽ पालकीमे बैसाओल गेलनि । राजकुमार शत्रुजीत रथपर पहिनहि बैसाओल गेलाह ।

कहरिया सब पालकीकेँ कान्ह लगाय मन्दगतिसँ आगाँ बढ़ऽ लागल । पालकीक दुनू पाँजरमे लोकदिनि-खबासिनी सब बीयनि हौँकैत चलऽ लागलि ।

राजकुमार शत्रुजीतक रथमे लोक सब घोड़ाकेँ नहि जोतऽ देलक । भीड़मे जे युवक सब छल से सब अपनेसँ रथकेँ आगाँसँ घीचऽ आ पाछाँसँ मन्द-मन्द गतिएँ ठेलऽ लागल । वर-कनियाँकेँ अरियाति कऽ विदा करबाक लेल पालकी आ रथक आगाँ-पाछाँ, आँजर-पाँजरमे स्त्री-पुरुष, बूढ़-जुआन, धिया-पुता सब नोरायल आँखिएँ वर-कनियाँकेँ देखैत आगाँ बढ़ि रहल छल । कतोक गोटे सिसकि रहल छल, तँ कतोक स्त्री विलापो कऽ रहलि छलि ।

बरियातीक आगमन दिन जनवासाबला रमनामे जतेक लोक जमा भेल छल, ताहिसँ कत गुन बेसी लोक आइ बिदाइ बेरमे जुटल छल । जाहि राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिक सब नाम मात्र सुनैत छल, तकर एक झलक पयबालेल आतुर भेल लोक सभ थहाथही करैत छल । ओ ओहि वीर आ साहसी युवककेँ सेहो नीक जकाँ देखऽ चाहैत छल जे केसरपुरक राजा कामदेवसेनक कठिन शर्त्तकेँ पूरा कयने छल ।

जनबासाक उँचका राजसभाबला मंचपर रतनपुर ओ केसरपुरक राजा आ राजपुरुष लोकनि विराजमान छलाह । मध्य भागमे दुइ गोट आसन खाली

छल । ओकर वामभागमे रतनपुरक राजा प्रसेनजीत बैसल छलाह तथा दहिन भामे केसरपुरक राजा कामदेवसेन बैसल छलाह ।

वर-कनियाँक सबारी जनवासामे पहुँचल । दुनूकेँ क्रमशः रथ ओ पालकीसँ उतारि कऽ राजसभाबला मंचपर आनल गेलनि । शत्रुजीतकेँ राजा प्रसेनजीतक दहिन भागक आसन पर बैसाओल गेलनि फुलकेसरि कुमारिकेँ कामदेवसेनक वाम भागक आसनपर बैसाओल गेलनि ।

धर्मनिधि अपन आसनपरसँ उठि कऽ स्वस्ति-पाठ करऽ लगलाह । हुनक स्वरमे स्वर मिला कऽ अन्य पण्डित लोकनि सेहो स्वस्ति पाठ करऽ लगलाह ।

वर-कनियाँक आगाँ मंगलाचारक वस्तु-दही, पाकल केरा, नारियर, पान, सुपारी, रङल धान, हरदिक गेँठ इत्यादि सजा कऽ राखल छल । एकटा चङेरामे दूभि आ अक्षत राखल छल । केसरपुरक एकटा ब्राह्मण वटुक दूभि-अक्षतक चङेरा आनि कऽ धर्मनिधिकेँ देलकनि । धर्मनिधि रतनपुरक राजपुरोहितकेँ वर-कनियाँकेँ दूर्वाक्षत देबाक आग्रह कयलथिन । रतनपुरक राजपुरोहितक संग वरपक्षक ब्राह्मण लोकनि तथा धर्मनिधिक संग केसरपुरक ब्राह्मण लोकनि अपना-अपना हाथमे दूभि आ अक्षत लेलनि । दूर्वाक्षत बेरमे मंचपर जतेक लोक छलाह से सभ ठाढ़ भऽ गेलाह ।

ब्राह्मण लोकनि समवेत स्वरमे दूर्वाक्षत मन्त्रक सस्वर वाचन करऽ लगलाह ।

शत्रुजीत तथा फुलकेसरिकुमरिक माथपर दूभि आ अक्षत छिटलथिन । तखन सभ अपना-अपना आसनपर बेसैत गेलाह । धर्मनिधि वर ओ कनियाँकेँ दहीक ठोप कऽ देलथिन ।

वर-कनियाँ सहित बरियातीक विदा होयबाक पूर्व दुनू समधिकेँ परस्पर उचिती-मिनतीक अवसर उपस्थित भेल । तखने मन्त्री सुमतिबल केसरिया रंगक रेशमी वस्त्रसँ झाँपल एकटा सोनक थार कामदेवसेनक हाथमे धरा देलथिन । कामदेवसेन ओ थारी राजा प्रसेनजीत ओ राजकुमार शत्रुजीतक मध्य भाग दिस बढ़ौलनि ।

प्रसेनजीत अकचकाइत कहलथिन- ई की थिक ।

कामदेवसेन शान्त भावसँ कहलथिन- महाराज ! अपनेकेँ बुझल अछि जे पूर्वमे हम घोषणा कऽ कऽ वचन देने छलिऐक जे-जे केओ हमर शर्त्त पूरा कऽ कऽ हमरा कन्यासँ विवाह करत तकरा हम अपन आधा राज दऽ देबैक। अपनेक छोटका राजकुमार शत्रुजीत हमर ई शर्त्त पूरा कयलनि । विवाहसँ पूर्व हम अपन आधा राज देबऽ लगलियनि तँ अस्वीकार कऽ देलनि । हमर पूर्वमे देल वचन मिथ्या ने भऽ जाय तेँ ई अपन आधा राजक समर्पण-पत्र पिता-पुत्र दुनू गोटेक समक्ष प्रस्तुत कऽ रहल छी । कृपा कऽ कऽ एकरा स्वीकार करी ।'

प्रसेनजीत कहलथिन-राजन् ! अपने तँ ज्ञानी छी । राजनीतिक अनुभव अछि । तखन एहन विचार मनमे किएक उठल ? अपने जनैत छी जे राज्य राजाक निजी सम्पत्ति नहि थिकैक जकरा परिवारक सदस्यक मध्य विभाजित कयल जाय । राज्य तँ जनता-जनार्दनक शाश्वत सम्पत्ति थिकैक । राजा तँ प्रजाक प्रतिनिधिक रूपमे राज्यक संरक्षण-संचालन करैत छथि । दोसर बात ई जे कहियो कोनो दुर्योगसँ कोनो राज्यक विभाजन भऽ जाइत छैक तँ प्रजाकेँ अपार कष्ट होइत छैक । गामक गाम उजड़ि जाइत छैक । अराजकता पसरि जाइत छैक । एकहि राज्यक प्रजा सभ विभाजनक बाद एक भागक प्रजा दोसर भागक प्रजाक शत्रु बनि जाइत छैक । तेँ हम तँ अपनेक विचारक समर्थन करबाक पक्षमे नहि छी ।'

कामदेवसेन बजलाह-महाराज ! कोनो राज्यक शासक अपन देल वचनक पालन नहि करय, अथवा वचनसँ नठि जाय तँ ओकर विश्वसनीयता खण्डित भऽ जाइत छैक । हम तँ पूर्वहि अपन वचनक सार्वजनिक घोषणा कऽ चुकल छी । अपनेक विचारक विखण्डन नहि कयल जा सकैत अछि। परन्तु वचन-भंगक दोष हमरा पर लागत, तकर निवारणक की उपाय ?'

प्रसेनजीत कहलथिन-महाराज ! हमरा जे उचित बुझि पड़ल से विचार देलहुँ ।' पुनः परिहासक मुद्रामे कहलथिन- ओना ई ससुर-जमायक मध्यक बात थिक । तेँ हमर मध्यस्थ बनब उचित नहि । आब निर्भर करैत छनि राजकुमारक विवेक पर, ओ जे करथि ।'

लोक सब स्तब्ध छल । शत्रुजीत सोनक थारमे राखल रेशमी वस्त्रमे लपेटल समर्पण-पत्रकेँ देखैत रहल । कनेक काल चिन्तामे पड़ल रहल ।

फेर बाजल–ज्येष्ठ–श्रेष्ठक आज्ञाक पालन नहि करब धृष्टतापूर्ण अवज्ञा होयत। तेँ हम एहि दानकेँ स्वीकार करैत छी।'

शत्रुजीत सोनक थारमे राखल समर्पण–पत्रकेँ हाथसँ छुइलक। फेर थार हाथमे लैत कामदेवसेनकेँ पुछलकनि जे– महाराज! एहि समर्पण–पत्रमे केसरपुरक आधा राजमे कोन–कोन क्षेत्र रहतैक से नीक जकाँ जना देल गेल छैक?'

कामदेवसेन मन्त्री सुमतिबल दिस तकलनि। सुमतिबल बजलाह– राजकुमार जी। अर्पित कयल समर्पण–पत्रमे एक–एक गाम, परगना, सीमा, नदी, पर्वत, वन, प्राकृतिक जलाशय इत्यादिक विस्तृत विवरणक संगहि एकटा ताम्रपत्रपर मानचित्र सेहो बना देल गेल छैक।'

शत्रुजीत बाजल–केसरपुरक एहि आधा भागक स्वामी आब हम भऽ गेलहुँ?'

–हँ राजकुमार।' सुमतिबल शत्रुजीतकेँ उत्तर देलथिन।

शत्रुजीत बाजल– हम केसरपुर राजक नरेशसँ स्वस्तिवचन सुनऽ चाहैत छी।'

कामदेवसेन कहलथिन– हमर स्वस्ति तँ पूर्वहिसँ देल अछि। आब राजकुमारक स्वस्ति कहबाक अवसर आयल छनि।'

–केसरपुरक एहि आधा राजक सम्बन्धमे जँ किछु निर्णय करऽ चाही तँ ताहि लेल हमरा ककरोसँ अनुमति–सहमति नहि लेबऽ पड़त आ हम कोनो प्रकारक निर्णय लेबामे की हम स्वतन्त्र छी?' शत्रुजीत बाजल।

–अवश्य।' कामदेवसेन बजलाह। आनो आनो केसरपुरवासीजन कामदेवसेनक स्वरमे अपन स्वर मिलौलनि।

राजकुमार शत्रुजीत जनवासाक मैदानमे जमाजुट लोक सबकेँ सम्बोधित करैत बाजल–हम शत्रुजीत ओ हमर पत्नी राजकुमारी फुलकेसरिकुमरि केसरपुरक आधा राजक स्वामी छी। एहि स्वामीत्वक अधिकारक प्रयोग करैत केसरपुरक अपन आधा राज जते हमरा महाराज कामदेवसेनसँ भेटल अछि तकरा हम केसरपुरक समस्त प्रजाकेँ समर्पित करैत छी। केसरपुरक राज सदा अखण्डित रूपमे सुशासित होइत रहओ।'

एतबा सुनैत देरी चारू दिससँ 'धन्य ! धन्य !!'क स्वर बहराय लागल । प्रसेनजीत, कामदेवसेन ओ शत्रुजीतक जयजयकार होअऽ लगलनि ।

41

वर-कनियाँ सहित रतनपुर राजक बरियाती केसरपुर राजसँ विदा भेल । ओही संग केसरपुरक राजा आ प्रजा दिससँ देल विविध उपहारकेँ उभनिहार, बरियातीक परिचर्या कयनिहार, फुलकेसरिकुमरिक सेवामे रहनिहार दास-दासी, परिचर, सेवक, रक्षक इत्यादिकेँ सेहो संग कऽ देल गेल छल। तेँ आपसी बरियातीक बेस पैघ कफला भऽ गेल छल ।

राजा कामदेवसेन अपन मन्त्री सुमतिबल ओ राजपुरोहित धर्मनिधिकेँ सबकेँ सुरक्षित रतनपुर राज धरि अरियाति देबाक भार देलथिन । घुरती बरियाती रतनपुर राज विदा भेल ।

केसरपुरक सीमा समाप्त भेलापर बरियाती सभ राति भरि विश्राम कयलक । दोसर दिन विदा होयबाकाल राजकुमार शत्रुजीत सुमतिबलकेँ बजाय कहलकनि जे- घुरती बरियाती ओही बाटेँ आपस चलय जाहि बाटेँ हम आयल छलहुँ ।'

सुमतिबल शत्रुजीतकेँ बुझयबाक चेष्टा कयलथिन जे अयबाकाल शत्रुजीत अनभोआर छलाह । अनचिन्हार बाटमे हुनका बहुत घुमान भेल छलनि । पुनः ओही बाटेँ जयबामे बहुत दिन लागि जयतै । तेँ जे सोझ बाट छै, ताही बाटेँ जायब उचित आ सुगम होयत । विश्राम शिविर सभक पूर्वहि एहि सोझौका बाटमे ओरियान कयल गेल छै ।'

शत्रुजीत मुदा अपन जिद्दपर अड़ले रहल ।

सुमतिबलकेँ एतबा दिनमे ई बुझबामे आबिए गेल छलनि जे राजकुमार शत्रुजीत एकबोलिया आ जिद्दी छथि । तेँ ओ शत्रुजीतक संग कोनो तर्क-वितर्क नहि कयलनि । ओ कहलथिन-राजकुमारजी, अहाँ जे कहलहुँ ताहि सम्बन्धमे श्रीमान् महाराजसँ सेहो अनुमति लेब हमरा लेल उचित होयत ।'

एतबा कहि सुमतिबल प्रसेनजीतक शिविरमे गेलाह । ओ सुमतिबलकेँ पुछलथिन-आब प्रस्थान करबामे की विलम्ब ?

सुमतिबल प्रसेनजीतकेँ राजकुमार शत्रुजीतक विचारसँ अवगत करबैत अपन विचार देलथिन जे राजकुमार जाहि बाटेँ जाय चाहैत छथि से अत्यन्त घुमानबला छैक । रतनपुरक दूरी सहजेँ बढ़ि जयतै, तेँ समय सेहो बेसी लगतै । दोसर झंझटि ई जे एहि सोझबला बाटमे विश्राम स्थल सभक ठाम-ठाम व्यवस्था हमर महाराज कामदेवसेन पहिनहि करबा चुकल छथि । जाहि जाहि राजमे अपने लोकनिक विश्रामक शिविर रहत, ताहि ताहि राजक राजाकेँ हमर श्रीमान् निवेदन-पत्र बहुत पहिनहि पठबा देने छलथिन । आब नव बाट पकड़ने फेरसँ नव ओरियान करब आवश्यक भऽ जायत । ओहिंमे समय लागत । सुरक्षा आ सुविधाक व्यवस्था विना कयने प्रस्थान करब उचित नहि होयत । आब श्रीमान्क जे आदेश होअय ।'

राजा प्रसेनजीत चिन्तित भऽ उठलाह । रतनपुर छोड़ला बहुत दिन भऽ गेल छलनि । जेठ राजकुमार विश्वजीत कोन प्रकारेँ राज-काज सम्हारने होयथिन तकर चिन्ता लागल छलनि । ओ आब जल्दीसँ जल्दी रतनपुर पहुँचऽ चाहैत छलाह । राजकुमारक हठकेँ बुधियारीसँ निवृत्त करबाक सम्बन्धमे सोचऽ लगलाह ।

प्रसेनजीत विचार-विमर्श करबाक लेल शत्रुजीतकेँ बजबौलथिन । शत्रुजीत पिताक समाद पाबि तुरन्त आबि गेल । राजा राजकुमारकेँ अपना लगक आसनपर बैसबाक संकेत कयलथिन । शत्रुजीत आसनपर बैसि गेल । राजा प्रसेनजीत कुशल-क्षेम पूछि कऽ कहलथिन- केसरपुरक राजमन्त्री सुमतिबल अहाँक विचार हमरा सुनौलनि जे अहाँ जाहि जाहि बाटेँ चलि कऽ केसरपुर पहुँचल छलहुँ, ताही बाटेँ पुनः जाय चाहैत छी । अहाँक मनक बात हम बुझलहुँ । अहाँ राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिकेँ ओ कठिन बाट सब देखाबऽ चाहैत छियनि जाहि बाटेँ अत्यन्त कष्ट सहैत आयल छलहुँ । दोसर बात अहाँक मनमे ई अछि जे बाटमे जतऽ जे केओ अहाँकेँ सहायता कयलक तकरा प्रति अपन कृतज्ञता देखा कऽ ओकरा सबकेँ उपहार देबऽ चाहैत छिऐक ।'

केसरपुरमे प्रवास करबाक अवधिमे प्रसेनजीत अपन छोट राजकुमारक स्वभावमे भेल परिवर्त्तनक अनुभव कयने छलाह परन्तु आशंकित छलाह जे राजकुमार अपन बातपर कहीं अड़ि ने जाथि । ओ शत्रुजीतक मुखमण्डलपर

आयल भावकेँ बुझबाक चेष्टा करैत बजलाह- कुमार ! अहाँक मनक विचार हमरा नीक लागल । हमरो मनमे होइत अछि जे हम ओहि यात्रा-पथकेँ अपनेसँ देखी, जाहि बाटेँ जाय राजकुमार अपन पुरुषार्थ देखौलनि ।'

शत्रुजीतकेँ अपन पिताक वचन सुनि कऽ बुझि पड़लैक जेना पहिल बेर पिता ओकर मनक बात विना कहनहि बुझि गेलथिन । ओ पुलकित भऽ उठल । ओकरा भेलैक जे पूर्वमे कयल गेल अपन उद्दण्ड आ उच्छृङ्खल आचरणक लेल पिताक पैर पकड़ि कऽ क्षमा माङि ली । ओकर आँखिक पल नीचाँ खसल छलैक । ओ धरती दिस ताकि रहल छल ।

प्रसेनजीत कनेक काल गम्भीर भेल सोचैत रहलाह । फेर बजलाह- कुमार ! हम सब केसरपुर राजक सीमासँ बाहर आबि गेल छी । कोन बाटेँ रतनपुर राज पहुँचब से निश्चित करबाक अछि । अहाँक जे विचार, से उत्तम अवश्य अछि । परन्तु व्यावहारिक नहि होयत । अहाँ एकसर छलहुँ । एक-पेरिया वा ओहूसँ संकीर्ण बाट, जंगल, पहाड़, नदीकेँ पार कऽकऽ गेलहुँ । किन्तु ई जे विशाल कफला अछि जाहिमे हाथी, घोड़ा, ऊँट, रथ, पालकी सहित रक्षक सभ अछि से ओहि बाटेँ सहजतासँ कोना पार करत ? अहाँ अनजान बाटपर चलैत रहलहुँ तेँ बहुत ठाम एहनो भेल होयत जे जाहि स्थानपर एक दिनमे पहुँचि सकैत छलहुँ, ततऽ पाँच वा सात दिनमे पहुँचल होयब । एतेकटा समूह निरर्थक समय आ श्रम बाट चलैतमे गमाबय से कहाँ धरि उचित ओ व्यावहारिक ?'

कनेक रुकि प्रसेनजीत बजलाह-महाराज कामदेवसेनक मन्त्री सुमतिबल सूचित कयलनि अछि जे रतनपुर धरिक सोझ राजमार्गपर हमरा लोकनिक विश्राम ओ सुरक्षाक लेल ठाम-ठाम व्यवस्था कयल गेल छैक, से निरर्थक भऽ जायत । नव बाटमे फेरसँ नव व्यवस्था करबामे समय लागत । ताबत धरि एही ठाम अँटकल रहऽ पड़त । ओमहर रतनपुर छोड़ना कतेक समय ने भऽ गेल । ओतऽ शीघ्र पहुँचब जरूरी अछि । ओहि ठाम युवराज विश्वजीत एकसरे काज सम्हारि रहल छथि । दोसर महत्त्वपूर्ण बात ई जे राजकुमारी फुलकेसरिकुमरिक मनमे सेहो अपन सासुर ओ ओहि ठामक लोककेँ देखबाक उत्कण्ठा होइते होयतनि । अधिक घुमानबला बाटमे समय अधिक

लागत, राजकुमारी फुलकेसरिकुमरि सहित सकल यात्रीक लेल कष्टकर होयतैक । भावुकतामे पड़ि कोनो निर्णय लेब बुद्धिमानी नहि ।'

शत्रुजीत माथ झुकौने पिताक बात सुनैत रहल । राजा प्रसेनजीतकेँ आभास भेलनि जे ई शत्रुजीत ओ नहि थिक जे टिरुसि कऽ महलसँ विदा भऽ गेल छल । राजा आगाँ बजलाह-राजकुमार ! जीवनमे एहन एहन कतेको घटना भेल करैत छैक जे पुनः दोहराइत नहि छैक । लोक एहन कतेको स्थानपर जाइत अछि जतऽ फेर दोहरा कऽ जायब सम्भव नहि होइत छैक । एक बेर भेट भेल कतेको व्यक्तिसँ दोसर बेर फेर भेट नहि भऽ पबैत छैक । एकबेर कोनो विशिष्ट ग्रन्थ पढ़बाक लेल भेटैत छैक से फेर जीवनमे दोसर बेर नहि भेटि पबैत छैक । एहि लेल मनमे कचोट होइत छैक अवश्य मुदा लोककेँ एहि हेतु मनकेँ मनाबऽ पड़ैत छैक । आब अहाँ अपन विवेकसँ निर्णय करू ।'

राजकुमार शत्रुजीत शान्त भावसँ बाजल-पिताश्री ! ओना तँ अबिती कालमे बहुत रास दुख-सुख, तीत-मिठ, मान-अपमान, उपकार-अपकारक अनुभव भेल । ओहि यात्रामे कयल गेल बहुत लोकक उपकारक ऋण हमरा पर छैक जकरा हम उतारऽ चाहैत छलहुँ । नहि बेसी, धन्यवादो तँ दऽ सकितिऐक ! मुदा अहाँक विचारक विपरीत आचारण हम आब नहि करब । जे आदेश देब, तकर अक्षरशः पालन करब ।'

प्रसेनजीत राजकुमारक उत्तर सुनि कऽ चकित भऽ उठलाह । अपना जिद्दपर अड़ल रहबाक स्वभावक विपरीत शत्रुजीत एतेक आज्ञाकारी कोना भऽ गेलाह ! ओ सोचऽ लगलाह जे जेना तेजगतिसँ चलैत घोड़ाक लगाम एकाएक घीचि कऽ ओकरा ठाढ़ कऽ देने दुर्घटना भऽ सकैत छैक, तहिना राजकुमार शत्रुजीतक स्वभावमे एहि तरहक आकस्मिक परिवर्तनसँ कोनो अनिष्ट ने भऽ जाय ! ओ कनेक काल आँखि मूनि कऽ चिन्तित मने सोचैत रहलाह । फेर मन्द स्वरमे शत्रुजीतकेँ पुछलथिन- कुमार ! अहाँ जे बजलहुँ अछि से बुझि पड़ैत अछि जेना उपरका मनसँ बाजल होइ । मनमे कोनो बात अछि तँ निस्संकोच भऽ कऽ बाजू ।'

शत्रुजीत पिताक कथन सुनि मौने रहल । राजा शत्रुजीतक मनमे चलैत कोनो गुनधुनक सहजहि अनुमान कयलनि । ओ स्नेह भरल स्वरमे

पुछलथिन– अहाँ तँ बजबामे कहियो धखाइत नहि छलहुँ, तखन आइ किएक ? स्पष्ट बाजू । पिताक नहि, तँ राजाक आदेश ।'

शत्रुजीतक मनमे भेलैक जे आब चुप रहने काज नहि चलत । राजाक आदेशक उल्लंघन कथमपि उचित नहि, सेहो केसरपुरक लोकक उपस्थितिमे । ओ मन्द स्वरेँ बाजल–अन्य लोकक उपकारकेँ कातो कऽ दी, तैयो हमरा पर चारि गोटेक बड़ पैघ ऋण छलैक । ओहिमे एकटा छल जादूगरक ऋण । ओकरा रतनपुरक राजसेवामे राखि लेल गेलैक । दोसर छल बुढ़िया मौसीक ऋण, जे हम ओकर पोता ताकि कऽ सधा देलिऐ । दू टा ऋण आब शेष रहि गेल जकरा उतारब हम अपन पुनीत कर्त्तव्य बुझैत छी ।'

प्रसेनजीत पुछलथिन– ओ स्थान कतऽ छैक ?

राजकुमार बाजल– जाहि बाटेँ हम केसरपुर गेल छलहुँ ताहि बाटमे ओ स्थान हमरा ठेकानल अछि । तेँ ओहि बाटेँ चलबा लेल हम जिद्द करैत छलहुँ । नव बाटमे ओ स्थान भेटत कि नहि से हम नहि जनैत छी । तेँ हम विचारलहुँ अछि जे रतनपुर पहुँचि गेलाक बाद फेरसँ हम अपन यात्रा ओम्हर दिससँ आरम्भ करब । तखन हमरा ओहि स्थानपर पहुचब कठिन नहि रहत ।'

मन्त्री सुमतिबल पुछलथिन–राजकुमार ! जाहि स्थानपर अहाँ जाय चाहैत छी ताहि स्थानक की नाम छैक से ठेकान पर अछि ?'

–जाहि ठाम हमरा जायब जरूरी अछि ताहि स्थानक नाम छै धानपुर हाट ।' शत्रुजीत बाजल– धानपुर हाटक नाम हम कोना बिसरि सकै छी ?'

सुमतिबल राजकुमारक उत्तर सुनि प्रसेनजीतकेँ कहलथिन जे– महाराज ! आध पहरक समय हमरा देल जाय । हम एहि सम्बन्धमे दूरगामी बाट सभक ज्ञान रखनिहार सहायक सबकेँ धानपुर हाटक स्थिति आ ओतऽ पहुचबाक बाटक सम्बन्धमे सूचना देबाक आदेश दैत छिऐक । हम सब राजकुमारक मनमे कोनो प्रकारक खेद उत्पन्न नहि होबऽ देबनि । कोनो ने कोनो उपाय अवश्य करब ।'

एतबा कहि सुमतिबल परिचरक संग अपन शिविर दिस चल गेलाह ।

आध पहर बितलो ने छल होयत कि सुमतिबल प्रसेनजीतक समक्ष

उपस्थित भेलाह । ओ निवेदन कयलथिन जे- श्रीमान् ! धानपुर हाट बड़ नामी हाट छै । सुजला नदीक किनारपर बसल छै । एहि ठाम देश-विदेशक बनिजार सब बनीज करबा लय बड़का बड़का नावसँ आन ठामसँ वस्तु सब अनै छै आ एहि ठामसँ वस्तु सब कीनि कऽ आन ठाम बेचबा लय लऽ जाइ छै । हमर सभक जे मुख्य मार्ग अछि, ताहिसँ लगाति दस कोस हटि कऽ अछि ।'

शत्रुजीत सुनैत रहल । मन्त्री आगाँ की बजताह ओ ताहि प्रतीक्षामे छल ।

सुमतिबल बजलाह-अपन बाटमे हमरा सबकेँ कनेक हेर-फेर करऽ पड़त आ गोटेक दिनक समय बेसी लागत । राजकुमारक मनोभावकेँ पूर करबाक लेल एक ठाम मुख्यमार्ग छोड़ि धानपुर हाटक बाट धऽ लेब । धानपुरमे एक रातुक विश्राम शिविर रहत । अगिला दिन विदा भऽ कऽ फेर हम सब अपन मुख्य बाट पकड़ि लेब ।'

एतबा कहि सुमतिबल शत्रुजीत दिस देखलनि । शत्रुजीतक चेहरापर सन्तुष्टिक भाव देखि राजाकेँ कहलथिन- आब अपनेक आदेश चाही । आदेश भेटलापर, विश्राम व्यवस्थामे हेर-फेरक लेल सेवक सबकेँ पहिनहि आगाँ पठाबऽ पड़तै ।'

प्रसेनजीत राजकुमार दिस देखलनि । राजकुमार अपन माथ डोला देलक ।

बनिसारसँ मुक्त भेल बिरधन राजकुमार शत्रुजीतक संग छाया जकाँ रहऽ लागल छल । ओ तखनहुँ शत्रुजीतसँ थोड़ेक दूर हटि कऽ ठाढ़ भेल सब किछु देखि-सुनि रहल छल । अपन गाम पहुँचबाक ओ माय-बहीनसँ मिलबाक आतुरता लहरि मारि रहल छलैक । जखनसँ ओ सुनने छल जे बरियाती-सरियातीक दल ओकर गाम होइत नहि जयतैक, तखनसँ मनहूस भऽ गेल छल । मुदा आब मन्त्रीक बात सुनि हुलाससँ भरि गेल । शत्रुजीत बिरधनक बदलैत चेहराक रंग निरन्तर देखि रहल छल । एखनुक ओकर हुलास देखि शत्रुजीतक मनमे बड़ सन्तोष भेलैक जे ओ अपन ऋण जल्दीए सधा देत ।

प्रसेनजीतक दल-बल पूर्व निर्धारित बाट पर चलि देलक ।

42

बरियाती–सरियातीक दल अपन पूर्व निर्धारित स्थान सभपर विश्राम करैत रतनपुर दिस बढ़ैत जा रहल छल । एक ठाम आबि कऽ दलकेँ थम्हि जाय पड़लैक, कारण आगाँ पठाओल गेल पथ–प्रदर्शकमेसँ एकटा आपस आबि सुमतिबलकेँ सूचित कयलकनि जे जाहि ठामसँ धानपुर हाटक लेल बाट फुटैत छैक, ताहि ठाम किछु घोड़सवार सैनिक बाट छेकने ठाढ़ अछि ।

सुमतिबल सूचना पाबि कनेको विचलित नहि भेलाह । ओ सोचलनि जे जखन मुख्यमार्ग छोड़बाक स्थलपर पहुँचब तखने सोचब जे की कर्त्तव्य । तेँ एहि सूचनाकेँ अपने धरि रखने रहलाह ।

धानपुर राज बनीज–व्यापारक लेल बड़ प्रसिद्ध छल । ओहि राज दऽ कऽ एकटा खूब चाकर आ सालोभरि जलसँ भरल पवित्र धनदा नदी बहैत छलैक । ओहिमे बड़का–बड़का नाव चलैत छलैक । ओहि नावपर बनिजार सब आन देशक वस्तु सब बेचबा लेल अनैत छलैक आ धानपुर हाटसँ भाँति–भाँतिक वस्तु सब कीनि कऽ आन देशमे बेचबा लेल लऽ जाइत छलैक ।

धानपुर हाटक एक भागमे धनेश्वरनाथ महादेवक बड़ प्रसिद्ध आ विशालमन्दिर छल । देश–विदेशक यात्री सभ धनदा नदीमे स्नान कऽ महादेवक दर्शन–पूजनक लेल अबिते रहैत छल, तेँ धानपुर हाटमे बारहो मास, तीसो दिन मेला लगले रहैत छलैक ।

सुमतिबल राजकुमार शत्रुजीतक सहमति आ प्रसेनजीतक अनुमति भेटलापर तुरन्त दूटा दूतकेँ धानपुर राज पठा देने छलथिन ।

सुमतिबलक दूत धानपुरक राजा वीरभद्रदेवकेँ आबि निवेदन कयलकनि जे रतनपुरक राजा प्रसेनजीत अपन पुत्रवधू केसरपुर राजक राजा कामदेवसेनक राजकन्या फुलकेसरिकुमरि ओ अपन छोट कुमार शत्रुजीत सहित अपन रतनपुर राज जयबाक बाटमे छथि । ओ रतनपुर जयबाक मुख्य मार्ग छोड़ि धानपुर हाट होइत जाय चाहैत छथि आ ओहि क्रममे ओतऽ सदल–बल एक राति विश्राम करऽ चाहैत छथि ।

ई समाचार जानि वीरभद्रदेव थोड़ेक काल सोचमे पड़ि गेलाह ।

मोनमे अनेक प्रकारक शंका होअऽ लगलनि जे एहन कोन कारण भऽ सकैत छैक जाहि लऽ कऽ प्रसेनजीत सन प्रतापी राजा अपन दल-बल सहित सोझ मुख्य मार्ग छोड़ि डोरिपर नहियो रहैत घुमानबला बाट दऽ कऽ जयताह ?

वीरभद्रदेव सुमतिबलक दूतसँ ओकर पेटक बात जनबाक उद्देश्यसँ पुछलथिन जे– अहाँक राजा ई घुमानबला बाट किएक धरताह ? एहि बाटे रतनपुर जयबामे दुइ-तीन दिनक समय बेसी लागि जयतनि ?' एकटा दूत एहि विषयमे अपन अनभिज्ञता देखौलकनि । दोसर दूत सुमतिबलक पत्र दैत अनायासे बाजि उठल- लोक सब बजैत छल जे एहि बाटे जा रहल छी तँ किएक ने धनेश्वरनाथ महादेवक दर्शन-पूजन कऽ ली, धानपुरक विशाल हाटो देखि लेब । सुनैत छिऐक जे धानपुर हाटक चूरा आ दही बड़ नामी छैक ।'

वीरभद्रदेवकेँ दूतक अन्तिमबात सुनि हँसी लागि गेलनि । ओ पत्र पढ़लनि आ मनमे जे शंका आ चिन्ता उत्पन्न भेल छलनि से तुरन्ते बिला गेलनि । मनमे खेदो भेलनि जे राजा प्रसेनजीतक शुभ निमित्तक यात्रापथक सम्बन्धमे अशुभ सन भाव किएक आबि गेल ? वीरभद्रदेवक हृदय लगले हर्ष आ उत्साहसँ भरि गेलनि जे प्रसेनजीत सन प्रतापी राजा अपन राजकुमार तथा राजवधू केसरपुरक राजकन्या फुलकेसरिकुमरि सहित यात्राक क्रममे अपन मुख्यमार्ग छोड़ि धानपुर हाटमे आबि विश्राम करथिन । ओ गौरवान्वित होयबाक अनुभव करऽ लगलाह ।

वीरभद्रदेव सबसँ पहिने सकल बरियाती-सरियातीक समूहकेँ अरियाति कऽ अनबाक लेल एकटा विश्वस्त उच्च अधिकारीक संग किछु घोड़सवार सैनिककेँ दू-चारि दिन पहिनहि मुख्य मार्गक ओहि स्थलपर पठा देलथिन जतऽसँ धानपुर हाटक लेल बाट फुटैत छलैक ।

वीरभद्रदेव धानपुर हाटकेँ तातकालक हेतु अस्थायी राजधानी बना लेलनि । धानपुर हाटक मुख्य भागसँ हटि कऽ एकटा विशाल मैदान छलैक जाहि ठाम विजयादशमीक अवसर पर धानपुर राजक सेनाक जुटान भेल करैत छलैक । ओही मैदानमे शिविरक व्यवस्था कयल गेल । वीरभद्रदेव द्वारा प्रसेनजीतक भव्य स्वागत ओ प्रचुर उपहारक संग विदाइक तैयारी बड़ उत्साहसँ कयल जाय लागल ।

प्रसेनजीतक दल जखन धानपुर हाटक सीमापर पहुँचल तँ पहिने दुइ गोट प्रतिनिधिकेँ उपहार लऽ कऽ वीरभद्रदेवक अस्थायी राजभवनमे सूचनार्थ पठाओल गेल ।

वीरभद्रदेव तँ तैयारे छलाह । ओ अपन सकल राजकर्मी सहित सीमापर जाय राजअतिथि लोकनिक हुलसि कऽ स्वागत कयलथिन । शिविरमे सब अतिथिकेँ आनि पूर्व निर्धारित स्थान सभपर व्यवस्थित कयल गेलनि ।

सुमतिबल धानपुर राजक राजमन्त्रीसँ एकान्तमे वार्त्तालाप कयलनि । हुनका धानपुर राज दिससँ कयल गेल सौजन्यपूर्ण व्यवहारक हेतु धन्यवाद दैत सूचित कयलथिन जे काल्हि मध्याह्नसँ पूर्वे सबेर-सकाल ई दल प्रस्थान करत जाहिसँ जल्दीसँ जल्दी रतनपुर जयबाक मुख्यमार्गपर पहुँचल जा सकय। तेँ राजकीय स्वागत-सत्कारक वृहत् विस्तार नहि कयल जाय । जे व्यवस्था कयल गेल से कोनहु रूपमे अधिके मानल जायत ।

रातिमे विश्रामसँ पूर्व भोजन आ मनोरंजनक उत्तम व्यवस्था देखि अतिथि लोकनि चकित आ छकित भऽ उठलाह । सभक यात्राक थकनी विलीन भऽ गेलनि ।

बरियाती-सरियातीक सकल जन सुखपूर्वक राति बिताबऽ लगलाह ।

43

शत्रुजीत राति भरि सूतल नहि । ओ भरि राति कपड़घरक चनवा दिस टुकुर-टुकुर तकैत रहल आ सोचैत रहल धानपुर हाटक ओ दिन जहिया मुरहीबाली आवेशसँ ओकरा मुरही फाँकऽ लेल देने छलैक । पाथेयक रूपमे चूरा-गूड़ देने छलैक आ विदा होइत काल अपन बेटा बिरधनक बिरुझि कऽ चल जयबाक सम्बन्धमे सेहो कहने छलैक । शत्रुजीत बिरधनकेँ ताकि आनि देबाक वचन देने छलैक । मुरहीबालीकेँ देल वचनक ऋण सधयबाक बेर आइ उपस्थित भऽ गेल छलैक ।

ओकरा सधयबाक छलैक महाजनक ऋण । ओकरा महाजनक सौजन्य बिसरल नहि छलैक । शत्रुजीत सबेर-सकाल धानपुरक हाटपर जाय अपन काज सम्पन्न कऽ लिअऽ चाहैत छल । शिविरक लोक अलसायल

सुतले छल । शत्रुजीत अपन विश्राम घरसँ बहरायल जे बिरधनकेँ जगा दिअय । मुदा बिरधन पहिनहिसँ जागि कऽ तैयार बैसल छल ।

बिरधनो भरि राति जगले रहल । ओकरा होइत छलैक जे कखन भोर होअय जे दौड़ि कऽ अपन गामपर चल जाइ आ अपन मायकेँ भरि पाँज पकड़ि कऽ भरि इच्छा कानी । बनिसारमे बिताओल समयक सम्बन्धमे सोचि-सोचि कऽ होइत छलैक जेना सौँसे कोँढ़-करेज मुह बाटे बाहर आबि जयतैक । ओ टकटकी लगा कऽ शत्रुजीतक शयनागारक द्वारा दिस देखि रहल छल । शत्रुजीतकेँ द्वारसँ बाहर होइत देरी फुरफुरा कऽ ठाढ़ भऽ गेल । ताबत कुमार शत्रुजीत ओकरा लग अपने सहटि कऽ आयल ।

शत्रुजीत बिरधनकेँ कहलकैक- सुन बिरधन ! सबसँ पहिने तोँ मुरेट्ठा बान्हि कऽ मुह तेना झाँपि ले जे केओ चिन्हौक नहि ।'

बिरधन तहिना बनि कऽ तैयार भऽ गेल ।

शत्रुजीत बिरधनकेँ बुझा कऽ कहलकैक जे- तोँ अपना मायकेँ बिसरभोरोमे हमर परिचय नहि दिहैक, ने ई कहिहैक जे तोँ कतहु बनिसारमे छलेँ आ हमरा दुआरे छुटलेँ । तोरा बिना तोहर माय बेकल हेतौ । तेँ हम आब अपना संग नहि रखबौक ।'

राजकुमार एकटा मोटा देखा कऽ कहलकैक- एहिमे तोरा माय आ बहीन लय सनेस सब छौ आ थोड़ेक मुद्रा दऽ देलियौक अछि । ओहिसँ खेती-बारी वा कोनो रोजगार करिहेँ । बिनु परिश्रम कयने अधिकसँ अधिक धन पयबाक लोभमे लोक मारल जाइत अछि । आब कोनो एहन व्यवहार नहि करिहेँ जाहिसँ तोरा मायकेँ दुख होउक ।'

ओ बिरधनकेँ मोटा उठयबाक इसारा कयलकैक आ धानपुरक हाट दिस विदा भऽ गेल । बिरधन कान्हपर मोटा उठौने ओकरा पाछाँ-पाछाँ चलऽ लागल ।

राजकुमार शिविरसँ मुख्य बाटपर आयल तँ ठेकनाबऽ लागल जे कोन ठामसँ महाजनक घर दिस बाट फुटैत छैक । कनेक ठाढ़ भऽ कऽ आँखि मुनने सोचैत रहल । ओकरा धानपुरक हाटपरहक अपन बीतल समयक सभ दृश्य अयना जकाँ झलकऽ लगलैक । ओ मुख्य सड़कसँ उतरि धानपुरक हाटपर स्थित महाजनक घर दिस बढ़ऽ लागल ।

हाटमे पैसैत देरी बुझि पड़लैक जेना हाट गनगना रहल छैक । एतेक सबेरगरे बनियाँ-बैकाल सभ अपन-अपन दोकान खोलि कऽ वस्तु-जात सब सजा लेने छल । बाट-घाट एकदम चिक्कन-चुनमुन, जेना चानन छिलकैत होइक । शत्रुजीतके आश्चर्य भेलैक जे जाइत कालमे एहि हाटपर बहुत बेर उठलापर आयल छल तैयो एतेक चहल-पहल नहि छलैक । तखन आइ एतेक सबेरगरे चहल-पहल किएक छैक ?

शत्रुजीत महाजनक घर लग पहुँचल । महाजनक दोकानमे पैसबासँ पहिने बिरधनकेँ बाहरेमे एकतामे ठाढ़ रहबाक लेल कहलकैक । अपने दोकानक देहरि पर पहुँचल । ओकरा मोनमे भेल छलैक जे महाजन तँ एखन सुतले होयत । मुदा ओ देखलक जे दोकान फूजल छलैक । महाजन गणेश आ लक्ष्मीकेँ फूल इत्यादि चढ़ा आ धूप-दीप देखा कऽ अपन महाजनी गद्दीपर बैसल छल । गुग्गुल, धूप, धूमनक गमकसँ चारू कात महमहा रहल छल ।

शत्रुजीत महाजनक ध्यान आकर्षित करैत बाजल– महाजन ! हमरा चिन्हलहुँ ?'

महाजन अपन खाता-बही उनटा रहल छल । ओ राजकुमारक बाजब सुनि अकचकायल । फेर आगन्तुक दिस विस्मयसँ तकलक । ओ धड़फड़ा कऽ उठैत बाजल-आउ आउ, बाबू ! अहाँकेँ कोना नै चिन्हब ? अहाँकेँ हम बिसरलहुँ कहिया ?'

शत्रुजीत ठाढ़े ठाढ़ बाजल– मोन अछि जे हम अहाँक ओतऽ अपन रत्नहार राखि एक सय पाँच गोट स्वर्णमुद्रा लेने रही ?'

–सबटा मोन अछि ।' महाजन विनम्रता पूर्वक बाजल ।

शत्रुजीत बेसी समय नहि लगाबऽ चाहैत छल । ओ जल्दी-जल्दी बाजल-महाजन । हम जेना कहने रही, तेना जँ अहाँ कोनो विशेष परिस्थितिमे ओ रत्नहार बेचि लेने होइ अथवा बन्हकी राखि देने होइ तँ जकरा ओतऽ ओ रत्नहार देने होइऐक तकर नाम पता तथा बदलामे लेल गेल राशि कहू । हम ओहि व्यक्तिसँ अहाँ द्वारा लेल गेल राशि व्याज सहित दऽ कऽ हार आपस लऽ लेब । नहि, जँ ओ हार अपनहि लग रखने होइ तँ व्याज सहित कतेक स्वर्णमुद्रा हम अहाँकेँ आपस करी ?'

महाजन विनय सहित कऽल जोड़ि बाजल-बाबू ? बहुत समयक बाद आइ सबेरे दोकान फोलैत देरी अहाँक दर्शन भेल । पहिने स्वागत-सत्कार करबाक कनेको अवसर तँ दियऽ ।' एतबा कहि महाजन बैसबाक लेल एकटा आसन ओछाय शत्रुजीतकेँ बैसबाक आग्रह करैत बाजल-अहाँक ओ रत्नहार ने बेचल, ने बन्हकी लगाओल । जहिना छल तहिना सुरक्षित राखल अछि ।'

शत्रुजीत बाजल-हमरा समय कम अछि आ काज बहुत अछि । तेँ तुरन्त एतऽसँ बहरयबाक अछि । तैयो अहाँक आग्रहेँ बैसि जाइ छी । परन्तु काज जल्दी भऽ जाय ।'

शत्रुजीत महाजनक देल आसनपर बैसि गेल ।

महाजन घरक भीतर गेल आ कनेके कालमे एकटा सम्पोट आ एकरंगा कपड़ामे बान्हल पोटरी लेने बहरायल ।

दुनू वस्तुकेँ शत्रुजीतक आगाँमे रखैत महाजन बाजल-बाबू ! अहाँक अयबाक बाट हम तकैत रहैत छलहुँ । कारण, एहन अमूल्य हारक रक्षा करबाक सामर्थ्य हमरा नहि । हम तँ पहिले दिन कहने रही जे एकर किननिहार सामर्थ्यवान् लोक बेसी नहि अछि । हमरा लग एहन अमोल रत्नहार अछि से बात काने-कान सौंसे नगरमे पसरि गेल । ताहिसँ हमर साख आ प्रतिष्ठा बहुत बढ़ि गेल । बिनु मङनहुँ लोक हमरा ओतऽ अपन धन जमा कऽ राखऽ लागल । हमर व्यवसायमे लाभ बढ़िते गेल । आइ धानपुर हाटेक नहि धानपुर राजक हम पैघ धनपति मानल जाइत छी । तेँ हमरा ई रत्नहार बन्हकी रखबाक खगता किएक होइत ? ई हार तँ हमरालेल सगुनियाँ भेल अछि ।'

महाजन सम्पोट खोलि कऽ ओहिमे राखल रत्नहार शत्रुजीत दिस बढ़ा देलक । शत्रुजीत रत्नहार लेबासँ पहिने अपना लगक पोटरी खोलि, ओहिमे बान्हल मुद्रा सब महाजनक आगाँमे उझिलैत बाजल-महाजन ! एहिमेसँ जतेक मुद्रा लेबाक हो से लऽ लियऽ आ ई हार लऽ जयबाक अनुमति दियऽ ।'

महाजन बाजल-अहाँक द्वारा लेल एक सय पाँच स्वर्ण मुद्रा व्याज सहित लेबाक तँ कोनो बाते नहि । ई हार हमरा लेल बड़ सगुनियाँ भेल । एकरा छुच्छे कोना विदा करब, तेँ ई स्वर्णमुद्राक पोटरी सेहो अछि । हारक संग इहो लियऽ ।'

शत्रुजीतकेँ महाजनक बात सुनि कऽ बड़ आश्चर्य भेलैक । ओ

बाजल–महाजन ! अहाँक पिहानी हम नहि बुझलहुँ । बनीज कयल जाइ छै लाभक लेल । हम अपन बन्हक राखल हार आपस लियऽ अयलहुँ । अहाँसँ लेल राशि व्याज सहित दऽ रहल छी । अहाँ उनटे हारक संग मुद्रा सेहो दऽ रहल छी ! अहाँ तँ मूल धन लाभ सहित लेबाक बदला औरो पूजी बुरा रहल छी । ई उनटा बसात किएक ? पुरान कहबी छैक जे बनियाँक जी धनियाँ सन । दोसरो कहबी छै जे बनियाँके सेबने छटाँक भरि नोन । अहाँ तँ उनटे धार बहा रहल छी । एकर की कारण ? हम नहि बुझि रहल छी !'

महाजन अनुभव कयलक जे पहिल बेर युवक जेना अनुभवहीन, तुनकाह स्वभावक बुझि पड़ल छल तेहन एहि बेर नहि अछि । ओ हँसैत बाजल–बाबू ! इहो कहबी तँ चलै छै जे मूर पलट्टय नाचय साहु !'

महाजन गम्भीर होइत बाजल–एक बेर एकटा साधु हमरा ओहि ठाम अयलाह । हुनक हम आह्लाद पूर्वक अतिथि–सत्कार कयलियनि । एक बेर कतोक वरख पहिनहुँ ओ आयल छलाह । एहू बेर ओ सन्तुष्ट भऽ कऽ विदा होअऽ लगलाह तँ कनेक ठमकि कऽ पुछलनि जे– महाजन ! पहिल बेर आयल छलहुँ तखनुक आ एखनुक स्थितिमे बड़ अन्तर देखैत छी ? अहाँक घरमे कोनो दिव्य आ अद्भुत वस्तु आयल अछि की ? हम अकचकयलहुँ जे ई की जानऽ चाहै छथि । हमरा अहाँबला रत्नहार मन पड़ल । हम कहलियनि– हँ एकटा बहुमूल्य रत्नहार हमरा लग आयल अछि । एक नवकबेर युवक बन्हकी राखि गेल छथि । जहिया औताह, बन्हकी छोड़ा कऽ लऽ जयताह । की अहाँ देखबै ओकरा ?'

–देखाउ ।' साधु बजलाह ।

हम सन्दुकमे राखल रत्नहार आनि कऽ देखऽ देलियनि । ओ गँहिकी नजरिसँ देखि कऽ आँखि मूनि लेलनि जेना ध्यानमे डूबि गेल होथि। जखन आँखि फुजलनि तँ कहलनि– एहि हारमे देवांश छैक । कोनो देवीक सिङारक हार थिकनि । ई हार जँ कोनो लोक पहिरत तँ ओकर अनिष्ट होयतैक मुदा जकरा घरमे श्रद्धा सहित अनामति रहतैक तकर बड़ उन्नति होयतैक ।'

महाजनक बात सुनि कऽ शत्रुजीतक छाती धक दऽ रहि गेलैक ।

ओकरा मन पड़ि गेलैक ओ दिन जहिया ओ राजमहलसँ पड़ायल छल । ओहि दिन सबेरे पूजागृहमे गेल छल । एकटा सोनाक थारीमे रत्नहार राखल देखि ओ ओकरा उठा कऽ अपना गाराँमे पहिरि लेने छल । ओही दिन ओकरा कोनो उध चढ़ि गेलैक । ओ सबसँ लड़ि-झगड़ि कऽ पड़ा गेल आ ओतेक दिन धरि रने-वने छिछिआइत रहल ।

महाजन बाजल-साधुक विचार सुनि कऽ हमरा बोध भेल जे ठीके, जहियासँ हमरा लग ई हार आयल, तहियासँ हमर बनीज-व्यापार बड़ बढ़ल । बहुत लाभ भेल अछि । साधु महराज हमरा कहलनि जे एहि हारमे देवांश छै, तेँ एकरा सब दिन धूप-दीप देखा कऽ पूजा करी तँ अहाँक कल्याण होयत । हम ओही दिनसँ एकरा गहना नहि बुझि देवी-देवताक रूपमे पूजा करऽ लगलहुँ ।'

राजकुमार शत्रुजीत फेर चौंकल । ओ महाजनकेँ पुछलकैक-महाजन ! कतेक समय पहिने कोन तिथिसँ हारक पूजा करऽ लगलहुँ ?'

महाजन मन पाड़ैत आङुरपर बरख-मासक संख्या गनि कऽ कहलकैक जे- तिथि प्रायः अमावास्या रहैक ।'

शत्रुजीतकेँ मोन पड़लैक जे ठीक ओतबे बरख पहिने ओही तिथिकेँ ओकरा हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी भेटल छलैक आ ओकर अदिनताक अन्त होअऽ लगलैक ।

महाजन आगाँ बाजल- ओ साधु महराज फेर कहलनि जे- महाजन ! ई हार अहाँक लग बेसी दिन रहत नहि । जँ अहाँक मनक कामना होअय जे बनीज-व्यापारमे एहिना वृद्धि आ लाभ होइत रहय, तँ अपन लाभमेसँ किछु अंश एहि हारक भागक रूपमे राखि देल करियौक । तखन अहाँक कल्याण होइत रहत । ओहि दिनसँ हम अपन लाभक एकटा भाग एहि हारक निमित्त राखऽ लगलहुँ । आब एहि हारक संग-संग मुद्राक ई पोटरी सेहो अहाँ लऽ जाउ । हार अहाँक थिक तँ एकर लाभांशो अहीँक ने भेल !

शत्रुजीत किछु उत्तर दितैक ताहिसँ पहिनहि महाजन बाजल-देखियौ जे केहन संयोग भऽ गेल । आइ एहि हाटमे सबेरेसँ चहल-पहल किएक छै से बुझबै ?'

शत्रुजीत महाजन दिस उत्सुकतासँ देखऽ लागल । महाजन बाजल-

हम ई हार लेबा कालमे जाहि रतनपुरक राजाक चर्चा कयने छलहुँ जे ई रत्नहार किनबाक सामर्थ्य हुनकेटामे छनि । से संयोग एहन जे ओ केसरपुरसँ बेटा-पुतोहु, बरियाती-सरियाती सहित अपन राज रतनपुर जयबाक बाटमे धानपुर राजक अतिथि रूपमे आयल छथि । हमर सभक राजा ढोलहो दिया देने छथिन जे बरियाती-सरियातीमे जे केओ हाट देखऽ लय आबथि, आ कोनो वस्तु पसिन्न भऽ जाइन तँ ओ वस्तु हुनका लोकनिकेँ उपहारमे दऽ देल जाइन । ओकर जे मूल्य से राजाक दिससँ दऽ देल जयतैक ।'

महाजन शत्रुजीतकेँ कहलकैक– साधु महराजक वचन हमरा सदिखन घुरियाइत रहैत छल जे 'ई हार अहाँ लग रहत नहि' । हम अहाँक अयबाक बाट तकैत रहलहुँ, कतोक बरख बितलोपर अहाँ नहि अयलहुँ । आइ हमरा नगरमे रतनपुरक राजा प्रेसनजीत पाहुन रूपमे आयल छथि । धानपुरक राजक राजा वीरभद्रदेव ओ नगरवासी द्वारा हुनका उपहार देल जयतनि । हम सोचलहुँ जे ई रत्नहार हमरा लग रहत नहि । तखन की तँ चोरि भऽ जायत, ने तँ केओ लूटि कऽ लऽ जायत । तेँ किएक ने एकर पारखी रतनपुरक राजाकेँ उपहारमे दऽ दियनि । मुदा संयोग देखू जे हारक स्वामी अहाँ एखने पहुँचि कऽ हमर मनक भारकेँ हल्लुक कऽ देलहुँ ।'

राजकुमार शत्रुजीत एक क्षण चिन्तित भेल जे ई हार जँ पिताश्रीक हाथमे पड़ितनि तँ की होइत ! आ मने मन अपन कुलदेवीकेँ प्रणाम कयलक । ओ धड़फड़ाइत महाजनकेँ कहलकैक-महाजन, अहाँ अपन पोटरीक मुद्रा आ हमर देल ई सब मुद्रा राखू आ दीन-दुखीक उपकारमे एकरा लगा देबैक ।'

ओ महाजनक हाथसँ झपटि कऽ रत्नहार लऽ कऽ अपन गमछाक खूटमे बान्हि लेलक आ तेजीसँ दोकानसँ बहरा गेल ।

महाजन आश्चर्यसँ तकिते रहि गेल ।

44

बाहरमे बिरधन मोटा पजियौने बैसल कछमछा रहल छल । राजकुमार महाजनक दोकानसँ झटकि कऽ बहरायल । ओ बिरधनकेँ मोटा सहित घिचने-घिचने बाटपर चल आयल ।

बाटमे बिरधनकेँ राजकुमार फेर बुझा कऽ कहलकैक– सुन बिरधन ! तोँ मायकेँ ई जुनि कहिहैक जे तोँ बनिसारमे बन्द छलेँ । कहिहैक जे कमाइ करै छलहुँ । तोरा मोटामे जे सोना–चानीक मुद्राक पोटरी छौक, से दऽ दिहैक ।'

राजकुमार आब जल्दीसँ जल्दी मुरहीबालीक ओतऽ पहुँचऽ चाहैत छल । दुनू गोटे झटकि कऽ चलऽ लागल । मुरहीबालीक दोकानपर जाइसँ पहिने ओ जाहि पाकड़िक गाछ तर बैसल छल, अयबा काल ओही गाछ तर बिरधनकेँ बैसा देलक । ओकरा कहलकैक जे– जखन हम इसारा करबौ तखन चुपचाप चल अबिहेँ ।'

राजकुमार मुरहीबाली लग पहुँचल ।

ओहि ठाम तँ दृश्ये बदलल देखलक ! ओहि ठाम बहुतो महिला सब चूरा कुटबाक आ मुरही भुजबाक काजमे व्यस्त छलि । बहुत गोटे चङेरा सबमे चूरा साँठि रहल छलि । कतोक गोटे सीक–पटैपर रातुक पौरल छल्हिगर दहीक छाँछ सब सरिया कऽ राखि रहल छलि ।

राजकुमारक आँखि मुरहीबालीक खोज करऽ लागल । ओ एकटा ऊँच स्थानपर एकटा महिलाकेँ देखलक । ओ आन महिला सबकेँ विभिन्न काज ओ ओरियानक लेल अढ़ा रहल छलैक । पहिने तँ ओहि ठामक असार–पसार देखि कऽ राजकुमार चकिते रहि गेल । मनमे भेलैक जे भुतिया कऽ कोनो आन ठाम तँ ने चल आयल ! ओ चारू कात मूड़ी घुमा कऽ ठिकियौलक । ओ दुनू पाकड़िक विशाल गाछ तँ ओहिना छलैक जाहि तर ओ भूखल–पियासल थाकि कऽ सुस्तायल छल । नहि, ओ ठीके स्थानपर आयल अछि, से सोचि कऽ ओहि स्त्री लग पहुँचल जे सबकेँ अढ़ा रहल छलैक । लग गेलापर चिन्हलक जे ओ तँ मुरहीएबाली छलैक ।

राजकुमार ओकरा लग जाय पुछलकैक–मुरहीबाली ! हमरा चिन्हलह ?'

मुरहीबाली राजकुमार दिस तकलक । कने चिन्हबामे दोच भेलैक मुदा फेर सम्हरि कऽ बाजलि–बाबू ! नै किए चिन्हब ! पहिल बेर जे आयल रही तँ अहाँक पहिराबा पैघ लोक सन छल । आइ अहाँक हमरे सभ सन साधारण लोकक पहिरन–ओढ़न अछि । मुदा मुह–ठान तँ वैह अछि । तखन नहि किए चिन्हब ? अहींक देल पाँच गोट सोनक मोदरासँ ई जे किछु देखै

छिऐ से भेलैए । ओहि मोदरासँ उखरि, समाठ, खापड़िक बासन, सूप, चालनि, छिट्टा, पथिया सब किनलियै । मुरही आ चूरा लय धान किनलहुँ । टोल-पड़ोसक दु-चारि टा जे बेअबला छल तकरा कहलियै जे सब गोटे मीलि कऽ चूरा-मुरहीक व्यवसाय करह । सभ गोटे काज करबाक बोनि लेब । पूजी जमा रहत आ लाभमे सब गोटेक बराबरि हिस्सा रहतै । सभ लागि गेल । आब हमरा सभक एहि काजमे धानपुर हाटक आनो आनो माउगि सभ आबि कऽ मीलि गेल । आब तँ एहि ठामक मुरही, चूरा आ दही बड़ नामी भऽ गेलैए । धानपुर हाटक एहि भागक नामे भऽ गेलैए सुड़सुड़-मुड़मुड़ हाट ।

शत्रुजीत चकित होइत पुछलकैक- ई सुड़सुड़-मुड़मुड़ की भेलै ?

मुरहीबाली बाजलि-दही-चूरा सानि कऽ खाइमे सुड़-सुड़क धुनि बहराइ छै आ जखन मुरही फँकैत छै तँ मुहसँ कुड़कुड़-मुड़मुड़ धुनि बहराइ छै । तेँ हाटक एहि दिसकेँ लोक ई नाम दऽ देलकै ।'

मुरहीबाली कनेक दोसर दिस ताकि कऽ जल्दी-जल्दी चङेरा सबमे चूरा भरि कऽ भार पर रखबा लेल कहलकै । भरिया सब अपन-अपन सीक-पटै पसारि कऽ तैयार छल ।

शत्रुजीत कहलकैक- मुरहीबाली ! कथीक एतेक हलचल मचल छह ? एतेक गमगमा किए रहल छै ? लगै छै जेना रङ-विरङक फूल पसरल होइक मुदा फूल आ फूलबाड़ी तँ कतहु देखिते ने छिऐ !'

—बाबू ! अहाँकेँ बुझल नहि अछि ? रतनपुरक राजाक छोटका कुमरक बियाह फुलकेसरिकुमरिसँ भेलनि । हुनके दुरागमन करा कऽ वर-कनियाँ लऽ कऽ बरियाती-सरियातीक संग ओ अपन रतनपुर राज जा रहल छथि । ओही बाटमे आइ हमरा सभक राजाक पाहुन छथिन ।' मुरहीबाली बुझबैत कहलकैक ।

शत्रुजीत बाजल-ताहि लय एहि ठाम किएक एना हलचल मचल छै ? ई भार-दोरक तैयारी किएक छै ?'

मुरहीबाली शत्रुजीतकेँ कहलकैक— बाबू ! हमर सभक धानपुर राजक राजा दिससँ हुनका सभकेँ उपातिमे पठयबाक लेल दही-चूराक इन्तजाम करबाक भार हमरे सबकेँ देल गेल । ताहि लय एकौर आ बकेन

महिँसि सभक दूध जमा कऽ कऽ छल्हिगर दही पौरल गेलैए। बासमती, तुलसी फूल, सतरिया, रमुन्नी, कामोद, कनकजीर सन मेहिक्का गमकौआ धानक चूरा कूटल गेलैए। चङेरा सबमे चूरा साँठल जाइ छै। ओकर गमकसँ चारू कात महमहा रहल छै।'

शत्रुजीत अबोध-अनजान बनल सुनैत रहल। मुरहीबाली बाजलि-बाबू ! अहीँक देल पाँच गोट सोनक मोदराक परतापेँ आइ एतेक बेअसरा-बेअबला सब सुखसँ जीबि रहल अछि। सभक रोआँ जुड़ा रहल छै। भगवान अहाँक भल करथु।'

ओ कनेक रुकि गप्पक क्रम बदलैत शत्रुजीतकेँ पुछलकैक– बाबू ! जाहि मनोरथ लऽ कऽ घरसँ बहरायल छलहुँ, से पूर भेल ?'

–हँ, पूर भेल।' शत्रुजीत मन्दे स्वरमे बाजल।

मुरलीबाली खुसी जनबैत बाजलि– भगवान भोग देथु।' फेर मन्द स्वरमे बाजलि-बाबू ! फुलकेसरिकुमरिक बियाह-दान आ दुरागमनो भऽ गेलनि। आब अपन सासुर जाइ छथि। अहूँक मनोरथ पूर भेल। अहाँ जतऽ गेल छलहुँ ताहि सबमे हमर बिरधनमा कतहु नै भेटल ?'

ई बजैत-बजैत ओकर कोँढ़ जेना फाटऽ लगलैक। ओकर आँखिक कोसामे कोरे कोर नोर भरि गेलैक।

शत्रुजीत बाजल किछु नहि, गुम्म रहल। मुदा पाकड़िक गाछ तर बैसल ओकरे दिस टुकटुक तकैत बिरधनकेँ अयबाक इसारा कयलकैक।

बिरधन मोटा लेने सहटि कऽ आयल आ मुरहीबालीक आगाँमे ठाढ़ भऽ गेल। मुरहीबाली एक अनचिन्हार आगन्तुककेँ देखि चकुआइलि। ओ एक डेग पाछाँ घुसुकि गेलि ई सोचैत जे ई कोन मनसा आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल ! बाजलि-के छह हौ ?'

शत्रुजीत बिरधनक मुरेठा आ मुहपर झाँपनबला गमछा हटा देलकैक आ कहलकैक– मुरहीबाली ! आब देखहक तँ !'

मुरहीबाली ध्यानसँ आगन्तुककेँ लगसँ ठिकिया कऽ देखलक आ एके बेर चिचिया उठलि-बिरधनमा छेँ रे !' ओ भरि पाँज कऽ बिरधनकेँ

पकड़ि घड़ाजोड़ी कऽ कऽ विलाप करऽ लागलि– बिरधनमा रे बिरधनमा ! केहन निदरदी भऽ गेलही रे चण्डलबा ।'

शत्रुजीत डबडबायल आँखिएँ माता–पुत्र–मिलनक दृश्य देखैत रहल। ओकरा रानीमाँ मोन पड़ि गेलथिन । ओकरा बुझि पड़लैक जेना मुरहीबाली नहि, रानीमाँ होथिन आ बिरधन नहि ओ स्वयं होअय ! ओ चुपचाप पैर बारने ओहि ठामसँ सहटि गेल आ झटकले अपना शिविर दिस चल गेल ।

शिविरक पछिला भागसँ प्रहरी सभक नजरि बचा कऽ शिविरक घेराकेँ टपि कऽ भीतर प्रवेश कऽ गेल।

45

रतनपुर राजक सीमा लगिचा गेल छलैक । अन्तिम रातुक विश्राम–शिविरसँ एक–डेढ़ पहर चलबाक बाट शेष रहि गेल छलैक । प्रात:काल यात्रासँ पूर्व राजा प्रसेनजीत अपन सेनाप्रधान, सुमतिबल ओ धर्मनिधिकेँ बजा कऽ विचार देलथिन जे–आब अल्पे समयमे हम सब रतनपुर राजमे प्रवेश करब । रतनपुर राजमे लोक राजकुमार शत्रुजीत जे राजमहल छोड़ि कऽ चल गेल छलाह, तनिका देखबा लेल आतुर–उताहुल होयत । एहनामे उपरा–उपरीक कारणे रेड़ा भऽ जा सकैत अछि । तेँ हमर विचार जे शत्रुजीतक रथ जे जुलूसक बीचमे रहैत छलनि तकरा आब सबसँ आगाँ चलनिहार दुनू ध्वजधारीक ठीक पाछाँमे राखि यात्रा आरम्भ कयल जाय । रतनपुर सीमामे प्रवेश करिते रतनपुर राजक जनता अपन राजकुमारकेँ सहजतासँ देखि सकत आ ओ कोनो प्रकारक आतुरता नहि देखाओत ।

सुमतिबल कहलथिन–महाराज, कुमरजीकेँ सबसँ आगाँ राखब सुरक्षाक दृष्टिएँ ठीक होयत ?'

राजा प्रसेनजीत कहलथिन–आबो शत्रुजीतक क्षमतापर सन्देह भऽ रहल अछि ?'

ई जे विचार–सिचार चलि रहल छल तकर भनक शत्रुजीतकेँ लगलैक । ओ तुरन्त अपनहि पिताक समक्ष आबि गेल । ओहि ठाम ओ सुमतिबलकेँ कहलकनि–मान्यवर ! अहाँकेँ हमर सुरक्षाक चिन्ता उचिते

अछि । मुदा विश्वास राखू जे कोनो आकस्मिक आक्रमणक प्रतिकार करबामे हम समर्थ छी । अपने सब चिन्ता नहि करी ।'

सुमतिबल एतबा दिनमे शत्रुजीतक साहस आ शौर्यसँ परिचित भऽ गेल छलाह । तेँ मौन रहि गेलाह । यात्रा पुनः प्रारम्भ भेल ।

सबसँ आगाँ बाटक दुनू दिस दुइ गोट घोड़सवार सैनिक राजध्वज लेने बढ़ि रहल छल । तकरा बाद शत्रुजीतक रथ । तखन किछु सशस्त्र सैनिक दल छल । ताहिसँ पाछाँ राजा प्रसेनजीतक रथ चलि रहल छलनि । ओकर पाछाँ फुलकेसरिकुमरि ओ हुनक सखी-परिचारिका लोकनिक सवारी छल । ताहिसँ पाछाँ फेर सशस्त्र सैनिक छल । पुनः सुमतिबल, धर्मनिधिक रथ छलनि । ताहि पाछाँ सेना नायकक नेतृत्वमे सैनिकक दल चलि रहल छल ।

रतनपुरक सीमा बस किछुए दूर रहि गेल छल ।

दुइ पड़ोसी राजक बीचमे साधारणतः पहाड़, नदी आदि सीमा-रेखा रहल करैत छलैक । जाहि ठाम समतल भूमि आ खेत-पथार रहैत छलैक ताहि ठाम दुनू पड़ोसी राज सीमाक काते-काते चाकर धग्गी जकाँ भूमि परती छोड़ि अपना-अपना दिस बान्ह बना लैत छल । ओहिपर भाँति-भाँतिक गाछ पाँती-जोड़सँ रोपि देल जाइत छल । बीचक भूमिक पट्टीमे दुनू पड़ोसी राजक प्रजा खेती-बारी नहि कऽ सकैत छल । गोचर भूमिक रूपमे दुनू राजक माल-जाल चरि सकैत छल । राही, बटोही, तीर्थ-यात्री, साधु-सन्त, बनिजार सब अपन अस्थायी डेरा खसा सकैत छल । ओहि पर कोनो रोक नहि छलैक ।

रतनपुरक सीमासँ किछु दूर पहिने बरियाती-सरियातीक दल एकाएक ठमकि गेल । आगाँ लोकक पैघ समूह बाट छेकने ठाढ़ छल । सभक मनमे सन्देह होबऽ लगलैक जे ई कोनो आक्रमणकारीक दल तँ ने थिकैक !

सभ सैनिक सचेत भऽ अपन-अपन हथियार तानि कऽ आक्रमण करबाक लेल आगाँ बढ़ल । शत्रुजीत तुरन्त रथपरसँ उतरि गेल । ओ सामने दूरपर ठाढ़ लोक सबकेँ ध्यानसँ देखलक । ओकरा सभक हाथमे कोनो प्रकारक हरबे-हथियार होयबाक आभास नहि बुझि पड़लैक । आक्रामकता सूचक कोनो चंचलता नहि छलैक । बुझि पड़लैक जेना ओ सब कऽ ल जोड़ने होअय । ओ एकसरे आगाँ बढ़ि गेल । आनो सैनिक सभ राजकुमारक

पाछाँ लागल चलऽ लागल ।

बाटपर ठाढ़ लोकसभ लग शत्रुजीत पहुँचल तँ ओ सब माथ झुका कऽ राजकुमार शत्रुजीतक अभिवादन कयलकैक । ओ सभ देखबामे शान्त, सज्जन ओ भद्रलोक बुझि पड़लैक ।

शत्रुजीत जिज्ञासा करैत पुछलकैक- तों सब के छह ? एना बाट छेकि कऽ किएक ठाढ़ छह ?'

शत्रुजीतक जिज्ञासाक उत्तर बाट छेकनिहार लोक सब दिससँ देल जैतैक तखने पाछाँसँ राजा प्रसेनजीत सेहो अपन रथसँ उतरि कऽ सदल-बल पहुँचि गेलाह ।

राजा प्रसेनजीतकेँ सामनेमे देखि ओ लोक सब कऽल जोड़ि माथ नबा कऽ प्रणाम कयलकनि । प्रसेनजीत राजकुमार दिस प्रश्नसूचक दृष्टिसँ तकलनि ।

शत्रुजीत तँ स्वयं एहि लोक सभक परिचयसँ अनभिज्ञ छल । परन्तु एतबा विश्वस्त भऽ गेल छल जे ओ सभ कोनो हानि वा बाधा कयनिहार नहि छलैक ।

सम्मुख कऽल जोड़ने ठाढ़ भेल लोक सबमेसँ एकटा मुँहपुरुख सन व्यक्ति बाजल– श्रीजी ! हमरा लोकनि ओ भिखारि सब छी जे एक दिन भूखसँ तबधल राजमहलक आगाँ कलोल करैत रही तँ छोटका कुमरजी हमरा सभकेँ भरि पेट भोजन करौलनि आ सबकेँ एक-एकटा स्वर्ण मुद्रा दऽ कऽ कहलनि जे तोरा लोकनि भीख माङब छोड़ि एहिसँ कोनो रोजगार करह ।'

मुहपुरुख बाजल-सभ भिखारि कुमरजीक कहल बातक गीरह बान्हि लेलक । सभ अपनामे मीलि कऽ छोट-छोट वस्तु सभ, जेना-सुइ-डोरा, सिनुर-टिकुली, लहठी, नोन, गुड़, गुलाबछड़ी मिठाइ, ममरखा आ परसौतीक दवाइ आ एहने एहने वस्तु सब सूप, चङेरी, पथिया, धोकड़ी इत्यादिमे राखि गामे-गामे, घरे-घरे घुमि घुमि कऽ बेचऽ लगलहुँ । हमरा सभक बनीज बढ़ऽ लागल । एहिमे जतऽ कतहु कोनो भिखारि भेटै छल तँ ओकरो सभकेँ एहि काजमे जोड़ैत गेलहुँ । हमरा सभक समूह बढ़ैत गेल । बनीज-व्यापार बढ़ैत गेल । लोक हमरा सबकेँ बनिजार कहऽ लागल अछि । आइ-काल्हि हमरा सभकेँ वस्तु सभ लादि उभि-उभि कऽ एक नगरसँ दोसर नगर, एक राजसँ दोसर राज लऽ जयबा लेल घोड़ा, गदहा, महीस, बैलगाड़ी अछि । धनक

कोनो कमी नहि अछि । सभ सुखी अछि । ई सब भेल अछि छोट कुमरजीक कृपासँ ।'

राजा प्रसेनजीत, राजकुमार शत्रुजीत ओ हुनका लोकनिक संग ठाढ़ व्यक्ति सब मुग्ध भऽ कऽ सुनैत रहलाह।

मुहपुरुख आगाँ बाजल-जखन हमरा लोकनिकेँ जानल भेल जे छोट कुमरजी रूसि कऽ रतनपुर राज छोड़ि कऽ कतहु चल गेलाह तँ बड़ दुख भेल । जाहि राजमे बनीज करऽ जाइ तँ सब गोटे कुमरजीक पता लगयबाक चेष्टा करी । जखन जनतब भेटल जे राजा श्रीक संग कुमरजी अपन राज आबि रहल छथि तँ हम सभ दर्शन लेल रतनपुर राजक एहि सीमा-पट्टीमे आबि कऽ डेरा खसा देलहुँ ।'

राजा प्रसेनजीतकेँ बुझि पढ़लनि जे ओ सब औरो किछु कहऽ चाहैत छल जे संकोचवश नहि बाजि रहल छल । राजा शत्रुजीत दिस संकेतक दृष्टिसँ तकलथिन । शत्रुजीत पिताक तकबाक आशय बुझि गेल । ओ मुहपुरुखकेँ पुछलकैक– तोँ सब की चाहैत छह ? कोन प्रयोजनसँ एतऽ बाट घेरने ठाढ़ भेल छलह ?'

मुहपुरुख हाथ जोड़ने बाजल-कुमरजी ! हम सब साहस कऽ कऽ बाजि रहल छी । हम सब दूटा प्रार्थना करऽ चाहैत छी । पहिल ई जे हमरा सबकेँ जे अपनेक द्वारा एक-एक स्वर्णमुद्रा देल गेल छल, से तँ रतनपुर राजक राजकोषक सम्पत्ति छल । ओहि मूलधनसँ हमरा सभक बनीजक विस्तार भेल । जाहि जाहि राजमे जा जा कऽ बनीज कऽ कऽ लाभ अरजैत छी, ताहि ताहि राजकेँ कर दैत छिऐक । मुदा जे रतनपुर राज मूलधन देने छल तकरा एखन धरि किछु नहि देलिऐक अछि । हमर सभक विचार भेल अछि जे अपन लाभक एक अंश रतनपुर राजक राजकोषमे दिऐक ।'

शत्रुजीत बाजल- आ दोसर कोन प्रार्थना छह ?'

मुहपुरुख बाजल-हमरा सभक बनीजक विस्तार भेल तँ अपन रतनपुर राजसँ बाहर भऽ कऽ आनो-आन राज सभमे जाय, घुमि-घुमि कऽ बनीज करऽ लगलहुँ । लोक हमरा सबकेँ बनिजार कहऽ लागल अछि । कतहु स्थिर आवास नहि । जाहि राज अथवा नगरमे जाइत छी तँ ओतऽ कोनो गाछी अथवा परतीमे

डेरा खसबैत छी । ओहि इलाकामे घुमि-घुमि कऽ वस्तु सभ बेचैत छी आ बहुतो वस्तु सब आन ठाम जा कऽ बेचबा लेल किनितो छी । हमरा सभक जीवनमे स्थिरता नहि अछि । बहुत बेर अपन वस्तु सबकेँ उभि कऽ लऽ चलबामे असमर्थ भेलापर माटिक मोलमे बेचि दियऽ पड़ैत अछि । तेँ बहुत बेर लाभक लोभमे मूलोमे हानि भऽ जाइत अछि । तेँ हमरा सभक सेहन्ता अछि जे अपन रतनपुर राजमे अपन स्थायी हाट स्थापित करबाक ठओर देल जाइत, जाहि ठाम हम सभ अपन बनीजक सामग्री सब संचय कऽ रखितहुँ आ ओकरे स्थायी आश्रय बना कऽ अपन-अपन बनीजक पसार करितहुँ ।'

राजकुमार शत्रुजीत बाजल- देखह, तोँ सब अपन पुरना वृत्ति छोड़ि व्यवसायमे लगलह आ एतेक उन्नति कयलह । आब अपन आयमेसँ किछु भाग रतनपुरक राजकोषमे दियऽ चाहैत छह, से प्रशंसनीय । किन्तु आन राजमे यात्राक क्रममे धन दानमे देब तँ उचित मानल जाइत अछि किन्तु आन राजक सीमामे रतनपुरक राजा अथवा राजपुरुष द्वारा ककरहुँसँ धन लेब नियम विरुद्ध होयत ।'

शत्रुजीत पिता प्रसेनजीत दिस तकलकनि । प्रसेनजीत शान्त चित्त शत्रुजीतक बात सुनि रहल छलाह ।

शत्रुजीत आगाँ बाजल-तोरा लोकनि रतनपुर हाट बनयबाक जे बात कहलह, से वास्तवमे हमरे मनक बात कहलह । हमरा मनमे ई बात बैसि गेल अछि जे रतनपुर राजमे सेहो धानपुरे हाट सन एकटा पैघ हाट स्थापित करी । एहि काज लय हमरा अनायास तोहर सभक सहयोग भेटि रहल अछि । ओ हाट स्थापित भेलापर तोँ सब बनिजार नहि, नगर-अर्थपति भऽ कऽ रहबह ।'

शत्रुजीत मुहपुरुखक संगहि बनिजार समूहपर दृष्टि घुमबैत बाजल-परन्तु ई दुनू काज एतऽ नहि भऽ सकैत अछि । तोरा लोकनि रतनपुरक राजधानी चलह । ओहि ठामक उत्सवमे चलबा लेल तोरा सबकेँ हकार दैत छियह । उत्सवक पश्चात् तोहर सभक इच्छा अवश्य पूर्ण होयतह ।'

बनिजार सब राजा आ राजकुमारक जयजयकार करैत बाटक दुनू दिस भऽ कऽ ठाढ़ भऽ गेल ।

शत्रुजीत राजा प्रसेनजीतकेँ विनम्रतापूर्वक कहलकनि-पिताश्री ! रथ, हाथी, घोड़ा, पालकी इत्यादिपर जे गोटे छलाह से सभ अपनेकेँ उतरल देखि

उतरि गेलाह अछि । अहाँ रथपर सबार भऽ जाइ, जाहिसँ आनो लोक अपन-अपन वाहनपर सबार भऽ कऽ रतनपुरक सीमामे प्रवेश करथि ।'

राजा सबकेँ अपन-अपन वाहनपर चढ़बाक आदेश देलथिन । अपनहुँ रथारूढ़ होयबा लेल उद्यत भेलाह । परन्तु शत्रुजीत अपना स्थानपर ठाढ़े रहल ।

प्रसेनजीत पुछलथिन-राजकुमार ! अहाँ किएक ने रथपर चढ़ैत छी ?'

शत्रुजीत बाजल-पिताश्री ! हम पैरेँ रतनपुर राजसँ बाहर भेल छलहुँ, तेँ हम अपन जन्म-भूमिक सीमामे पैरहिँ चलि कऽ प्रवेश करऽ चाहैत छी ।'

राजा अनुभव कयलनि जे राजकुमार भावुक भऽ गेलाह अछि । ओ सबकेँ अपन-अपन स्थानपर जयबाक संकेत देलथिन ।

शत्रुजीत पैरेँ आगाँ बढ़ैत रतनपुर राजक सीमा रेखापर पहुँचल । डेग आगाँ बढ़बितय कि एकाएक ठमकि गेल जेना कोनो अति पवित्र वस्तुपर अनचोकेमे पैर पड़बाक सम्भावनासँ स्तम्भित भऽ उठल हो । ओ ठामहि ठेहुनियाँ दऽ बैसि गेल आ अपन माथ धरतीमे सटा देलक । चिरकालक बाद अपन धरतीक माटिक स्पर्शसँ ओ गह्वरित-रोमांचित भऽ गेल । ओकर आँखिमे नोर ढबढबा गेलैक ।

शत्रुजीतक पाछाँ अबैत बरियाती-सरियातीक समूह आ आगाँमे दूर-दूरसँ आबि कऽ जमा भेल हगामा लोकक करमान चकित भऽ कऽ शत्रुजीतकेँ देखैत रहल ।

शत्रुजीत थोड़ेक काल ओहिना अपन माथ धरतीपर टेकने रहल जेना अपन अपराधक हेतु मातृभूमिसँ क्षमा मङैत हो । थोड़ेक कालक बाद ओ अपन माथ उठौलक आ नीचाँसँ चुटकी भरि माटि उठा कऽ अपन कपार ओ छातीमे लगा लेलक । फेर सोझ भऽ कऽ ठाढ़ भेल आ कऽल जोड़ने रतनपुर राजमे प्रवेश करैत आगाँ बढ़ऽ लागल ।

46

ऋतुराज ठीक ओही ठाम ठाढ़ छल जतऽ किछु वर्ष पूर्व जयबा काल शत्रुजीत ओकर पीठ थपथपबैत कहने छलैक जे- जाह हे हमर प्रिय मित्र ! हमर बाट तकिहह ।' आ अन्तिम बेर घोड़ाजोड़ी कऽ कऽ विदा कयने छलैक।

ओ अत्यन्त व्यग्र भऽ कऽ खुरछाही कटैत छल । ओ रहि रहि कऽ अपन अगिला टाङक खुरसँ माटि खखोरऽ लगैत छल । ऋतुराजक एक पाँजरमे सुबन्धु आ दोसर पाँजरमे जादूगर ठाढ़ भेल ओकर पीठ, गरदनि आ देह सोहरबैत शान्त करबाक चेष्टा करैत छलैक ।

ओमहर शत्रुजीत उठि कऽ ठाढ़ भेल आ आगाँ बढ़ल । ऋतुराज आ शत्रुजीत एक दोसराकेँ देखलक । ऋतुराज सहसा अपन पछिला टाङपर ठाढ़ भऽ गेल । ऊर्ध्वमुख मूड़ी कयने अगिला दुनू टाङ मोड़ि खूब जोरसँ हिहिआय लागल । एहन सन, जेना ओ हुलाससँ शत्रुजीतक अभिवादन करैत हो ।

ऋतुराजपर शत्रुजीतक दृष्टि गेलैक । ओ दौड़ि कऽ ऋतुराज लग आयल । ओ ऋतुराजक गरदनि पकड़ि लेलक । ऋतुराज अपन थुथुन राजकुमारक देहमे सटा कऽ रगड़ऽ लागल । शत्रुजीत ऋतुराजक सौंसे देहकेँ सोहरा कऽ पीठ थपथपौलक । ऋतुराज एकदम शान्त भऽ गेल ।

सुबन्धु कनेक हटि कऽ ठाढ़ भऽ गेल छल । शत्रुजीतक दृष्टि अकस्मात् सुबन्धुपर पड़लैक– अरे मीत सुबन्धु ! तोँहू एतऽ आबि गेल छलह ?'

ओ झपटि कऽ सुबन्धुकेँ भरि पाँज कऽ पकड़ि लेलक । सुबन्धुओ राजकुमारसँ लपटि गेल । दुनूक आँखि नोरा गेलैक ।

शत्रुजीत आ सुबन्धु थोड़ेक काल ओहिना रहल । फेर एक दोसरासँ फराक भेल तँ शत्रुजीत सुबन्धुकेँ पुछलकैक– तोँ एतऽ धरि कोना अयलह ?'

–कि हमरा अपन मित्र लय एतबो दूर नहि अयबाक चाही !' सुबन्धु कहलकैक ।

–नहि, तोँ तँ अपन गाममे रहैत छलह । राजमहलसँ तोरा कोनो विशेष सम्पर्क नहि छलह । तखन हमर ऋतुराजक संग छह, से देखि जिज्ञासा जागि गेल । तेँ पुछलियह । तोरा रोख लागि गेलह ?' राजकुमार सुबन्धुकेँ पोल्हबैत बाजल ।

सुबन्धु बाजल– हम ऋतुराजक संग किएक, तकर उत्तर अहाँकेँ जादूगर देत ।'

–जादूगर !' राजकुमार शत्रुजीत चकित होइत बाजल । सुबन्धु

ऋतुराजक बाम भागमे किछु दूर हटि ठाढ़ भेल जादूगर दिस आङुर देखा देलकैक ।

राजकुमार सुबन्धुक हाथ छोड़ि झटकि कऽ जादूगर लग गेल । जादूगरकेँ देखि बाजल-जादूगर ! तोँ हमर बड़ उपकार कयने छह । तोरा रतनपुर राजक सेवकक रूपमे राखि लेल गेलह, ताहिसँ हमरा बड़ सन्तोष भेल । मुदा तोँ आ सुबन्धु ऋतुराजक संग छह, तकर अर्थ हमरा नहि लागि रहल अछि ।'

जादूगर बाजल– कुमर जी ! अहाँक पत्र ओ वस्त्रादिक मोटरी पहुँचाबऽ अयलहुँ तँ हमरा राजमहलक सेवक रूपमे राखि लेल गेल आ हमरा ऋतुराजक परिचर्याक भार देल गेल । हम जेना-तेना ऋतुराजसँ दोस्ती कयलहुँ । परन्तु ऋतुराज रहैत छल, रहैत छल, एके बेर बगदि कऽ बेसम्हार भऽ जाइत छल । एक दिन एहिना बगदि कऽ दुलत्ती झाड़ैत एकटा गाममे चल गेल । हम ऋतुराजक पाछाँ पाछाँ अपसेयाँत भेल दौड़ल जाइत रही । एकाएक खूब जोरसँ 'ऋतुराज' कहि कऽ ककरो चिकरब सुनलहुँ । अपन नाम सुनि ऋतुराजक टाप देब मन्द भऽ गेलैक । एकटा युवक झपटि कऽ ऋतुराजक घिसियायल जाइत लगाम पकड़ि कऽ घिचलक । ऋतुराज एकाएक ठाढ़ भऽ गेल । ओ युवक यैह सुबन्धु छलाह । ओहि दिनसँ जहिया कहियो ऋतुराज बगदैत छल तँ सुबन्धुए आबि एकरा सम्मत करैत छलथिन ।'

शत्रुजीत जखन जादूगरक बात सुनैत छल तँ सुबन्धुओ ओकरा पाछाँमे आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल छल । ओ बाजल-कुमरजी ! अहाँकेँ मोन अछि ? एकबेर हमरा गाम गेल रही । हम एक बूढ़ वैद्य लग अहाँकेँ लऽ गेल रही । वैद्य अहाँकेँ औषधि देने रहथि ।'

–हँ, हमरा मोन अछि ओ बात ।' शत्रुजीत बाजल ।

–अहाँक रतनपुरक राजमहलसँ पड़ा गेलाक कतोक समयक बाद जादूगरकेँ ऋतुराजक सेवक बनाओल गेल । जादूगर जे घटना कहि सुनौलक अछि, तकरा बाद जखन ऋतुराज बेसी बमकैत-बगदैत छल तँ ओकरा सम्मत करबाक लेल हमरे बजाओल जाइत छल ।' सुबन्धु हँसैत बाजल– बुझू जे ओहि दिनसँ ऋतुराजक हमही वैद्य आ हमही औषधि बनि गेलिऐक अछि ।'

जादूगर बाजल– कुमरजी ! अहाँक विवाहक चर्चा आ कनियाँक संग आगमनक बात सुनि कऽ ऋतुराज सतत खुरछाही कटैत रहैत छल । ई फेर ने उतफाल मचबऽ लागय तेँ राजकुमार युवराजश्री आदेश देलथिन जे– बरियाती–सरियातीकेँ अरियाति कऽ अनबा लेल जे दल साजि कऽ जायत ताहिमे ऋतुराजोकेँ लऽ गेल जाय ।'

रतनपुरराजक सीमापरसँ बर–कनियाँ आ बरियाती–सरियातीकेँ अरियाति कऽ अनबा लेल दलक गेलाक बाद ऋतुराज उतफाल ने मचाबऽ लागय, तेँ युवराजश्री आदेश देलथिन जे ओहि दलमे ऋतुराजोकेँ लऽ गेल जाय जकर भारा सुबन्धु आ जादूगरकेँ रहत ।'

जादूगर आगाँ बाजल–कुमर जी ! तेँ सुबन्धु आ हम एकरा संग लागल रहैत छी ।'

सुबन्धु हँसैत बाजल–राजकुमार ! आब अपन वाहनकेँ अपने सम्हारू ।'

राजकुमार शत्रुजीत बाजल–तोरा दुनू गोटा हमर प्रिय ऋतुराजकेँ एतेक दिन धरि सम्हारने रहलह, ई गुण कहियो नहि बिसरबह ।'

एतबा कहि ओ ऋतुराजक गरदनिकेँ अपन पाँजमे लेलक आ ऋतुराजक कानमे मुह सटा कऽ फुसफुसा कऽ बाजल– ऋतुराज ! तोँ हमर सुबन्धुक मान रखलह तँ हम बुझैत छी जे तोँ हमर मान रखलह । जादूगरो हमर उपकार कयने छल तेँ ओहो हमर अपन लोक अछि । ई नीक लागल जे ओकरो तोँ चिन्हलहक ।'

शत्रुजीत एतबा कहि ओकर पीठ थपथपा देलक । ओ सुबन्धु आ जादूगरकेँ कहलकैक जे तोरा लोकनि ऋतुराजकेँ लऽ कऽ आगाँ चलह । रानीमाँकेँ पहिनहि समाद पहुँचा दहुन गऽ जे हम हुनकर पुतहु फुलकेसरिकुमरिकेँ लऽ कऽ अपन रतनपुर राजक सीमामे आबि गेल छी । शीघ्र राजमहल पहुँचब ।'

सुबन्धु ओ जादूगर अपन–अपन घोड़ा पर सवार भऽ कऽ विदा होअऽ लागल तँ ओहिसँ पहिनहि ऋतुराज राजधानीक बाटपर दौड़ऽ लागल।

पाछाँसँ बरियाती-सरियातीक सवारी पहुँचल तखन शत्रुजीत अपना रथपर सबार भऽ गेल । ओहि ठाम पहिनहिसँ जमा रतनपुर राजक निवासी सभक समूह स्वागत-सम्मानमे फूल बरिसाबऽ लागल । फूलक ओहि बरखामे नहाइत बरियाती-सरियातीक दल रतनपुर राजधानी दिस बढ़ऽ लागल ।

47

कतोक वर्षक बाद आइ रतनपुर राजधानी आ राजमहलमे आनन्द आ उल्लासक वातावरण छलैक । कतोक वर्ष पूर्व रूसि कऽ पड़ा गेनिहार छोटका राजकुमार शत्रुजीतक अपन नववधू फुलकेसरिकुमरिक संग आगमनक अवसरपर नगरक प्रत्येक भवन वन्दनवारसँ सजाओल गेल छल । प्रत्येक द्वार पर पुरहर-पातिल सजा कऽ राखल छल । धूप आ गुग्गुलक धूआँसँ सौँसे नगर महमहा रहल छल । द्वार सबपर फूलक पथार महमहा रहल छल । जहाँ-तहाँ भाँति भाँतिक नाच-तमासा भऽ रहल छल ।

रतनपुरक राजमहलक सजावटिक शोभा अवर्णनीय छल । राजमहलक शोभा देखबाक लेल नगरक सभ वर्गक लोक जमा भऽ गेल छल ।

ओहि ठाम जहाँ तहाँ गुणी-गबैया, नट-नटुआ सभ अपन अपन कला देखा रहल छल ।

आइ कतोक वर्षक बाद जादूगर अपन इन्द्रजालक करतब सब देखा कऽ लोक सभकेँ आश्चर्यित कऽ रहल छल । लगैत छलैक जेना आइए ओ अपन सब कला देखा देत । तखने एकटा भव्य रथपर राजकुमार शत्रुजीत, राजकुमारीफुलकेसरि कुमरिक संग रतनपुर राजमहलक अन्तःपुरक मुख्य भवनक आगाँ पहुँचल । द्वारपर बड़ अधीरताक संग स्त्रीगण लोकनिक संग ठाढ़ि रानी कर्णावती बड़े उल्लासपूर्वक बेटा-पुतोहुकेँ अरीछि-परीछि कऽ राजमहलमे लऽ गेलथिन । पूरा राजमे आनन्दोत्सव मनाओल जाय लागल । राजकुमारकेँ एतेक वर्षक बाद फुलकेसरिकुमरि सन सुन्नरि कनियाँक संग आयल देखि सौंसे राजपरिवार ओ प्रजामे खुसी पसरि गेल ।

राजकुमार, फुलकेसरिकुमरिक संग पहिने कुलदेवताकेँ प्रणाम कयलनि ।

तकर बाद मायकेँ गोड़ लगलनि । पुतोहुक सुन्दरता देखि कऽ तँ रानीक आँखि जुड़ा गेलनि ।

वर-वधूक गृह-प्रवेशक होइत अनेक प्रकारक बिध-बाधक बीच शत्रुजीतक आँखि चारु कात घुमि-घुमि ककरो व्यग्रतासँ ताकि रहल छल । शत्रुजीत मने-मन सोचैत जा रहल जे स्वर्णावती एखनो धरि ओकरा द्वारा कयल गेल दुर्व्यवहारकेँ नहि बिसरलीह अछि, तेँ एखन ओ कतहु नहि देखि पड़ैत छथि ।

महिला लोकनिसँ घेरल वर-कनियाँ मन्दगतिसँ चलैत-चलैत कोबर घरक देहरिपर पहुँचल । ओहि ठाम स्वर्णावती ठाढ़ि छलीह । शत्रुजीत जल्दीसँ स्वर्णावतीक पैर छुबि गोड़ लगैत नहुएँसँ बाजल- भौजी ! हम अहाँक अपराधी छी । अज्ञानता आ नेनपनमे अहाँक संग बड़ दुर्व्यवहार कयने छलहुँ । आब माफ कऽ दियऽ ।'

स्वर्णावती बिहुँसैत बजलीह- कुमरजी ! एहि लल्लो-चप्पोसँ काज नहि चलत । पहिने दुअरिछेकाइ लागत तखने कोबरघर जा सकैत छी ।'

चारू दिससँ महिला सभक पड़ैत हहारोक बीचमे शत्रुजीत किछु मुसकैत बाजल- महलसँ गेलाक बाद कतोक वर्षक अपन जे कमाइ, से अहींकेँ सोँपि दै छी । लियऽ, आब सम्हारू अपन छोट बहीन सन देयादनीकेँ ।'

ई कहि कऽ शत्रुजीत फुलकेसरिकुमरिक आङुर स्वर्णावतीकेँ धरा देलकनि ।

●

श्रीरामदेवझा



जन्म- 03 मइ 1936

पता- कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-1

रचना संसार

कथा संग्रह : 1. एक खीरा : तीन फाँक-1965, 2.मनुक सन्तान-1966, 3.धरती माता-1985 4. आजी माँ-2009

उपन्यास : 1.इजोती रानी (बाल उपन्यास) -1965, 2.अंगरेजीफूलक चिट्ठी-2002 3. बहिनाक विरोग- 2002, 4. रामजोड़ी कागतक पाँखिपर- 2002, 5. हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी (बाल उपन्यास)- 2013

नाटक : 1. पसिझैत पाथर (नाट्य संग्रह)- 1989

अनुसन्धान-आलोचना : 1. शकुन्तला नाटक : एक अध्ययन- 1959, 2. पार्वती परिणय नाटक : एक अध्ययन-1960, 3. मैथिली शैव साहित्य- 1979, 4. उमापति-1980, 5. मैथिली शैव साहित्यक भूमिका-1982 6. जगत्प्रकाशमल्ल (विनिबन्ध)-1990, 7.जगज्ज्योतिर्मल्ल (विनिबन्ध)-1995, 8. जनार्दनझा जनसीदन (विनिबन्ध)-1998, 9. मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य -2002, 10.सुभद्रझा (विनिबन्ध)-2010

सम्पादन : 1. नन्दीपति गीतिमाला-1965, 2. रामविजय नाट ओ वर गीत-1967, 3. हरगौरीविवाह नाटक-1970, 4. नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत- 1972, 5. कुञ्जविहार नाटक-1976, 6. मैथिली प्राचीन गीतावली-1977, 7. कविवर जीवनझा रचनावली- 1980, 8. मैथिली भाषा सरिता (भाग चारि)-1984, 9. दशावतारनृत्यम् ओ षोडशगीतम्- 1988, 10. मैथिली प्राचीन गीत मञ्जरी-1991, 11. दुर्गाचरित नाटक (म.म.परमेश्वरझा)-1996, 12. कुमार गंगानन्दसिंह रचित मनुष्यक मोल-1998 (सन्धान-2 मे प्रकाशित), 13. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण-1999, 14. विद्यापति गीत संचय-1999, 15. मैथिली कथा : शताब्दी संचय 2010, 16. म.म. परमेश्वरझा कृत सीमन्तिनी आख्यायिका-2011, 17. मुदितकुवलयाश्व नाटक-2013,

अनुवाद : 1. पृथ्वी परिचय (भाग चारि)- 1988, 2. जीव विज्ञान (भाग एक) -1988, 3. वाणभट्ट (अंग्रेजी मोनोग्राफ)-1989, 4. सगाइ-1992

